लाल किताब

के अद्भुत टोटके एवं उपाय

प्रस्तुति — डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय

प्रायः नवग्रह के कुप्रभाव से बचने के लिए रत्न धारण, मन्त्रजाप, नवग्रह उपासना, यन्त्र व जड़ी धारण आदि उपाय बताए जाते हैं। इन उपायों को सभी नहीं कर पाते। लाल किताब में आसानी से किए जा सकने वाले अद्भुत टोटके एवं उपाय दिए गए हैं जिनको कोई भी कर सकता है। इन सरल टोटकों एवं उपायों को करके आप भी नवग्रह के अशुभ प्रभाव से बचना चाहते हैं तो भारत प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** रचित पुस्तक **'लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय'** अवश्य पढ़ें। यह पुस्तक आपको नवग्रह के अनिष्ट से बचाने के साथ नीच ग्रह को उच्च या शुभ या भाव विशेष में पहुँचाने के उपाय भी बतलायेगी। इन टोटकों और उपायो के विषय में जानकर एक बारगी आप भी कह उठेंगे कि इनको पहले क्यों नहीं जाना।

समर्पण

उन भाग्य जिज्ञासुओं को जो अपना
भविष्य उज्जवल बनाना चाहते हैं !

—उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

व्यावहारिक ज्योतिष पुस्तक माला—अठारह

लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय

(ग्रहों के कुप्रभाव से बचने के लिए सरलता से किए जा सकने वाले अनुभूत प्रयोग)

लेखक

डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

बी०एस०-सी०, एम० ए०, पी०-एच० डी०,
ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिष भास्कर

मूल्य: 60.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार — 249401

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन,
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे), हरिद्वार-249 401
फोन : (0133) 426297, 426195

वितरक : रणधीर बुक सेल्स, रेलवे रोड़, हरिद्वार,
फोन : (0133) 428510

पुस्तक : लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय

लेखक : डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

संस्करण : चतुर्थ, सन् 2002

मुद्रक : राजा आफसेट प्रिंटर्स, 1/51, ललिता पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92

चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश का पुनर्मुद्रण या फोटोकॉपी करने के लिए लेखक एवं प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

ISBN : 81-86955 - 40-2

LAL KITAB KE ADBHUT TOTKE EVAM UPAY

(Grahon ke kuprabhav se bachane ke liye saralta
se kiye ja sakne wale anubhoot prayog)

WRITTEN BY :

DR. UMESH PURI 'GYANESHWAR'

PUBLISHED BY :

RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR
(INDIA)

पुरोवाक्

आज योग्य व्यक्ति बेरोजगार हैं और सड़कों पर इधर-उधर धक्के खा रहे हैं। स्थिति इतनी विकट है कि जातिवाद, भाई-भतीजा वाद, रिश्वत एवं आरक्षण के आधार पर कई बार अयोग्य व्यक्ति भी बड़े-बड़े पदों पर पहुँच जाते है। जिसके पास इनमें से कोई भी योग्यता नहीं होती है, वह पद के लिये पूर्ण योग्य होने के बावजूद भी असफल ही रहता है तो, अपने भाग्य को दोष देने लगता है। उसे लगने लगता है कि वह ग्रहों के चंगुल में फँस चुका है। जब तक वह इनसे मुक्त नहीं होगा तब तक उसका भाग्योदय नहीं होगा।

पंडितों से मिलने पर पंडित ऐसे-ऐसे उपाय बताते हैं जिन्हें कर पाने की सामर्थ्य ही नहीं है, क्योंकि इतने खर्चीले उपाय बेरोजगारी में कर पाना संभव ही नहीं है अन्ततः निराश होकर आत्महत्या की सोच बैठते हैं या फिर व्यर्थ की निराशापूर्ण बातें सोच-सोचकर मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित होते हैं। यहाँ तक जीवन को एक बोझ समझकर जीते रहते हैं।

ऐसे गृहस्थ जो परेशान हैं और तंग हाल है, ऐसा युवा जो बेरोजगार हैं और निराश-सा जिन्दगी को बोझ की तरह ढो रहा है और ऐसे लोग जो किसी न किसी रूप में परेशान हैं, उन्हें उपाय ज्ञात ही नहीं होता है और होता है तो इतना खर्चीला होता है कि उसे कर पाना उसके वश में नहीं।

सभी की इस समस्या को दृष्टिगत रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें लाल किताब के अनुभूत अर्थात् अनुभव सिद्ध सरल उपाय बताए गए हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति आसानी से कर सकता है। ग्रहों के उपाय के सम्बन्ध में एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता भी थी जो यह समझा सके कि जन्मकुण्डली को सरल ढंग से देखकर अपने लिए स्वयं उपायों का चुनाव कैसे करें। इस पुस्तक में विषय को इस ढंग में समझाया गया है कि आप स्वतः आवश्यकता के अनुरूप अपने लिए उपाय चुन सकेंगे।

जन्मकुण्डली के अवलोकन की विधि इस पुस्तक में लाल किताब के आधार पर दी गई है जो अत्यन्त सरल और शीघ्र समझ आ जाने वाली है। कुछ मिनटों में ही आप अपने लिए उपाय ढूँढ लेंगे। इन उपायों व टोटकों का अधिकाधिक लाभ उठाने के लिए इन्हें व्यवहार में लाएँ। ये उपाय अनुभूत हैं और इनकी सामाग्री सुलभ है और थोड़े से व्यय से व्यवहार में लाए जा सकते हैं।

इस पुस्तक से आप अशुभ ग्रहों के शुभफल प्राप्त करने के उपाय, दो पाप ग्रहों की युति के कोप से मुक्ति पाने का उपाय, पूर्वजन्म के अशुभ कार्यो के उपाय और अनेक आवश्यक और प्रधान समस्याओं के व्यावहारिक उपाय दिए गए है।

यह आप जान लें कि किसी भी अनिष्ट से मुक्ति व किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए उपाय करना अति आवश्यक है। उपाय का प्रयत्न (कर्म) से गहरा सम्बन्ध है और सफलता में पूर्ण सहायक है। मान लीजिए आपको उपाय तो ज्ञात है और आप उसे व्यवहार में नहीं लाते तो कैसे कष्टमुक्ति या सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

उपाय तीन प्रकार के होते हैं—1. सांसारिक उपाय, 2. शास्त्रीय उपाय एवं 3. विशेष उपाय।

यहाँ सांसारिक (लौकिक) उपायों से तात्पर्य यही है कि आपके द्वारा किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसकी पूर्ति हेतु आप जो भी साधन जुटाकर प्रयत्नशील हो सकते हैं।

शास्त्रीय उपाय से तात्पर्य नवग्रह उपासना, रत्न धारण, मन्त्र जाप, स्तोत्र, कवचादि का पाठ, जड़ी धारण व्रत और दानादि से है।

इस पुस्तक में शास्त्रीय उपायों की चर्चा नहीं करेंगे, लौकिक उपाय तो सभी अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुरूप करते ही हैं। इसमें विशेष उपाय बतलायेंगे। यहाँ विशेष उपाय से तात्पर्य यह है कि प्राचीन लोकप्रिय ग्रन्थ 'लाल किताब' के अनुभव सिद्ध उपायों की चर्चा विशेष उपायों के अन्तर्गत करेंगे। विशेष उपाय सरल, सुलभ एवं सभी के पास इसको कर सकने की सामर्थ्य है।

जब किसी भी कार्य को करने के लिए हम तत्पर होते हैं और अपने सांसारिक प्रयासों के उपरान्त असफल हो जाते हैं। बार-बार उस कार्य को करने के बाद भी निराशा हाथ लगती है तो ज्योतिषियों द्वारा सुझाए शास्त्रीय उपाय करने की सलाह हमको दी जाती है जो कर सकने में हम असमर्थ होते हैं। तब जीवन बोझ लगने लगता है। ऐसे में सरल और सुलभ उपाय ज्ञात हो जाएं तो भाग्योदय की आशा होने लगती है। यही आशा इस पुस्तक द्वारा आपको मिलेगी और आप नीच ग्रहों को उपायों द्वारा अन्य एवं अशुभ को शुभ में बदलकर मनचाही उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

आप आलस्य न करें अपितु अपनी जन्मकुण्डली का अवलोकन करके अपने लिए आवश्यक उपायों को चुनकर व्यवहार में लाएं। यदि आपने ऐसा कर लिया तो ईश्वर अनुकम्पा एवं आपके प्रयत्नों के फलस्वरूप ये अनुभव सिद्ध उपाय आपको सफलता दिलाने में कोई कसर नहीं छोडेंगे।

देवनागरी भाषा में रचित यह पुस्तक अपने आप में चमत्कारिक एवं अद्‌भुत है, इसका आभास आप भी इस पुस्तक के उपायों को व्यवहार में लाकर कर सकेंगे। लाल किताब के अध्ययन तथा शोधपरक अनुशीलन व अनेक वर्षों के अथक परिश्रम के उपरान्त यह पुस्तक आपके लिए रची है और पूर्ण विश्वास है कि आप इसे पढ़कर इसके अनुभूत ज्ञान को व्यवहार में लायेंगे।

असली लाल किताब जन्मकुण्डली को सरल ढंग से अवलोकित करने की अद्‌भुत पुस्तक है। इसमें सहज, सुलभ और सरल उपायों द्वारा बड़े-बड़े कष्टों से मुक्ति दिलाने का अद्‌भुत ज्ञान भरा पड़ा है। इस पुस्तक में फलादेश व उपाय का विषय प्रमुखतः से किया है। फलित ज्योतिष के विस्तृत रूप को इसके रचियता ने संक्षिप्त करके अपने सरल एवं अद्‌भुत सिद्धान्त बनाए हैं। इस पुस्तक के सिद्धान्तों व उपायों द्वारा अनेक लोगों की जटिल समस्याओं के समाधान के उपरान्त अनुभव सिद्ध ज्ञान को 'लाल किताब के अद्‌भुत टोटके एवं उपाय' नामक इस पुस्तक में वर्णित

किया गया है। हमें पूर्ण विश्वास है आप भी इसको पढ़कर इसके ज्ञान से लाभन्वित होंगे।

इस पुस्तक को पूर्ण करने से मित्रों एवं परिजनों का जो योगदान रहा है उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। यह पुस्तक आप तक पहुँचाने में प्रकाशक श्री रणधीर सिंह जी ने जो तत्परता व उत्साह दिखाया उसके लिए वे सहज साधुता के सुपात्र हैं। अन्ततः मैं उन विद्वानों का हृदय से आभारी रहूँगा जिन्होंने समय-असमय इस कार्य की पूर्ण करने में भरपूर सहयोग दिया !

आप पुस्तक के अद्‌भुत विषय को पढ़कर इसमें निहित अनमोल ज्ञान को व्यवहार में लाकर अपनी समस्याओं का उपयुक्त उपाय करके नवग्रहों के कुप्रभाव से बचकर मनोनुकूल उन्नति प्राप्त करके सुख-समृद्धि के भागी बनें।

यदि आप इस पुस्तक के ज्ञान से लाभान्वित हुए हों तो और यदि नहीं हुए हैं तो आप कोई सुझाव देना चाहते हैं तो स्नेहपत्र अवश्य लिखें।

आपका अपना

(डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर')

अनुक्रम

❖ समपर्ण 2
❖ पुरोवाक् 5—8
❖ अनुक्रम 9—12

1. **लाल किताब के मूलभूत सिद्धान्त** 13—40

—लाल किताब क्या है ? 13
—भाग्य बदल नहीं सकता 13
—जीवन का विभिन्न अवस्थाओं पर ग्रहों का प्रभाव 14
—प्रत्येक श्वास का भाग्य से संबंध 14
—लाल किताब की नींव 15
—साथी और धार्मिक ग्रह 16
—रतान्ध व अन्धा ग्रह 16
—शंकित ग्रह और पापी ग्रह 16
—स्वग्रह और स्पष्ट ग्रह 16
—भाव ग्रह 17
—उच्च व नीच ग्रह 17
—ग्रहों की मित्रता-शत्रुता 17
—वयस्क और अवयस्क जन्मकुण्डली 18
—ग्रह और राशि का सम्बन्ध 19
—ग्रह राशि सम्बन्ध चक्रम् 19
—राहु और केतु पर विशेष विचार 19
—जन्मकुण्डली में भावानुसार अवस्था 21
—सुप्त भाव व ग्रह और जाग्रत भाव व ग्रह 21
—सुप्त भाव कैसे जागेंगे ? 21
—सुप्त भाव जाग्रत चक्रम् 22
—सुप्त ग्रह कैसे जागेंगे ? 22
—सुप्त ग्रह जाग्रत चक्रम 22
—अदृष्ट अकेला ग्रह शुभाशुभ विचार 23
—अदृष्ट अकेला ग्रह शुभाशुभ चक्रम् 23
—ग्रहों एवं भावों की दृष्टि 23
—भाव दृष्टि चक्रम् 23
—ग्रहों का विशेष प्रभाव 25
—ग्रहों की वस्तुएं, व्यापार और संबंधी 25
—कुण्डली के किस भाव से क्या विचारें 27
—फलित कैसे करें ? 28
—वर्ष कुण्डली कैसे बनाएं ? 29
—जन्म लग्न 31
—वर्षफल कैसे कहें ? 32

—वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—1 33
—वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—2 34
—वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—3 35
—वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—4 36
—जीवन को प्रभावित करने वाले ग्रहों की गाथा 37

2. ग्रह का परिचय और उनके सामान्य उपाय 41—68

—सूर्य ग्रह और उसका परिचय 41
—सूर्य के सामान्य उपाय 43
—चन्द्र ग्रह और उसका परिचय 44
—चन्द्र के सामान्य उपाय 46
—मंगल ग्रह और उसका परिचय 47
—मंगल के सामान्य उपाय 49
—बुध ग्रह और उसका परिचय 50
—बुध के सामान्य उपाय 52
—गुरु ग्रह और उसका परिचय 52
—गुरु के सामान्य उपाय 55
—शुक्र ग्रह और उसका परिचय 55
—शुक्र के सामान्य उपाय 57
—शनि ग्रह और उसका परिचय 58
—शनि के सामान्य उपाय 61
—राहु ग्रह और उसका परिचय 62
—राहु के सामान्य उपाय 65
—केतु ग्रह और उसका परिचय 66
—केतु के सामान्य उपाय 68

3. टोटके व उपाय संबंधी आवश्यक ज्ञान 69—77

—अशुभ ग्रह की अशुभता दूर करने के लिए ऐसा करें 70
—अशुभ ग्रह के लिए इस प्रकार भी उपाय कर सकते हैं 71
—ग्रहों को सहायता कैसे दे ? 72
—उपाय द्वारा ग्रहों को मनोनुकूल भाव में पहुंचाने का अद्भुत उपाय 74
—यह सब वर्जित है इसे न करें 75

4. द्वादश भवनों में स्थित ग्रहों में टोटके एवं उपाय 78—113

—द्वादश भवनों में सूर्य के टोटके व उपाय 78
—द्वादश भवनों में चन्द्र के टोटके व उपाय 82
—द्वादश भवनों में मंगल के टोटके व उपाय 86
—द्वादश भवनों में बुध के टोटके व उपाय 91
—द्वादश भवनों में गुरु के टोटके व उपाय 95
—द्वादश भवनों में शुक्र के टोटके व उपाय 99
—द्वादश भवनों में शनि के टोटके व उपाय 103
—द्वादश भवनों में राहु के टोटके व उपाय 104

—द्वादश भवनों में केतु के टोटके व उपाय 110

5. पैतृक ऋण और उनका उपाय **114—120**

—कैसे जाने की पैतृक ऋण है या नहीं 115
—स्व ऋण की पहचान 115
—मातृ-ऋण की पहचान 115
—संबंधी-ऋण की पहचान 116
—बहन या पुत्री सबंधी ऋण की पहचान 116
—पितृ ऋण की पहचान 116
—स्त्री-ऋण की पहचान 117
—निर्दयी-ऋंण की पहचान 117
—अजन्मे ऋण की पहचान 117
—ईश्वरीय ऋण की पहचान 118
—पैतृक ऋण की पहचान के बाद उपाय करें 118
—स्व ऋण का उपाय 118
—मातृ-ऋण का उपाय 118
—सबंधी-ऋण का उपाय 119
—बहन या पुत्री संबंधी ऋण का उपाय 119
—पितृ-ऋण का उपाय 119
—स्त्री-ऋण का उपाय 119
—निर्दयी ऋण का उपाय 119
—अजन्मे ऋण का उपाय 119
—ईश्वरीय ऋण का उपाय 119

6. विभिन्न समस्याओं से मुक्ति दिलाने वाले लाल किताब के टोटके व उपाय **121—134**

—भवन निर्माण संबंधी टोटके एवं उपाय 122
—रोग मुक्ति के टोटके एवं उपाय 124
—सन्तान संबंधी टोटके एवं उपाय 125
—मिश्रित टोटके एवं उपाय 126
—उपाय रूप में दान कब न करें ? 126
—ग्रह युतियों के टोटके एवं उपाय 127
—सभी के लिए उपयोगी उपाय 134

7. शनि की साढ़े साती और लाल किताब के टोटके एवं उपाय **135—150**

—शनि की साढ़े साती से क्या तात्पर्य है 135
—कैसे जानें कि आप पर साढ़े साती है या नहीं 135
—मेष राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 136
—वृष राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 137
—मिथुन राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 139
—कर्क राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 140
—सिंह राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 141

—कन्या राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 142
—तुला राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 143
—वृश्चिक राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 144
—धनु राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 146
—मकर राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 147
—कुंभ राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 148
—मीन राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय 149

8. शनि की ढैय्या और लाल किताब के टोटके एवं उपाय 151—163

—शनि की ढैय्या से क्या तात्पर्य है ? 151
—कैसे जाने की आप पर शनि की ढैय्या है या नहीं ? 151
—मेष राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 152
—वृष राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 153
—मिथुन राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 154
—कर्क राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 155
—सिंह राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 156
—कन्या राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 157
—तुला राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 158
—वृश्चिक राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 158
—धनु राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 159
—मकर राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 160
—कुंभ राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 161
—मीन राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय 162

9. मंगलीक विचार और लाल किताब के टोटके एवं उपाय 164—188

—मंगली से क्या तात्पर्य है 164
—मंगली दोष परिहार 165
—द्वादश लग्न के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 167
—मेष लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 169
—मिथुन लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 171
—कर्क लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 172
—सिंह लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 174
—कन्या लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 176
—तुला लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 178
—वृश्चिक लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 179
—धनु लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 181
—मकर लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 183
—कुंभ लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 185
—मीन लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय 187

❖ समापन 189—193

1

लाल किताब के मूलभूत सिद्धान्त

इस अध्याय में लाल किताब के मूलभूत सिद्धान्तों की चर्चा करेंगे। इन सिद्धान्तों के आधार पर आप अपनी जन्म कुण्डली अवलोकित करके अपने लिये लाल किताब के अद्‌भुत टोटके एवं उपायों को चयनित करके और उन्हें व्यवहार में लाकर नवग्रहों के अशुभ प्रभाव से मुक्ति पा सकेंगे।

लाल किताब क्या है ?

लाल किताब जीवन के सत्य पर आधारित होने के कारण अत्यन्त लोकप्रिय है। लाल किताब के रचयिता ने इसमें जन्मकुण्डली का फल बताते हुए सामान्य कष्ट की अपेक्षा अधिक कष्ट की चर्चा की है।

लाल किताब के रचयिता ने कहा है—इसके सिद्धान्तों के अतिरिक्त मन से गढ़ा कोई भी तथ्य सन्देह ही उत्पन्न करेगा। उन्हें निंदक, हंसी-मजाक करने वाले एवं अल्पज्ञानियों पर दुःख आता है, परन्तु दूसरों को लाभ पहुँचाना उनकी दृष्टि में मानवता है।

भाग्य बदल नहीं सकता !

ईश्वर ने मानव का भाग्य निर्धारित करके उसे वसुन्धरा पर भेजा है। ईश्वर ने ऐसा कर दिया है कि भाग्य में कोई परिवर्तन न किया जा सके। इतना अवश्य है कि मानव चाहे तो ग्रहों की सन्देहात्मक स्थिति का लाभ उठाकर स्वयं को अशुभता से बचा सकता है।

जीवन की विभिन्न अवस्थाओं पर ग्रहों का प्रभाव

ईश्वर की शक्ति का मूल नाम ग्रह है। नौ ग्रह हैं, जोकि बारह भावों में चक्कर लगाते हैं। प्रत्येक ग्रह अपना शुभाशुभ प्रभाव जीवन के अलग-अलग वर्षों में डालते हैं।

गर्भ में बन्द हवा होती है जहाँ बच्चा भ्रूण से पूर्ण शरीर के रूप में विकसित होता है और जन्म लेकर गर्भ से बाहर खुली हवा रूपी संसार में आता है। नवजात शिशु शरीर से नर्म और भोला-भाला होता है। अभी सात ग्रह धीरे-धीरे अपना प्रभाव डालते हैं, फलस्वरुप मिश्रित विचार शिशु में उत्पन्न हो रहे हैं। जब गुरु से शिक्षा ग्रहण की तो खुली हवा का पूर्ण प्रभाव पड़ने लगा। धर्म कर्म सीखा, मान-अपमान का अन्तर ज्ञात हुआ और शरीर विकसित होने लगा तो गुरु ग्रह की आयु सोलह वर्ष पूर्ण हुई। स्वयं धन कमाना प्रारम्भ किया तो बाईस वर्ष सूर्य की आयु पूर्ण हुई या यह कह लें कि शिशु बच्चा किशोरवय से गुजरकर बालिग हुआ। निज अर्जित धन से माता की सेवा करी तो चन्द्र की आयु चौबीस वर्ष आ गयी। विवाह हुआ स्त्री से सम्बन्ध बना, परिवार बढ़ा व बच्चों की वृद्धि हुई तो शुक्र की आयु पच्चीस वर्ष पूर्ण हो गयी। भाई-बन्धु की सेवा, शारीरिक कष्ट, रोग, झगड़ा आदि करते हुए मंगल की आयु अट्ठाईस पूर्ण हो गयी। बौद्धिक कार्य, व्यापार और धन अर्जन करते हुए बुध की आयु चौंतीस वर्ष पूर्ण हो गयी। चतुरता से गृह, जमीन-जायदाद, धन एकत्र किया तो शनि की आयु छत्तीस वर्ष पूर्ण हुई। सांसारिक सन्देह व नकली विचागें का प्रभाव बढ़ा तो राहु की आयु बयालिस वर्ष पूर्ण हुई। जब स्वयं को सांसारिक संघर्ष से निकाल पाने में असमर्थ रहा तो इधर-उधर भटकते हुए केतु की आयु अड़तालिस वर्ष पूर्ण हुई। कहने का तात्पर्य यह है कि नवजात शिशु बारह राशि के चार चक्र पूर्ण करके इस रूप में सुख-समृद्धि व संघर्ष के उपरान्त पहुँच सका।

प्रत्येक श्वास का भाग्य से संबंध

यह जान लें कि चौबीस घंटे में बारह राशि एवं सात ग्रह के चक्कर से चौरासी लाख श्वास पूरे होते हैं और इस जगत् की चौरासी लाख योनि को पूर्ण करता चला आ रहा है।

प्रत्येक श्वास के आने-जाने में व्यक्ति के भाग्य का संबंध है। वस्तुतः कोई भी बुद्धिमान विश्वास सहित यह नहीं कह सकता कि अगला श्वास

आयेगा या नहीं। प्रत्येक मनुष्य की यही इच्छा रहती है कि एक श्वास बाहर आने पर तुरन्त दूसरा श्वास अन्दर आ जाए। भाग्य लक्ष्मी के नाम से लोकप्रिय है। बारह वर्ष के पूर्व और सत्तर वर्ष के उपरान्त भाग्य का कोई भरोसा नहीं है। मूलतः भाग्य वह वस्तु है जो सांसारिक कार्यों में न हाथों की सहायता लेती है और न आँखों को कार्य करना पड़ता है। भाग्य होने पर प्रत्येक कार्य का शुभफल स्वतः मिलता है।

लाल किताब की नींव

प्राचीन ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली बनाकर उसमें अंकित समस्त राशि अंक लुप्त कर दिए गए और ग्रह जहाँ जिस भाव में स्थित थे, वहीं रहने दिए। बाद में लग्न (प्रथम) भाव में मेष राशि का अंक 1 अंकित कर दिया और क्रम से सभी भावों में 1, 2, 3, 4....10, 11, 12 आदि अंकित कर दिए। **वस्तुतः जन्मकुण्डली के अंक मिटाकर मेषादि राशियों के क्रम से लग्न में बारहवें भाव तक 1 से 12 अंक लिखकर सदा के लिए स्थायी भाव मान लिए। अब कुण्डली में अंक न भी लिखे हों तो अंक पहले भाव से बारहवें भाव तक 1 से 12 ही होंगे।**

लग्न में मेष (1) को स्थायी मानकर जन्मकुण्डली में 12 स्थायी भाव मान लिए गए जोकि निम्नवत् हैं—

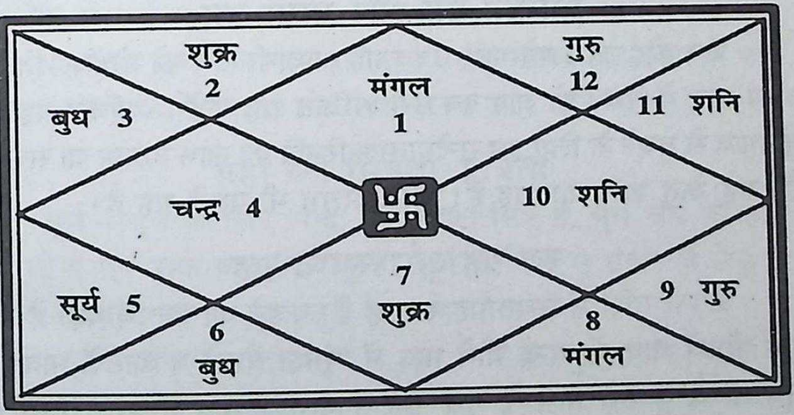

इस प्रकार सदैव के लिए पहले भाव का स्वामी मंगल, दूसरे भाव का स्वामी शुक्र, तीसरे भाव का स्वामी बुध, चौथे भाव का स्वामी चन्द्रमा, पाँचवें भाव का स्वामी सूर्य, छठे भाव का स्वामी बुध, सातवें

भाव का स्वामी शुक्र, आठवें भाव का स्वामी मंगल, नौवें भाव का स्वामी गुरु, दसवें व ग्याहरवें भाव का स्वामी शनि एवं बारहवें भाव का स्वामी गुरु होता है।

साथी और धार्मिक ग्रह

जब ग्रह निज भाव को छोड़कर किसी और ग्रह के भाव में स्थित हो तो वह **साथी ग्रह** कहलाता है जैसे—गुरु बारहवें भाव का स्वामी है, यदि वह पहले भाव में स्थित हो और पहले भाव का स्वामी मंगल बारहवें भाव में स्थित हो तो वे दोनों (गुरु व मंगल) साथी ग्रह कहे जायेंगे।

राहु-केतु चौथे भाव में या चन्द्र के साथ किसी भी भाव में और शनि ग्याहरवें भाव में या गुरु के साथ किसी भी भाव में हो तो पापी ग्रह (राहु, केतु, शनि) का कुप्रभाव न होगा क्योंकि सभी ग्रह **धार्मिक** हो जायेंगे। यह आवश्यक नहीं कि पापी ग्रह शुभ फल भी दें, हालांकि कुप्रभाव नहीं देंगे।

रतान्ध व अन्धा ग्रह

चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि ग्रह **रतान्ध** कहलाता है। दसवें भाव में शत्रु ग्रह स्थित हो या नीच ग्रह से प्रभावित हो तो शनि सहित सभी ग्रह चाहे उच्च भावस्थ हों, **अन्धे** ग्रहों की तरह फल प्रदान करेंगे।

शंकित ग्रह और पापी ग्रह

जब कोई ग्रह अपने भाव, उच्च राशि, स्थायी भाव को छोड़कर किसी अन्य भाव में स्थित हो जाए तब उसे **शंकित ग्रह** कहेंगे। शंकित ग्रह के कुप्रभाव से बचने के लिए इस सन्देहात्मक स्थिति का लाभ उठाया जा सकता है। राहु, केतु, शनि पाप ग्रह हैं। मंगल अशुभ भी **पापी ग्रह** है।

स्व ग्रह और स्पष्ट ग्रह

अपनी राशि में स्थित ग्रह **स्वग्रह** हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि सूर्य पाँचवें भाव में, **चन्द्र** चौथे भाव में, **मंगल** पहले व आठवें भाव में, **बुध** तीसरे व छठे भाव में, **गुरु** नौवें व बारहवें भाव में, **शुक्र** दूसरे व सातवें भाव में और **शनि** दसवें व ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो स्वग्रह कहे जाते हैं। जो ग्रह अपना पूर्ण प्रभाव (बिना किसी शत्रु के प्रभाव के) दे रहा हो तो उसे **स्पष्ट ग्रह** कहेंगे। स्पष्ट ग्रह पूर्णतः समर्थ होने के

कारण अपना स्पष्ट और पूर्ण प्रभाव देते हैं। इसके शुभाशुभ प्रभाव को भी कोई शक्ति रोक नहीं सकती है।

भावग्रह

सूर्य पहले, **चन्द्र** चौथे, **मंगल** तीसरे व आठवें, **बुध** सातवें, **गुरु** दूसरे, पांचवें, नौवें और ग्यारहवें, **शुक्र** सातवें, **शनि** आठवें व दसवें, **राहु** बारहवें और **केतु** छठे भाव में कारक होता है। कारक भाव में स्थित ग्रह **भाव ग्रह** या **कारक ग्रह** के नाम से जाना जायेगा। इसके शुभाशुभ प्रभाव को कोई शक्ति नहीं रोक सकती।

उच्च व नीच ग्रह

उच्च ग्रह पूर्णतः शुभ एवं बली होते हैं और अपना शुभफल शत प्रतिशत देते हैं। **सूर्य** मेष राशि में, **चन्द्र** वृष राशि में, **राहु** मिथुन राशि में, **गुरु** कर्क राशि में, **बुध** कन्या राशि में, **शनि** तुला राशि में, **केतु** धनु राशि में, **मंगल** मकर राशि में और **शुक्र** मीन राशि में उच्च का होता है।

नीच ग्रह पूर्णतः अशुभ एवं निर्बल होते हैं और अपना अशुभफल शत-प्रतिशत देते हैं। **शनि** मेष राशि में, **केतु** मिथुन राशि में, **मंगल** कर्क राशि में, **शुक्र** कन्या राशि में, **सूर्य** तुला राशि में, **चन्द्र** वृश्चिक राशि में, **राहु** धनु राशि में, **गुरु** मकर राशि में और **बुध** मीन राशि में नीच का होता है।

ग्रह जिस भाव में उच्च का होता है उसके सामने अर्थात् सातवें भाव में उसका शत्रु ग्रह स्थित हो तो उसका उच्च फल नहीं मिलता है।

ग्रहों की मित्रता-शत्रुता

सूर्य—सूर्य के लिए चन्द्र, गुरु, मंगल मित्र हैं, बुध सूर्य के साथ सम रहेगा एवं शुक्र व शनि शत्रु हैं। सूर्य को राहु से ग्रहण व केतु से मध्यम सम्बन्ध रहेगा। बुध सूर्य के साथ मौन रहता है।

चन्द्र—चन्द्र के लिए सूर्य व बुध मित्र हैं, शुक्र, शनि, मंगल व गुरु से सम संबंध रखता है। चन्द्र को केतु से ग्रहण व राहु से मध्यम संबंध रहेगा।

मंगल—मंगल के लिए सूर्य, चन्द्र व गुरु मित्र हैं, बुध व केतु शत्रु हैं एवं राहु व शनि सम हैं। राहु मंगल के साथ मौन रहता है।

बुध—बुध के लिए सूर्य, शुक्र व राहु मित्र हैं, चन्द्र शत्रु है और शनि, केतु, मंगल व गुरु सम हैं।

गुरु—गुरु के लिए सूर्य, मंगल व चन्द्र मित्र हैं, शुक्र व बुध शत्रु हैं और राहु, केतु व शनि सम हैं।

शुक्र—शुक्र के लिए शनि, बुध व केतु मित्र हैं, सूर्य, चन्द्र व राहु शत्रु हैं एवं मंगल व गुरु सम हैं।

शनि—शनि के लिए बुध, शुक्र व राहु मित्र हैं, सूर्य, चन्द्र व मंगल शत्रु हैं और केतु व गुरु सम हैं।

राहु—राहु के लिए बुध, शनि व केतु मित्र हैं, सूर्य, शुक्र व मंगल शत्रु हैं और गुरु व चन्द्र सम हैं।

केतु—केतु के लिए शुक्र व राहु मित्र हैं, चन्द्र व मंगल शत्रु हैं और सूर्य, बुध, शनि व गुरु सम हैं।

वयस्क और अवयस्क जन्मकुण्डली

जब सूर्य पहले, पाँचवें, ग्याहरवें भाव में हो या बुध छठे भाव में हो तो जन्मकुण्डली **वयस्क** होगी। जब पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ भाव रिक्त हो या उनमें मात्र पाप ग्रह स्थित हों या केन्द्र में अकेला बुध हो तो जन्मकुण्डली **अवयस्क** होगी। अवयस्क जन्मकुण्डली के भाग्य का बारह वर्ष तक कोई विश्वास नहीं करना चाहिए। अवयस्क कुण्डली वाले जातक के भाग्य का स्वामी आयु के अनुरूप निम्न प्रकार होंगे—

जातक की आयु वर्ष	भाग्य हेतु सहायक भाव	भाव स्वामी ग्रह
1	7	शुक्र
2	4	चन्द्र
3	9	गुरु
4	10	शनि
5	11	शनि
6	3	बुध
7	2	शुक्र
8	5	सूर्य
9	6	बुध, केतु
10	12	शुक्र, राहु
11	1	मंगल
12	8	मंगल

ग्रह और राशि का सम्बन्ध

सात ग्रह और बारह राशि होती हैं। 12 × 7 = 84 अर्थात् चौरासी योनि का चक्कर या अहोरात्र (एक दिन) में 84 लाख श्वास की अद्‌भुत बात है। प्रत्येक सात वर्ष या आठ वर्ष बाद ग्रहों का प्रभाव जो मिल चुका है कि पुनरावृत्ति होती है। दूसरे भाव में कोई ग्रह नीच नहीं होता है, जबकि आठवें भाव में कोई ग्रह उच्च नहीं होता है। इसी प्रकार पाँचवें व ग्याहरवें भाव में भी कोई ग्रह उच्च-नीच नहीं होता है। जगत् माता है तो मानव उसका बच्चा है। मृत्यु को कोई नही मार सकता, पर चन्द्र मार सकता हैं क्योंकि उसमें दैवीय शक्ति विद्यमान है। ग्रह-राशि संबंध को आप सरलता से 'ग्रह राशि संबंध चक्रम्' से समझ सकते हैं।

ग्रह राशि संबंध चक्रम्

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
उच्च ग्रह	सूर्य	चन्द्र	राहु	गुरु	—	बुध, राहु	शनि	—	केतु	मंगल	—	शुक्र, केतु
नीच ग्रह्र	शनि	—	केतु	मंगल	—	शुक्र, केतु	सूर्य	चन्द्र	राहु	गुरु	—	बुध, राहु
कारक ग्रह	सूर्य	गुरु	मंगल	चन्द्र	गुरु	केतु	बुध, शुक्र	मंगल, शनि	गुरु	शनि	गुरु	राहु
भाग्य-कारी ग्रह	मंगल	चन्द्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	राहु	शुक्र	चन्द्र	गुरु	शनि	गुरु	राहु
ग्रहफल का गह	मंगल	राहु केतु	शनि	चन्द्र	गुरु सूर्य	बुध्र केतु	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	गुरु शनि	राहु
राशिफल का ग्रह	राहु	—	शनि	मंगल, शुक्र, केतु	—	पुरुष ग्रह शनि	सूर्य, राहु, गुरु	—	शनि	बुध, केतु	—	बुध

राहु और केतु पर विशेष विचार

राहु बारहवें भाव में नीच का है और उसका कारक भाव भी है। इसी प्रकार केतु छठे भाव में नीच का है और उसका कारक भाव भी है।

राहु व गुरु शत्रु नहीं हैं। राहु-गुरु की युति हो तो गुरु मौन रहेगा। बारहवें भाव आकाश होने के कारण राहु का रंग नीला माना गया है। गुरु की हवा को जब-जब आसमान का साथ मिलता है तब-तब हवा आसमान की ओर होती जायेगी अर्थात् हल्की होती जायेगी और सांसारिक जनों को सांस लेने में परेशानी उत्पन्न करेगी। किन्तु यही गुरु की हवा जब नीचे की ओर होती जायेगी तो वह केतु के साथ होगी और प्रत्येक की सहायता करेगी।

इस सिद्धान्त के आधार पर राहु-गुरु में गुरु मौन होगा एवं राहु कुप्रभाव देगा या दमा, सांस या दम घुटने जैसी स्थिति का रोग होगा।

यदि इसके विरोध में राहु को बुध के खाली आकाश में खुला क्षेत्र मिल जाए तो उसका (राहु) शुभ प्रभाव होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि राहु को बुध के भाव छठे का साथ मिले तो उसका शुभफल होता है। वैसे भी राहु बुध का मित्र है। राहु-बुध की युति छठे भाव में हो तो दोनों का शुभ फल होता है। बुध और राहु का बारहवें भाव में होना दोनों का अशुभ फल देता है।

यह जान लें कि बुध जन्मकुण्डली में जैसा भी होगा राहु वैसा ही प्रभाव बारहवें भाव में देगा। इसी प्रकार गुरु जन्मकुण्डली में जैसा भी होगा केतु वैसा ही प्रभाव छठे भाव में देगा।

केतु छठे भाव में और राहु बारहवें भाव में नीच होते हैं और भाव के स्वामी भी। उनकी शंकित परिस्थिति के लिए जब राहु को बुध और केतु को गुरु की सहायता मिलती है अर्थात् राहु तीसरे या छठे भाव में हो और केतु नौवें या बारहवें भाव में हो तो दोनों ही उच्च होंगे या नीच। राहु नौवें या बारहवें भाव में और केतु तीसरे या छठे भाव में नीच का होगा।

भाव छह का स्वामी बुध व केतु को माना गया है। जब भाव छठा रिक्त हो और बुध तीसरे भाव में हो तो छठे (खाली भाव) भाव का स्वामी केतु को लेंगे। किन्तु जब बुध तीसरे में हो और भाव छठा (रिक्त) के लिए बुध-केतु में से स्वामी वही होगा जो दोनों में शुभ होगा।

बारहवें भाव का स्वामी राहु और गुरु को माना गया है। जब बारहवाँ भाव खाली हो तथा गुरु भाव नौवें में न हो तो बारहवें भाव का स्वामी राहु होगा। किन्तु जब गुरु नौवें भाव में हो तो बारहवें भाव के लिए दोनों का नक़ली ग्रह बुध स्वामी लेंगे।

इसी प्रकार बुध राहु के बारहवें भाव में नीच का होगा क्योंकि बारह का भाव उसके शत्रु ग्रह गुरु का है। जब बुध केतु के छठे भाव हो तो उच्च का होगा क्योंकि यह राशि बुध की अपनी है। बुध-केतु बराबर के ग्रह है। दोनों ही शुक्र के मित्र हैं। बुध पर इनका कोई प्रभाव नहीं होगा। लेकिन केतु-शुक्र दोनों ही छठे भाव में नीच होंगे।

गुरु के भाव में राहु गुरु के साथ अशुभ फल देता है। बुध के भाव में केतु बुध के साथ नीच फल देगा। किन्तु गुरु-केतु की युति हो तो केतु उच्च फल देगा। केतु-गुरु के साथ बराबर का फल देता है। राहु केतु को अपने आधीन रखने वाला ग्रह है।

जन्मकुण्डली में भावानुसार अवस्था

जन्म कुण्डली में पहले से तीसरे भाव तक 25 वर्ष, चौथे से छठे भाव तक 50 वर्ष, सातवें भाव से नौवें भाव तक 75 वर्ष एवं दसवें से बारहवें भाव तक 100 वर्ष माने गए हैं।

प्रथम अवस्था	—	1 से 25 वर्ष तक
द्वितीय अवस्था	—	20 से 50 वर्ष तक
तृतीय अवस्था	—	51 से 75 वर्ष तक
चतुर्थ अवस्था	—	76 से 100 वर्ष तक।

सुप्त भाव व ग्रह और जाग्रत भाव व ग्रह

जिस भाव में कोई ग्रह न हो या जिस भाव पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो वह भाव सुप्त होगा।

ग्रह की दृष्टि जिस भाव पर पड़ रही है, वहाँ मुकाबले पर कोई ग्रह न हों अपितु स्वयं हो जोकि पहले भाव का हो तो सुप्त ग्रह कहा जायेगा।

यह जान लें कि जन्मकुण्डली में पहले से छठे भाव तक को पूर्वार्द्ध और सातवें से बारहवें भाव तक को उत्तरार्द्ध कहते हैं। निज भाव में स्थित ग्रह को जाग्रत ग्रह कहते हैं। जैसे शुक्र सातवें भाव में स्थित हो तो वह जाग्रत ग्रह कहा जायेगा। सुप्त ग्रह या भाव अपना शुभ फल नहीं देता है।

सुप्त भाव कैसे जागेंगे ?

यदि भाव सुप्त हो तो उसे कौन सा ग्रह जगाएगा यह जानने के लिए देखें—'सुप्त भाव जाग्रत चक्रम्'। जैसे—पहला भाव सुप्त होगा तो उसे मंगल

ग्रह जगाएगा, दूसरा भाव सुप्त होगा तो उसे चन्द्र ग्रह जगाएगा, तीसरा भाव सुप्त होगा तो उसे बुध ग्रह जगाएगा, चौथा भाव सुप्त होगा तो उसे चन्द्र ग्रह जगाएगा, इसी प्रकार अन्य भावों के लिये सारिणी देखें।

सुप्त भाव जाग्रत चक्रम्

सुप्त भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
कौन सा ग्रह जगाएगा	मंगल	चन्द्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	राहु	शुक्र	चन्द्र	शनि	शनि	गुरु	केतु

सुप्त ग्रह कैसे जागेंगे ?

दसवें भाव में कोई ग्रह न हो तो दूसरे भाव के ग्रह सुप्त (सोए) होंगे। दूसरे भाव में कोई ग्रह न हो तो दसवें व नौवें भाव के ग्रह सुप्त होंगे। सुप्त ग्रह कब जागेंगे, यह जानने के लिए देखें—'सुप्त ग्रह जाग्रत चक्रम'।

सुप्त ग्रह जाग्रत चक्रम्

ग्रह	कब जागेगा	किस आयु में	किस वर्ष अशुभ फल देगा
सूर्य	सरकारी कार्य या संबंधों पर	22 वर्ष के उपरान्त	2, 8, 9 या 24वें
चन्द्र	शिक्षा के समय	24 वर्ष के उपरान्त	1 या 25वें
मंगल	औरत संबंधी कार्यों पर	28 वर्ष के उपरान्त	6 या 34वें
बुध	व्यापार, बहन या लड़की के विवाह पर	34 वर्ष के उपरान्त	2 या 36वें
गुरु	सामान्य व्यापार प्रारम्भ करते समय	16 वर्ष के उपरान्त	6 या 22वें
शुक्र	विवाहोपरान्त	25 वर्ष के उपरान्त	3 या 28वें
शनि	मकान संबंधी कार्यों पर	36 वर्ष के उपरान्त	6 या 42वें
राहु	ससुराल संबंधी	42 वर्ष के उपरान्त	2, 44 या 48वें
केतु	सन्तान के जन्म पर	48 वर्ष के उपरान्त	3 या 51वें

जब पूर्वार्द्ध में कोई कोई ग्रह न हो तो उत्तरार्द्ध के ग्रह सुप्त होते हैं और जब उत्तरार्द्ध में कोई ग्रह न हो तो पूर्वार्द्ध के ग्रह सुप्त होते हैं। जहाँ

ग्रह की दृष्टि पड़ती है, वह भाव खाली हो तो वहाँ दृष्टि का कोई प्रभाव नहीं होता है। सुप्त भाव या ग्रह निष्फल होते हैं चाहे उच्च दृष्टि कितनी भी हो।

अदृष्ट अकेला ग्रह शुभाशुभ विचार

जब ग्रह अकेला हो और किसी ग्रह से दृष्ट न हो तो उसे अदृष्ट अकेला ग्रह कहेंगे। ऐसा ग्रह सामान्यतः किन भावों में अशुभ एवं किन भावों में शुभ होगा बताते है। देखें—'अदृष्ट अकेला ग्रह शुभाशुभ भाव चक्रम्'। यहाँ अशुभ से तात्पर्य है कि ग्रह ऐसे भाव में हो जहाँ नीच या शत्रुओं से युत हो। यहाँ शुभ से तात्पर्य है कि ग्रह अपने भाव का स्वामी हो या मित्र क्षेत्री हो या उच्च भाव में हो।

अदृष्ट अकेला ग्रह शुभाशुभ चक्रम्

अदृष्ट अकेला ग्रह	सामान्यतः अशुभ भाव	सामान्यतः शुभ भाव
सूर्य	6, 7, 10	1 से 5, 8, 9, 11, 12
चन्द्र	6, 8, 10 से 12	1 से 5, 7, 9
मंगल	4, 8	1 से 3, 5 से 7, 9 से 12
बुध	3, 8 से 12, सदैव अशुभ न होंगे।	1, 2, 4, 5, 6, 7
गुरु	6, 7, 10 अशुभ गुरु को केतु से सहायता मिलेगी।	1 से 5, 8, 9, 12
शुक्र	1, 6, 9	2 से 5, 7, 8, 10, 11, 12
शनि	1, 4, 5, 6,	3, 2, 7 से 12 .
राहु	1, 2, 5, 7 से 12	3, 4, 6
केतु	3 से 6, 8	1, 2, 7, 9 से 12

ग्रहों एवं भावों की दृष्टि

ग्रह जिस पर दृष्टि डालता है उस पर अपना प्रभाव डालता है। दृष्टि डालने वाले ग्रह को **'दृष्टा'** और जिस पर दृष्टि पड़े उसे **'दृश्य'** कहते हैं। जब ग्रह की दृष्टि 100 प्रतिशत होती है तो ऐसे में दृष्टा और दृश्य ग्रह अत्यधिक समीप या एक हो जाते हैं या मिल जाते हैं। जब ग्रह की दृष्टि 50 प्रतिशत

होती है तो ऐसे में दृष्टा और दृश्य ग्रह के बीच का अन्तर आधा हो जाता है या दोनों की आधी शक्ति परस्पर मिल जाती है। जब ग्रह की दृष्टि 25 प्रतिशत होती है तो ऐसे में दृष्टा और दृश्य ग्रह के बीच का अन्तर तीन चौथाई रहता है या दोनों की एक चौथाई शक्ति परस्पर मिल पाती है। प्रत्येक ग्रह की पूर्ण दृष्टि सातवीं होती है। पणकर (2, 5, 8, 11) भाव का उच्च ग्रह अपनी राशि में उत्तम प्रभाव देगा। दृष्टा ग्रह दृश्य ग्रह पर तो अपना प्रभाव डालता है, परन्तु

भाव दृष्टि चक्रम्

भाव	दृष्टि का प्रकार	परस्पर सहायता	सामान्य दृष्टि	टकराव	नींव	विश्वासघात	साझी चोट	अचानक चोट
1	→ ←	5 9	7 7	8 6	9 5	10 4	2, 4 12, 10	3, 7, 11
2	→ ←	6 10	8 8	9 7	10 6	11 5	3 1	4
3	→ ←	7 11	9 9	10 8	11 7	12 6	4 2	1
4	→ ←	8 12	10 10	11 9	12 8	1 7	5, 7 3, 1	10, 6, 2
5	→ ←	9 1	11 11	12 10	1 9	2 8	6 4	7
6	→ ←	10 2	12 12	1 11	2 10	3 9	7 5	4
7	→ ←	11 3	1 1	2 12	3 11	4 10	8, 10 6, 4	1, 5, 9
8	→ ←	12 4	2 2	3 1	4 12	5 11	9 7	10
9	→ ←	1 5	3 3	4 2	5 1	6 12	10 8	7
10	→ ←	2 6	4 4	5 3	6 2	7 1	11, 1 9, 7	4, 8, 12
11	→ ←	3 7	5 5	6 4	7 3	8 2	12 10	1
12	→ ←	4 8	6 6	7 5	8 4	9 3	1 11	10

दृश्य ग्रह दृष्टा ग्रह पर कोई प्रभाव नहीं डालता है। अब 'भाव दृष्टि चक्रम्' के द्वारा भावों की दृष्टि समझा रहे हैं। इस चक्र में इस चिह्न (⟶) से तात्पर्य यह है कि भाव को देख सकता है और इस चिह्न (⟵) से तात्पर्य यह है कि भाव से देखा जा सकता है। दृष्टि डालते समय पूर्व के भावों के ग्रह बाद के भावों के ग्रहों से शत्रुता-मित्रता करते हैं मात्र आठवें भाव को छोड़कर जोकि दूसरे भाव को पीछे की ओर देखता है।

ग्रहों का विशेष प्रभाव

भाव में ग्रह के स्थित होने पर वह किस ग्रह को प्रभावित करेगा और उसका क्या फल होगा अब यह बताते हैं। **पहले भाव में राहु स्थित हो** तो उसका प्रभाव सूर्य पर पड़ेगा और सूर्य जिस भाव में स्थित होगा उस भाव में सूर्य ग्रहण की स्थिति होगी। **पहले भाव में केतु स्थित हो** तो उसका प्रभाव सूर्य पर पड़ेगा और सूर्य उच्च ग्रह की तरह फल देगा। **दूसरे भाव में बुध स्थित** हो तो उसका प्रभाव गुरु पर पड़ेगा और प्रत्येक प्रकार से हानि करेगा। **चौथे भाव में बुध स्थित हो** तो उसका प्रभाव चन्द्र पर पड़ेगा और प्रत्येक प्रकार से हानि करेगा। **छठे भाव में मंगल स्थित हो** तो उसका प्रभाव सूर्य व केतु पर पड़ेगा। सूर्य उच्च ग्रह की तरह फल देगा जबकि केतु हानि करेगा। **ग्याहरवें भाव में राहु स्थित हो** तो उसका प्रभाव गुरु पर पड़ेगा और प्रत्येक प्रकार से हानि करेगा। **ग्याहरवें भाव में केतु स्थित हो** तो उसका प्रभाव चन्द्र पर पड़ेगा और तब हानि करेगा जब बुध नौंवे भाव में न हो। **ग्याहरवें भाव में गुरु स्थित हो** तो उसका प्रभाव राहु पर पड़ेगा और हानि करेगा, ऐसे में बुध भी अशुभ हो। **बारहवें भाव में चन्द्र स्थित हो** तो उसका प्रभाव केतु पर पड़ेगा और हानि करेगा।

ग्रहों की वस्तुएँ, व्यापार और संबंधी

सूर्य—विष्णु जी, सोना (मतान्तर से तांबा), गुड़, बाजरा, शिलाजीत, लाल (माणिक्य), स्वयं (अपना शरीर) दायीं आँख, हड्डी राजदरबार से सम्बन्धित काम, सेहरा, कलगी, क्षत्रिय राजपूत, नारंगी रंग, भूरा रीछ, भूरा नेवला, भूरी चींटी, इकलौता लड़का, तेज फल का वृक्ष, नमक सफेद।

चन्द्र—शिव जी, चांदी, मोती, चावल, दूध, पानी (पानी के स्रोत) पानी के काम, सफेद रंग (दूध रंग) दिल, बायीं आँख, बजाजी (कपड़ा) के काम,

सफेद चीज़ें, पुंज (जैन धर्म), घोड़ा, खरगोश, धोती, परना (तौलिया-अंगोच्छा), माता, मौसी, नानी और दादी, चिरायता (जड़ी-बूटी), दूध वाले वृक्ष।

मंगल—हनुमान जी, तांबा, लाल मूंगा, शहद, मीठा (गुड़-चीनी) दाल, मसूर, लाल मिर्च, सिन्दूर, खून, चीता, हिरण, सफेद सुरमा, वास्कट। मंगल शुभ हो तो हनुमान जी, लाल रंग, लड़ाई का सामान (बारुद शस्त्रादि), अग्नि कार्य, नीम, साला। मंगल अशुभ हो तो जिन्न, सूत, चाकलेटी रंग, नाई, कसाई, दर्जी, जर्राह, सर्जन, भाई।

बुध—दुर्गा जी, कलई (रांगा), पारा, पन्ना, फिटकरी, अण्डा, मूंग की दाल साबुत, दिमाग, दांत, नाड़ियां, स्टेशनरी का काम, लेखक, पत्रकार, प्रकाशक, छापाखाना, वकील, लेखाकार, हरा रंग, ठठेरा, ठप्पा या ढांचा, दलाल, व्यापारी, तोता, चमगादड़, बुआ, मौसी, साली, लड़की, बहन, कन्या, मिट्टी का घड़ा, रेत, शहतूत, लहसूड़ा, बांस, ढाक (पलाश) का वृक्ष, पेटी (Belt) तगड़ी (कमर पर वस्त्र बांधने वाला)।

बृहस्पति—ब्रह्मा जी, सोना, पीतल, पुखराज (पीला), दाल चना, हल्दी, केसर, कस्तूरी, नाक, ब्राह्मण, धर्म के काम (धर्म मन्दिर का पुजारी), सफेद बालों वाला व्यक्ति, कुल पुरोहित, चलता साधु, जौहरी, सर्राफ (सुनार), पीला रंग, बब्बर शेर, मेंढक (नीच बृहस्पति) पीपल, धर्म स्थान (मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च), पिता, दादा।

शुक्र—लक्ष्मी जी, हीरा, कर्पूर, अभ्रक, घी, दही, आलू, जमींकन्द, कपास, चरी (ज्वार), चेहरा, सुगन्धित द्रव्यों या चीजों के काम, स्त्रियों के सम्बन्धित काम, नाटककार, सफेद रंग (दही रंग), गाय, स्त्री, प्रेमिका, कुम्हार, वैश्य, कृषक (जमींदार), कच्ची मिट्टी, बीज, कमीज।

शनि—भैरों जी, लोहा, फौलाद (स्टील), कोयला, पत्थर, नमक काला, सुरमा काला, काली मिर्च, उड़द की दाल साबुत, सरसों का तेल, स्पिरिट, शराब, बाल नजर (दृष्टि), कनपटी, मशीनरी, सीमेंट, प्लास्टिक, चमड़ा, लौहार, बढ़ई, मोची, काला रंग भैंसा, मगरमच्छ, मछली, सांप-बिच्छु, कौवा-चील, ताया-चाचा, जादू-मन्त्र देखने-दिखाने की कला, कीकर का वृक्ष, आक (मदार), खजूर का वृक्ष, जूता व जुराब।

राहु—सरस्वती जी, सीसा (Lead), गोमेद, कच्चा कोयला, जौ (अनाज), सरसों, मूली, स्मरण शक्ति, बिजली के यन्त्र, नीला रंग, हाथी,

सीढ़ियां, शौचालय, चिमनी, ननिहाल, ससुराल, नारियल, सिंघाड़ा, पजामा, पतलून।

केतु—गणेश जी, लहसुनिया, दो रंग का पत्थर, इमली, केला (फल), पीला नींबू, तिल (काले-सफेद), पांव, सांसारिक कार्य, दोरंग (काला-सफेद), चूहा, कुत्ता, सूअर, गधा, छिपकली, दुपट्टा, कम्बल, ओढ़ना (शरीर ढांपने वाला वस्त्र) लड़का, भतीजा, दोहता, भांजा, चारपाई (पलंग), तख्ता (मुर्दे को शमशान ले जाने वाला)।

कुण्डली के किस भाव से क्या विचारें ?

प्रथम भाव (लग्न)—शरीर, स्वास्थ्य, चेहरा, चेहरे की रंगत, मनोस्थिति, मान-सम्मान, प्रसिद्धि, धर्म-कर्म, आयु, जाति, सुख-दुःख, प्रकृति, योग्यता और स्मरण शक्ति आदि।

द्वितीय भाव (धन)—धन-दौलत, परिवार, ससुराल, आर्थिक दशा, विद्या वाक् शक्ति, धन कमाने के साधन, स्वतन्त्रता, सच्चाई, शक्ति, खाना-पीना, धातुएं (सोना, चांदी आदि), रत्न (हीरा-पन्ना आदि) आदि।

तृतीय भाव (पराक्रम)—छोटे बहन-भाई, परिवार, पराक्रम, पढ़ना-लिखना, भक्ति, भाषण देना, जमीन की यात्रा, दवाईयां, कर्जा, दूसरों से मदद, पड़ोसी, राग-विद्या, नाचना-गाना, भक्ति, चिट्ठी-पत्र, दूरभाष (Telephone) फैक्स (Fax), टैलैक्स (Talx) आदि।

चतुर्थ भाव (सुख)—माता, मकान, जमीन-जायदाद, सुख के साधन, सवारी के साधन (मोटर-कार, बस, टांगा-बग्गी आदि), दूध वाले पशु, जमीन में गढ़ा हुआ धन, चरित्र, सभ्याचार, उत्तर दिशा की यात्रा, बुढ़ापा, दवाइयां आदि।

पंचम भाव (संतान)—संतान, विद्या, बुद्धि, शिष्टाचार, शिष्य और गुरु, दिल बहलाने के काम व साधन, ऐश्वर्य, प्रेम, रोमांस, प्रियतमा, प्रतिस्पर्धात्मक विद्या, कृतियां, काव्य, कला, मन्त्र-यन्त्र, योगाभ्यास, आने वाला जन्म, नीति-न्याय, सन्देश वाहक, जुआ-सट्टा, लाटरी, रेस, जासूसी आदि।

षष्ठ भाव (शत्रु)—रोग, ऋण, लड़ाई-झगड़ा, भाईचारा, दुःख, नौकर-सेवक, घाव, कैद, जहरीले जानवर, आग का भय, शत्रु का भय, नुकसान, अन्याय, पाप, मांसाहारी भोजन आदि।

सप्तम भाव (भार्या)—विवाह, पति-पत्नी, व्यवहार, व्यापार में भागीदारी, रोजगार, पिता के धन का झगड़ा, सामने खड़ा शत्रु, बिना परिश्रम के लाभ, दूसरी स्त्रियों से सन्तान, घमंड़ अहंकार, पड़ोसी, कर्जा आदि।

अष्टम भाव (मृत्यु)—आयु-मृत्यु, मृत्यु का कारण ऊंचाई से गिरना, दहेज, अचानक धन मिलना, दुर्घटना, निराशा, अपमान, चोरी गया माल-धन, चुगली-निन्दा, समुद्र-नदी के पार यात्रा, यात्रा में कष्ट, कार्य के भागीदार लम्बी बीमारी, कारावास आदि।

नवम भाव (भाग्य)—पिता, गुरु, दान, धर्म, तीर्थ यात्रा, आत्मिक शक्ति, भविष्यवाणी, स्वप्न, बुद्धि, आहार, मित्र, पहाड़ में रहना, भाग्य, लम्बी समुद्री यात्रा, नम्रता, धार्मिक विचार या काम, रस्मों-रिवाज, ईश्वरी सहायता, कृतियां, साईंस आदि।

दशम भाव (कर्म)—व्यवसाय, राजदरबार/सरकार, राज्य करने की इच्छा, मान-सम्मान, प्रसिद्धि, सामाजिक कार्य, कृषि भूमि, पहनावां, इनाम और उपाधियां, भलाई के काम, धर्म के काम, रिश्वत, बिना परिश्रम के लाभ, वैद्य-डाक्टर आदि।

एकादश भाव (आय)—आय और लाभ, बड़े बहन-भाई, पिता की जायदाद, खजाना, उच्च पद आसीन होना, पहनावा, इच्छाओं की पूर्ति, क्रय-विक्रय, विद्या, राग-विद्या, आयु, सुलेख, राजकीय पुरस्कार, प्रसन्नता, हाथी-घोड़े, सोना-चांदी आदि।

द्वादश भाव (व्यय)—अपव्यय या हानि, सरकारी दण्ड या जुर्माना, शत्रु, बदनामी, असभ्य बातें, दुर्भावना, कारावास, देश निकाला, दान, कष्ट, चोरी का सामान जो न मिल सके, वाहन, चोर-डाकू से भय, विदेश यात्रा, सोने का कमरा आदि।

फलित कैसे करें ?

एक ही ग्रह के आधार पर किया गया फलित सन्देह उत्पन्न करता है और फलितज्ञ और भविष्य जानने वाले को धोखे में रखता है। प्राचीन ज्योतिष से बनी जन्मकुण्डली को लेकर उसके सभी राशि अंक हटा दें, परन्तु ग्रह जिस भाव में हैं, उन्हें वहीं रहने दें। बाद में इस कुण्डली में लग्न से द्वादश भाव तक 1 से 12 तक के अंक स्थापित कर दें, अब जो कुण्डली नए रूप में हमारे सम्मुख होगी, वही लाल किताब की कुंडली है। अब लाल किताब

के फलित सिद्धान्तों को इस कुण्डली पर व्यवहार में लाकर जातक का भविष्य निर्धारित करें। एक या एक से अधिक ग्रहों की युति होने पर उन ग्रहों का अलग-अलग एवं मिश्रित फल समन्वय से देखेंगे क्योंकि कभी-कभी ग्रह अलग-अलग अशुभ फल देते हैं, परन्तु एक साथ बैठने पर अच्छा फल देते हैं। जैसे-बुंध व मंगल ग्रह अलग-अलग आठवें भाव में स्थित हों तो अशुभ फल करते हैं, परन्तु एक साथ मंगल-बुध आठवें भाव में स्थित हों तो शुभ फल करते हैं। एक या एक से अधिक ग्रहों की युति का फल, एक साथ स्थित होने का फल एवं अलग-अलग जो फल हो उन्हें देखकर समन्वय युक्त फल कहें, अपने मन से फल न कहें। यह मान लें कि प्रत्येक भाव एक घर है और उस घर के स्वामी के अनुसार ही उस घर के गुण-अवगुण होंगे। इसके अतिरिक्त उस घर पर जिस ग्रह का कारक प्रभाव है उसका भी पूर्ण प्रभाव होगा। इन दोनों ग्रहों की परस्पर मित्रता-शत्रुता भी उस भाव के फल पर प्रभाव डालती है। यदि परस्पर शत्रुता हो तो भाव का फल अशुभ और परस्पर मित्रता है तो भाव का फल शुभ होगा। यहाँ तीसरा ग्रह जो उस भाव में स्थित होता है, उसका भी इनसे कैसा संबंध है इससे भी फलित प्रभावित होता है। उदाहरणतः मान लो ग्याहरवें भाव का स्वामी शनि है, यह भाव गुरु का कारक भाव है और यदि इसमें राहु ग्रह स्थापित है जो ग्याहरवें भाव से सम्बन्धित है, यह भाव आय और सभी आवश्यकताओं का स्रोत है जिस पर गुरु का अधिपत्य है। आप इस प्रकार समझ सकते हैं कि ग्याहरवें भाव की धरती शनि की है और उस पर घर गुरु का है। यहां राहु स्थित होने के कारण उसने घर पर कब्जा कर रखा हैं। राहु शनि का दूत है और इसका अशुभ से सम्बन्ध है, इसलिए इस घर में ऐसा भूकम्प आयेगा कि गुरु का स्वर्णिम वर्ण नीला हो जायेगा और वह घर कहाँ गया इसका भी पता नहीं चलेगा। गुरु नष्ट हो जाने से राहु का अशुभ धुँआ चारों ओर फैल जायेगा। यहाँ गुरु का प्रभाव बढ़ाने के लिए सोना धारण करना या पीला धागा धारण करना अत्यावश्यक है। इस प्रकार प्रत्येक भाव और उसमें स्थित ग्रहों का फल सम्यक विश्लेषण के बाद करना चाहिए।

वर्ष कुण्डली कैसे बनाएं ?

प्रत्येक वर्ष का वर्षफल ज्ञात करने के लिए लाल किताब के आधार पर वर्ष कुण्डली कैसे बनाएँ, अब यह बताते है। वर्ष कुण्डली से पूर्ण वर्ष

का लेखाजोखा सरलता से जाना जा सकता है। जीवन में वर्षफल का विशेष महत्त्व होता है। प्रत्येक वर्ष की कुण्डली में ग्रह भिन्न-भिन्न भावों में होते हैं। प्राचीन ज्योतिष की वर्ष कुण्डली और लाल किताब की वर्ष कुण्डली में अन्तर है। लाल किताब की वर्ष कुण्डली शीघ्र और तुरन्त बनायी जा सकती है। प्राचीन ज्योतिष की वर्ष कुण्डली बनाने में समय लगता है। जन्म कुण्डली के ग्रह प्रत्येक वर्ष में एक साथ ही भाव बदलते हैं, जबकि प्राचीन ज्योतिष में ग्रह गोचर में अभीष्ट वर्ष में जहाँ पर हों उसके अनुरूप भाव बदलते हैं।

वर्ष कुण्डली बनाने के लिए यहाँ 120 वर्षों का 'वर्ष कुण्डली चक्रम्' पृष्ठ 33, 34, 35 एवं 36 पर दे रहे हैं जिसके आधार पर आप सरलता से किसी भी वर्ष की वर्ष कुण्डली दो-तीन मिनट में बना सकते हैं। वर्ष कुण्डली चक्रम् के शीर्ष में भाव संख्या और बायीं ओर खड़ी रेखा में आयु वर्ष और प्रत्येक आयु वर्ष के सामने भाव संख्या अंकित है। चक्रम् में देखें जन्म कुण्डली के पहले भाव में स्थित ग्रह पहले वर्ष की वर्ष कुण्डली में पहले भाव में ही रहेंगे। दूसरे वर्ष में पहले भाव के ग्रह चौथे भाव में रहेंगे। इसी प्रकार आप जन्म कुण्डली के किसी भी भाव में स्थित ग्रह वर्ष कुण्डली के किसी भाव में रहेंगे 'वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्' से सरलता से जान सकते है।

लाल किताब के आधार पर वर्ष कुण्डली बनाने के लिए आपको जातक की जन्म कुण्डली का जन्म लग्न चाहिए और 'वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्'। तदोपरान्त यह ज्ञात करे कि आपको किस वर्ष की वर्ष कुण्डली बनानी है। मान लो हेमन्त का जन्म 16.9.1960 को हुआ है और उसका जन्म लग्न निम्न प्रकार है—

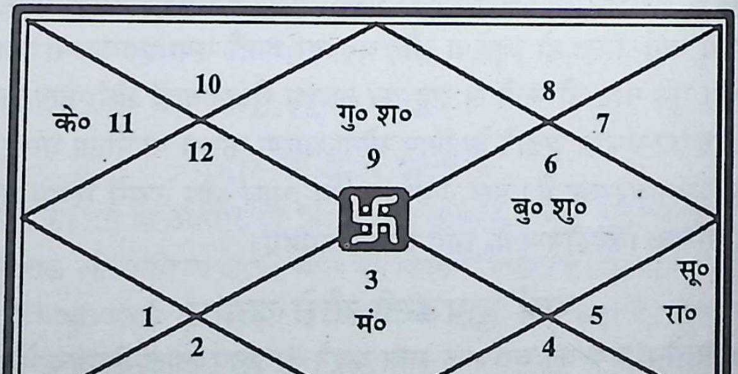

जन्म लग्न

मान लो कि 36वें वर्ष की कुण्डली बनानी है। 'वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्' के 36वें वर्ष के सामने की पंक्ति में देखें कि जन्म कुण्डली के किस भाव के ग्रह वर्ष कुण्डली के क़िस भाव में रहेंगे।

'वर्ष कुण्डली चक्रम्' के 36वें वर्ष के सामने की पंक्ति में निम्न प्रकार अंकित है—

	भाव											
वर्ष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4

अत: स्पष्ट है कि जन्म कुण्डली के पहले भाव के ग्रह वर्ष कुण्डली के छठे भाव में, दूसरे भाव के ग्रह आठवें भाव में, तीसरे भाव के ग्रह सातवें भाव में, चौथे भाव के ग्रह दूसरे भाव में, पाँचवें भाव के ग्रह बारहवें भाव में, छठे भाव के ग्रह दसवें भाव में, सातवें भाव के ग्रह पांचवें भाव में, आठवें भाव के ग्रह नौवें भाव में, नौवें भाव के ग्रह तीसरे भाव में, दसवें भाव के ग्रह ग्यारहवें भाव में, ग्याहरवें भाव के ग्रह पहले भाव में और बारहवें भाव के ग्रह चौथे भाव में रखे जायेंगे।

36वें वर्ष की वर्ष कुण्डली

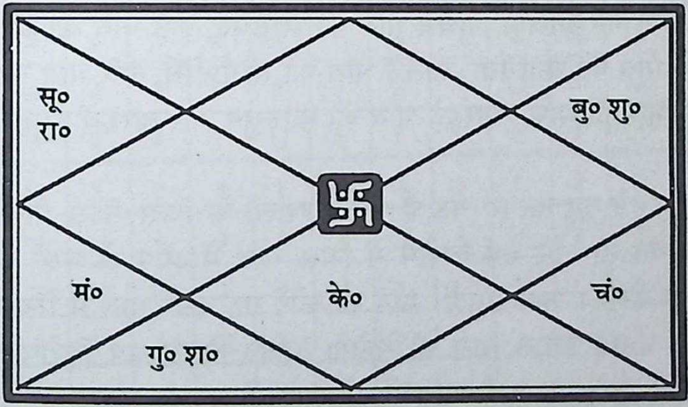

जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उस वर्ष के सामने अंकित भावों में जन्म कुण्डली के ग्रह वर्ष कुण्डली में अंकित करें। यदि जन्म कुण्डली में स्थित ग्रह चार-पाँच या दो-तीन एक साथ स्थित हैं तो वर्ष कुण्डली में भी

वे एक साथ ही स्थित होंगे। वर्ष कुण्डली बनाते समय लग्न को ही पहला भाव मानना है और जो ग्रह उनमें पड़े हैं उन्हें वर्ष कुण्डली बनाते समय 'वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्' से भाव ज्ञात करके रखना है।

वर्षफल कैसे कहें ?

जिस वर्ष का वर्षफल देखना है उस वर्ष के अंक को जितनी संख्या के भाव में ग्रह स्थित हो उससे भाग देने पर जो शेष रहे उस संख्या के भाव में ग्रह अपना प्रभाव डालेगा। यदि शेष शून्य बचे तो उसी भाव का फल मिलेगा जिसमें की ग्रह स्थित है।

उदाहरणत: मान लो कि किसी कुण्डली में सूर्य ग्याहरवें भाव में है और आयु का 36वाँ वर्ष चल रहा है। 36 को 11 से भाग दिया तो शेष 3 रहा, अत: स्पष्ट है कि 36वें वर्ष में सूर्य तीसरे भाव में मानकर सूर्य संबंधी वस्तुओं का प्रभाव जाना जायेगा। इसी प्रकार अभीष्ट वर्ष में प्रत्येक भाव का फल देखना चाहिए। यहाँ यह ध्यान रखें कि जिस ग्रह से संबंधित वस्तुओं या फल का विचार करना है उसी ग्रह को इस प्रकार देखें।

शेष ग्रह तो कुण्डली के अनुसार ही रहेंगे। सभी ग्रहों का विचार करने पर जो कुण्डली बनेगी वह वर्ष विशेष का प्रभाव देखने के काम आयेगी।

जन्म पत्री के बारह भावों को बारह माह मानकर फल कहें। कुण्डली के पहले भाव को **वैशाख**, दूसरे भाव को **ज्येष्ठ**, तीसरे भाव को **आषाढ़**, चौथे भाव को **श्रावण**, पांचवें भाव को **भाद्रपद**, छठे भाव को **आश्विन**, सातवें भाव को **कार्तिक**, आठवें भाव को **मार्गशीर्ष**, नौवें भाव को **पौष**, दसवें भाव को **माघ**, ग्यारहवें भाव को **फाल्गुन** और बारहवें भाव को **चैत्र** समझें।

कहने का तात्पर्य यह है कि कुण्डली के जिस-जिस भाव में जो ग्रह स्थित हो और वर्ष विशेष में जिस भाव में आए तो उसी मास के अनुरूप उसका फल समझें। मान लो कोई ग्रह दूसरे भाव में स्थित है तो उसका प्रभाव ज्येष्ठ मास में मिलेगा अर्थात किसी वर्ष विशेष में जब कोई ग्रह जैसे बुध दूसरे भाव में आ जाए तो उसका प्रभाव ज्येष्ठ मास में जातक पर पड़ेगा।

इसी प्रकार कुण्डली के जो भाव रिक्त हों उनमें वर्षफल के अनुसार जो ग्रह अपना प्रभाव उस मास में देगा जिसमें सूर्य वर्ष कुण्डली के अनुसार

वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—1

आयु	जन्म कुण्डली के भाव											
वर्ष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1

वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—2

आयु वर्ष	जन्म कुण्डली के भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	4

वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—3

आयु	जन्म कुण्डली के भाव										
वर्ष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9

वर्ष कुण्डली ज्ञान चक्रम्—4

आयु वर्ष	जन्म कुण्डली के भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
73	1	4	10	12	11	7	8	2	5	9	3	
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8

स्थित है। जैसे कुण्डली में भाव चार रिक्त है और वर्ष कुण्डली के अनुसार मंगल चौथे भाव में है और सूर्य आठवें भाव में है तो ऐसे में मंगल का प्रभाव जन्म दिनांक से गणना करके आठवें माह में मिलेगा। वर्ष का प्रारम्भ और अन्त हिन्दी महीनों के अनुसार लेना चाहिए अर्थात वर्ष का प्रारम्भ सूर्य के मेष राशि के प्रवेश से माने। सूर्य की सक्रान्ति के विचार से बारह मास होते हैं। सूर्य जब मेष राशि में प्रवेश करता है तो सौर वैशाख मास प्रारम्भ होता है, वृष में प्रवेश करता है तो ज्येष्ठ, मिथुन में प्रवेश करता है तो आषाढ़, कर्क में प्रवेश करता है तो श्रावण, सिंह में प्रवेश करता है तो भाद्रपद, कन्या में प्रवेश करता है तो आश्विन, तुला में प्रवेश करता है तो कार्तिक, वृश्चिक में प्रवेश करता है तो मार्गशीर्ष, धनु में प्रवेश करता है तो पौष, मकर में प्रवेश करता है तो माघ, कुम्भ में प्रवेश करता है तो फाल्गुन और मीन राशि में प्रवेश करता है तो चैत्र मास होता है। इन मासों की तारीख सूर्य के अंश के अनुसार होती है। उदाहरणतः मान लो कि सूर्य सिंह राशि के 17 अंश पर है तो भाद्रपद मास की 17 तारीख हुई।

यह ध्यान रखें अंग्रेजी, हिन्दी और मास् की तारीखें परस्पर एक समान नहीं होती हैं। ज्योतिष सूर्य के आधार पर चलता है।

जीवन को प्रभावित करने वाले ग्रहों की गाथा

सूर्य कभी मार्ग नहीं बदलता है। सूर्योदय के बाद सूर्य जैसे-जैसे ऊँचा होता है संसार को प्रकाशित करता है। ऐसे भी कह सकते हैं कि मंगल अपनी किरणों से संसार और वसुन्धरा शुक्र के मध्य शक्ति के साथ तन गया।

सांसारिक व्यक्ति के हृदय (चन्द्र) ने अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए अपने अश्व को सूर्य के रथ में जोत दिया। गुरु की वायु (इन्द्र) ने परलोक से इस संसार की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया और सूर्य की आज्ञा की पूर्णतः के लिए अपने पीले सिंह को सूर्य को प्रणाम करने के लिए भेजा, जो पहले भाव मेष के मंगल को उच्च कर रहा है जिसके सामने मुकाबले के लिए शुक्र की भूमि सबको एक आंख से देखने वाली कानी स्त्री है।

मंगल उस पर कभी आक्रमण नहीं करता है और सूर्य व गुरु को लौटकर बताता है कि कानी अबला स्त्री (शुक्र) की वास्तविकता क्या है। मंगल न्याय का स्वामी है।

गुरु दया का देवता है जो किसी से शत्रुता नहीं करता है। सूर्य न्याय व दया करने वाला है, क्योंकि उसके भीतर चन्द्र रूपी शक्तिदायी हृदय स्थित है जो सबकुछ देख रहा है। यहाँ न्याय होता है कि पैरों में पड़ी कानी स्त्री पर मंगल द्वारा आक्रमण करना वीरोचित कार्य नहीं है।

मौन बुध धीरे-धीरे अपना क्षेत्र बढ़ाता है जिसमें मिथुन राशि उत्पन्न होती है अर्थात् बुध शुक्र की अपने घर में पालन-पोषण करने लगता है। फलतः स्त्री-पुरुष का युगल बन जाता है।

दूसरी ओर शनि जिसने शुक्र को देखने के लिए अपनी आँख उधार में दी थी। शनि की इस शैतानी आँख ने शुक्र को अपने पिता के विरुद्ध सिखा-पढ़ा दिया जिससे भोली-भाली स्त्री रूपी शुक्र ने सूर्य व गुरु को नीचा दिखा दिया। ऐसे में सर्वत्र अशुभ फल होने लगा। तब मंगल वर्गाका राहु के रूप में बदल गया जिससे मस्तिष्क में नकली बातें घर करने लगीं। तब मंगल की शक्ति क्षीण होने लगी तो (सूर्य व गुरु जो सबके पिता है के कारण) कानी अबला स्त्री शुक्र को मारने के लिए तत्पर हो उठा। ऐसे में यदि वो अकेला हो तो कायरता के कार्य कर जाए, पर न कर पाने के कारण मौन है।

मंगल की उपस्थिति में राहु भी मौन है। ऐसे में स्त्री-पुरुष का युगल कामदेव को अन्तः में छिपाए फिर रहा है। मंगल अपनी शत्रुता त्यागने को भी तैयार नहीं है और उसने अवसरानुकूल कभी भी काबू में आ जाने पर स्त्री को मारने का सिद्धान्त बना लिया।

केतु की सहायता या कामदेव की कृपा और मंगल की सलाह पर किरणें वसुन्धरा पर शुक्र को मारने या नीचा दिखाने की अपेक्षा उसे चमकाने के लिए लौटने लगीं। इसमें भी सभी ग्रहों को शनि की कूटनीति का आभास हुआ। गुरु रूपी हवा आज्ञाकारी हो गई है। मंगल लड़ने को तत्पर नहीं है। सूर्य की आज्ञा से गुरु मंगल की किरणों को इधर-उधर करता है जिससे शुक्र का कुछ अहित न हो सके। गुरु की वायु वेग में है।

शुक्र की माया (जो महाठगनी है) के झगड़े और धूल के कण उड़कर सबकी आँखों में पड़ने लगे, परन्तु उसकी अपनी आँख निरन्तर देख रही है क्योंकि उसके पास शनि की ऋण में लगी हुई आँख जो है। इस लिए सांसारिक झंझावत झगड़े व संघर्ष है। इस सबसे वही बच सका है जिसने

शनि से आँख न मिलायी हो। शुक्र से वसुन्धरा के कणों में ताप बढ़ा अर्थात् स्त्री की मुस्कान और नयनों की चंचलता के कारण अनेक झगड़े होने लगे। मंगल ने दृश्य दिखाया और चन्द्र ने तमाशा देखा।

सारा संसार शुक्र और सूर्य की परस्पर शत्रुता के कारण इतना दुःखी हुआ कि शुक्र सूर्य को दबा देने के लिए पूर्णतः सक्रिय हो गया, इसमें गुरु की वायु का वेग भी उसकी वसुन्धरा के धूल कणों को उड़ाकर सहयोग देने लगे। सभी परेशान होने लगे। सूर्य का ताप भी कम होने लगा पर फिर भी कोई सूर्य का कुछ नहीं बिगाड़ सका, अपितु अपना ही अहित कर बैठे। सूर्य का रथ धीरे-धीरे छिपने लगा। शनि चौकीदार की तरह पहरा देने लगा। सूर्य किरणें लुप्त हो गयीं, मंगल भी चला गया। मंगल की अनुपस्थिति में राहु आ गया और रात्रि हो गई। सूर्य की चमक गुरु की शीतल वायु के साथ चन्द्र की शक्ति से पुनः दिखने लगी, गर्मी घटी, सर्दी बढ़ी और वसुन्धरा को शक्ति मिली। राहु ने रात्रि समाप्त की तो पुनः ठंडी हवा चलने लगी जिस पर रात्रि के बाद दिन का अन्तर अर्थात् सन्धि पर केतु निकल आया। दिन की समाप्ति और रात्रि के प्रारम्भ की सन्धि पर राहु था।

अब पुनः नए सूर्य के आने की आशा हुई। नवजात शिशु को ज्यों-ज्यों हवा लगने लगी बुद्धि आने लगी। नवजात पौधे व वृक्षों के पत्तों का रंग पीला होता है। बन्द बर्तन में पैदा हुए पौधे इस बात को स्पष्ट करते हैं। सब्ज रंग हरा बुध का है। गुरु की हवा बुद्धि तो देगी पर पीली से हरी करेगी अर्थात् गुरु का प्रभाव कम होता जायेगा और बुध के प्रभाव से मनुष्य धन की पीछे रात-दिन भागता रहेगा, क्योंकि बुध की गुरु से शत्रुता है। माता कहती है बच्चा बड़ा हुआ परन्तु गुरु की आयु घटती जाती है। जन्म के समय तो गुरु की पूर्णायु होती है। गुरु के पीले रंग में हरा रंग बुध का मिलने पर रूप बदलता है तो नीला रंग राहु का मिलने पर मस्तिष्क में सक्रियता आती है अर्थात् शुभ (बुध, गुरु) में अशुभ (राहु) का भी कुछ अंश आकर मिल गया।

अन्ततः सभी कुछ उलझन से युक्त हो गया। विचार शक्ति प्रबल तो हुई, किन्तु शुक्र का प्रभाव ऐसा है कि राहु व गुरु बराबर हैं, दोनों कभी शत्रुता नहीं करते क्योंकि दोनों राहु (नीला) व गुरु (पीला) को मिलाने पर हरा (बुध) रंग बन जाता है और पीला रंग बिल्कुल समाप्त हो जाता है।

कहने का तात्पर्य यही है कि बुद्धि आ जाने पर ईश्वर का लिखा भूल जा है। यहाँ तक बुध की बुद्धि का गोल वृत्त गुरु के शीर्ष पर आया तो गुरु व वायु का ऐसा चक्र चला कि उसे रिक्त आकाश की ओर जाना पड़ा। भा का विश्वास ही नहीं रहा।

इतने में सूर्य आकाश से विलुप्त हो गया, रात्रि हो गई, ताप समा होने से ठंड हो गई। गर्मी की घबराहट समाप्त होकर शान्ति होने लगं चन्द्रोदय हो गया, दिन के थके हुए सोने के लिए तत्पर हो उठे। कई प्रक की असुविधाएँ होने लगी। बालक यौवन की वायु से गर्मी-सर्दी अनुभ करने लगा और माता-पिता की छत्र-छाया में आराम करने लगा और ब मुट्ठी के आकाश की वायु श्वास का कार्य करने लगी। प्रत्येक श्वास आने-जाने में व्यक्ति के भाग्य का सम्बन्ध है। इसीलिए कोई भी बुद्धिम (बुध का स्वामी) विश्वास के साथ यह नहीं कह सकता कि अगला श्वा आयेगा या नहीं। प्रत्येक मनुष्य की यही मनोकांक्षा रहती है कि एक श्वा बाहर आने पर तुरन्त दूसरा श्वास अन्दर आ जाए। भाग्य ने एक ओर आ लगायी तो दूसरी ओर सहायता की। चौबीस घंटे में बारह राशि व सात ग्र के चक्कर से चौरासी लाख श्वास पूरे होते हैं ओर इस जगत की चौरास योनि को पूर्ण करता चला आ रहा है। यदि उसकी वायु न रहे तो बुध वृत्त में मात्र बढ़ाव ही रहेगा। दूसरे दृष्टिकोण से सोचें तो अण्डे में से गु की पीली जर्दी निकल जाने पर शेष बचे अण्डे जैसी स्थिति होगी।

इस अध्याय में लाल किताब के मुख्य सिद्धान्त बता दिए गए हैं जिस आप लाल किताब की जन्मकुण्डली व वर्षकुण्डली बनाकर उसका फ व ग्रह स्थिति के अनुसार उपाय जानकर और उन्हें कराकर अशुभ प्रभा से मुक्त हो सकें।

2

ग्रह का परिचय और उनके सामान्य उपाय

इस अध्याय में लाल किताब के आधार पर नव-ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु का परिचय और उनके सामान्य टोटके एवं उपायों की चर्चा करेंगे।

सूर्य ग्रह और उसका परिचय

सूर्य को लाल किताब में सबका पालक एवं तपस्वी राजा अर्थात् भगवान विष्णु कहा गया है। आकाश में प्रकाश, भू-ताप, सत्य, पालन-पोषण और उन्नति की शक्ति को सूर्य कहा गया है। सूर्य का होना दिन और न होना रात है। मनुष्य की काया में आत्मा, निज तन से दूजों की सहायता करने की शक्ति को भी सूर्य कहा गया है। ठंड (चन्द्र) प्रकाश व गर्मी (सूर्य), लाली (मंगल) और खाली आकाश (बुध) इसके आवश्यक भाग हैं। समय की हवा संसार के गुरु, गुरु का ज्ञान, सांसारिक बुद्धि और भाग्य की नींव इसकी देन है। सूर्य का इधर-उधर हुए बिना एक ही पथ पर निरन्तर अपना अन्त बताए बिना चलते रहना और वसुन्धरा पर रात-दिन करते जाना भी एक आश्चर्य है।

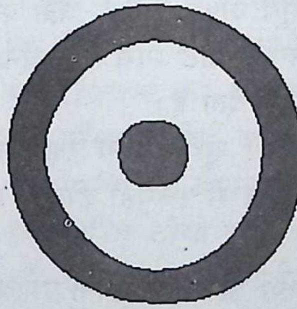

सूर्य को फारसी में **शमश,** अंग्रेजी में SUN कहते हैं। इसका वार **रविवार** है और रंग **ताम्र** (ताँबा) सदृश है। सूर्य **पुरुष** ग्रह है और इसका कारक भाव **पहला** है।

सूर्य ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

सूर्य के लिए चन्द्र, गुरु, मंगल **मित्र** हैं, बुध एवं सूर्य के साथ इसका **सम** सम्बन्ध रहता है और शुक्र व शनि इसके **शत्रु** हैं।

सूर्य को राहु से ग्रहण व केतु से मध्यम सम्बन्ध रहेगा। बुध ग्रह सूर्य के साथ मौन रहेगा।

सूर्य ग्रह का काल, आयु एवं गति

सूर्य का काल 22 दिन, 22 वर्ष, आयु 100 वर्ष, महादशा वर्ष 6, सामान्य चक्र दो, इसका प्रभाव प्रारम्भ में एवं प्रभाव की गति रथ सदृश होती है।

सूर्य की आयु किसी भी ग्रह के साथ होने पर 22 वर्ष होगी। सूर्य राहु के साथ हो तो शून्य वर्ष एवं केतु के साथ हो तो 11 वर्ष होगी।

सूर्य ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

सूर्य **मेष** राशि में **उच्च** का और **तुला** राशि में **नीच** का होता है। यदि सूर्य मेष में हो और उसके सामने सातवें भाव में तुला राशि पर शुक्र, राहु, केतु व शनि ग्रह स्थित हों तो सूर्य उच्च का फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देगा।

सूर्य का प्रभाव 14, 15, 49, 50, 84, 85, 119 व 120वें वर्ष में रहता है। इसी प्रकार सूर्य का पहला चक्र 22-23, दूसरा चक्र 57-58 एवं तीसरा चक्र 92-93 वर्ष में पड़ता है। सूर्य अपने प्रत्येक चक्र के दो वर्षों में पहले आठ मास तक सूर्य का, अगले आठ मास तक चन्द्र का और अगले आठ मास तक मंगल का प्रभाव देता है।

चौथे भाव में स्थित सूर्य रतान्ध होता है। सूर्य अपनी रक्षा के लिए केतु की बलि ले लेता है। सूर्य पाँचवें भाव में स्वगृही होता है। सूर्य सभी ग्रहों में सर्वाधिक बली है।

सूर्य एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर प्रथम खण्ड में अपना प्रभाव (सूर्य का) चार मास तक देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक चन्द्र का प्रभाव देगा और तृतीय खण्ड में अगले चार मास तक मंगल का प्रभाव देगा। सूर्य 22वें दिन व 22वें वर्ष में विशेष प्रभावशाली होता है।

सुप्त सूर्य कब जागेगा ?

पाँचवां भाव सुप्त हो तो उसे सूर्य ग्रह जगायेगा। सूर्य सरकारी

कार्य या सम्बन्धों पर और 22वें वर्ष के उपरान्त जागता है। सूर्य 2, 8, 9 या 24वें वर्ष में अशुभ फल देता है।

सूर्य के शुभाशुभ भाव

सूर्य छठे, सातवें एवं दसवें भाव में अशुभ और पहले, पांचवें, आठवें, नौवें, ग्यारहवें एवं बारहवें भाव में शुभ फल करता है। सूर्य अकेला किसी भाव में स्थित हो तो जातक निज परिश्रम से ही धनी बनता है। सूर्य अशुभ हो तो पहले भाव का भी अशुभ फल मिलेगा। सूर्य का चन्द्र से संबंध हो तो चौथे भाव का अशुभ फल मिलेगा। सूर्य का राहु से संबंध हो तो पाँचवें भाव का अशुभ फल मिलेगा। सूर्य छठे भाव में हो तो लड़के के जन्म के बाद से ही शुभ मिलना प्रारम्भ होगा।

सूर्य के अशुभ होने के लक्षण

सूर्य अशुभ होने पर जातक का शरीर अकड़ जाता है और अत्यन्त कठिनाई से हिलता है। मुख में हर समय थूक आता रहता है। यदि घर पर लाल गाय या भूरी भैंस है तो वह खो जायेगी या मर जायेगी।

सूर्य के सामान्य उपाय

- *प्रत्येक कार्य मीठा खाकर एवं जल पीकर करें।*
- *बहते पानी में गुड़, तांबा या तांबे का सिक्का बहाएँ।*
- *हरिपूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें।*
- *विष्णु की उपासना करें।*
- *रविवार का व्रत रखें।*
- *ताँबा व गेहूँ का दान करें।*
- *माणिक्य अथवा तांबा अनामिका उंगली में धारण करें।*
- *चरित्र ठीक रखें अर्थात् कुकर्म एवं गलत कार्यों से बचें।*
- *ताँबे के दो टुकड़े करके एक टुकड़ा ब्रहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन संभालकर रखें। यदि टुकड़ा चोरी हो जाए या खो जाए तो पुनः ताँबे का टुकड़ा पास में रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।*
- *घर कर मुख्य द्वार पूर्व दिशा में रखें।*

चन्द्र ग्रह और उसका परिचय

चन्द्र हृदय का स्वामी है और सूर्य से प्रकाश लेता है। सूर्य चन्द्र को चाहे कितना क्रोधित होकर आज्ञा दे पर वह शान्ति से सुनकर उसे पूर्ण करता है। चन्द्र का प्रयास यही रहता है कि वह सूर्य के चरणों में

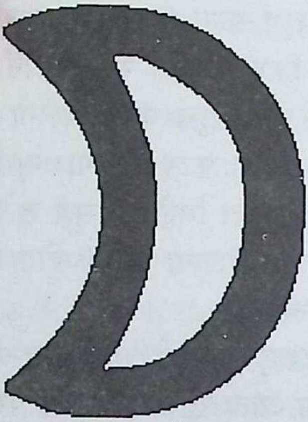

ही रहे। सूर्य की चमक से प्रभावित आँखों (शनि) और मस्तिष्क (बुध) को शान्ति चन्द्र से मिलती है। चाँदी की तरह चमकती चाँदनी रात चन्द्र का शासन क्षेत्र है। यहाँ प्रारम्भ में राहु और अन्त में केतु है, मध्य में शनि इनका रक्षक है। पापी समूह (राहु, केतु, शनि) एक साथ निज जन्मदात्री और जगत् माता के राज्य में प्रत्येक के आराम और माता के दूध में विष मिलाने को तत्पर रहते हैं। अब चाहे दूध (चन्द्र) और विष (पापी ग्रह) एक दूजे में मिल रहे हों, फिर भी सहृदयी चन्द्र (माता) जगत् में समुद्र के जल में सूर्य की छाया अवश्य होगी जिसकी शैतानी हेतु-जगत् की वायु या मानव श्वास का स्वामी गुरु सर्वत्र विद्यमान है।

सूर्योदय से पूर्व ब्रह्मवेला का स्वामी केतु और सूर्यास्त के उपरान्त सांध्यवेला का स्वामी राहु है, जबकि सम्पूर्ण रात्रि का स्वामी शनि है। चन्द्र के प्रभाव में-गुरु, सूर्य चन्द्र तीनों का प्रभाव सम्मिलित है।

आठवें भाव का चन्द्रमा दीर्घायु बनाता है और मृत्यु से रक्षा करता है। **सातवें** भाव का चन्द्रमा धन-सम्पत्ति, अन्न आदि के लिए उत्तम है। **तीसरे** भाव का चन्द्रमा युद्ध के मैदान में विजय श्री दिलाता है। चन्द्र अशुभ या निर्बल होने पर शुक्र के कार्यों व वस्तुओं से लाभ नहीं होता है, अपितु चन्द्र की वस्तुएँ लाभदायक सिद्ध होंगी जबकि उसमें दूध की सफेदी न मिली हो। कहने का तात्पर्य है कि पानी की बर्फ लाभदायी हो, परन्तु दूध की बर्फ हानिप्रद हो।

चन्द्र को फारसी में **कमर,** अंग्रेजी में MOON कहते हैं। इसका वार **सोमवार** है और रंग **सफेद दूध सदृश** है। चन्द्र **स्त्री** ग्रह है और इसका कारक भाव **चौथा** है।

चन्द्र ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

चन्द्र के लिए सूर्य व बुध **मित्र** हैं, शुक्र, शनि, मंगल व गुरु से **सम** सम्बन्ध रखता है। चन्द्र को केतु से ग्रहण व राहु से मध्यम सम्बन्ध रहता है।

चन्द्र ग्रह का काल, आयु एवं गति

चन्द्र का काल 24 दिन, 24 वर्ष, आयु 100 वर्ष, महादशा वर्ष 10, सामान्य चक्र एक, इसका प्रभाव प्रारम्भ में एवं प्रभाव की गति अश्व सदृश होती है।

चन्द्र की आयु किसी भी ग्रह के साथ होने पर 24 वर्ष होगी। चन्द्र, गुरु, बुध, शुक्र, राहु के साथ होने पर आयु बारह वर्ष होगी। चन्द्र शनि के साथ हो तो आयु आठ वर्ष होगी।

चन्द्र ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

चन्द्र वृष राशि में **उच्च** का और वृश्चिक राशि में **नीच** का होता है। बुध, शुक्र छठे या बारहवें भाव में हो तो चन्द्र उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देगा।

चन्द्र का प्रभाव 16, 51, 86 व 121वें वर्ष में रहता है। इसी प्रकार इसका पहला चक्र 24 वर्ष में, दूसरा चक्र 59 वर्ष में और तीसरा 94 वर्ष में होता है।

राहु-केतु चन्द्रमा के साथ किसी भी भाव में कुप्रभाव नहीं देते हैं, पर यह भी आवश्यक नहीं है कि वे शुभ फल भी दें। चन्द्र चौथे भाव में स्वगृही होता है।

चन्द्र अपनी रक्षा के लिए मित्रग्रहों (सूर्य, मंगल, गुरु) की बलि ले लेता है। चन्द्र सूर्य को छोड़कर अन्य ग्रहों से सर्वाधिक बली है।

चन्द्र एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर प्रथम खण्ड में गुरु का प्रभाव चार मास तक देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक सूर्य का प्रभाव और तृतीय खण्ड में अपना प्रभाव (चन्द्र का) चार मास तक देगा।

चन्द्र चौबीसवें दिन व चौबीसवें वर्ष में विशेष प्रभावशाली होता है। सूर्य का चन्द्र से संबंध हो तो चौथे भाव का अशुभ फल मिलता है। चन्द्र के अशुभ होने पर चौथे भाव का भी अशुभ फल मिलता है। चन्द्र का शनि से संबंध हो तो आठवें का अशुभ फल मिलता है। स्त्री ग्रह चन्द्र रात्रि में प्रभावशाली होता है।

सुप्त चन्द्र कब जागेगा ?

दूसरा, चौथा और आठवाँ भाव सुप्त हो तो उसे चन्द्र ग्रह जगायेगा। चन्द्र शिक्षा संबंधी कार्यों पर और चौबीसवें वर्ष के उपरान्त जागता है। चन्द्र पहले या पच्चीसवें वर्ष में अशुभ फल देता है।

चन्द्र के शुभाशुभ भाव

चन्द्र छठे, आठवें, दसवें, ग्यारहवें एवं बारहवें भाव में अशुभ और पहले दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, सातवें एवं नौवें भाव में शुभ फल करता है।

चन्द्र अकेला किसी भाव में हो तो जातक दया, नम्र व सद्व्यवहार से प्राप्त दण्ड (फाँसी) तक क्षमा करा लेता है और कुटम्ब को नष्ट नहीं होने देता है।

बारहवें भाव में चन्द्र ग्रह स्थित हो तो उसका प्रभाव केतु पर पड़ेगा और हानि ही करेगा।

चन्द्र के अशुभ होने के लक्षण

चन्द्र अशुभ होने पर घरेलू दुधारू पशु या घोड़े की मृत्यु हो जाती है। घर का नल, कुआँ व तालाब सूख जाता है। महसूस करने की शक्ति का ह्रास हो जाता है।

चन्द्र के सामान्य उपाय

- *दूसरों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेने से चन्द्र की अशुभता दूर होती है।*
- *दूध या पानी का भरा बर्तन सिरहाने रखकर सोएँ और अगले दिन कीकर की जड़ में सारा जल डाल दें।*
- *शिव की उपासना करें।*
- *सोमवार का व्रत रखें।*
- *माता, सास, नानी एवं मौसी का आशीर्वाद लें।*
- *चावल, दूध एवं चांदी का दान करें।*
- *पलंग के पायों में चांदी की कील ठोकें।*
- *मोती अथवा चांदी तर्जनी उंगली में धारण करें।*
- *पूर्णिमा में गंगास्नान करें।*
- *चावल, दूध, व पानी या दो मोती या चांदी के दो टुकड़े*

लेकर एक मोती या चांदी का टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा मोती या चांदी का टुकड़ा आजीवन संभाल कर रखें। यदि मोती या चांदी का टुकड़ा चोरी हो जाए या खो जाए तो पुनः मोती या चांदी का टुकड़ा पास में रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

मंगल ग्रह और उसका परिचय

मंगल सेनापति की तरह है। मंगल शुभ हो तो साहसी, शस्त्रधारी और सैन्य अधिकारी बनाता है। मंगल अशुभ हो तो डाकू या बदमाश बनाता है। मंगल, शनि से शत्रुता करता है जबकि शनि ऐसा नहीं करता

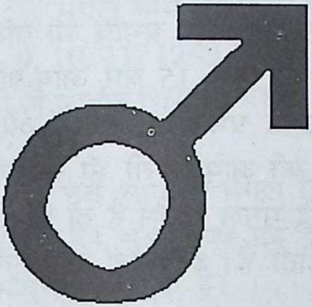

है। मंगल सच्चा और सीधा चलने वाला ग्रह है। जब कभी मंगल को बुराई की ओर जाने की प्रेरणा मिलती है तो यह पीछे नहीं हटता है और पूर्ण शक्ति व प्रयासों से उस ओर बढ़ जाता है। यदि मंगल दसवें भाव में शनि के घर में अकेला हो या शनि के साथ हो तो राजा तुल्य होगा। मंगल राहु को देखे तो राहु का अशुभ प्रभाव नहीं होता है परन्तु राहु मंगल को देखे तो बाजु, पेट या रक्त विकार से शरीर के दाएँ भाग में अत्यन्त कष्ट होता है। चन्द्र का उपाय करने से राहत मिलती है। मंगल-केतु परस्पर युति करें या संबंध बनाएं तो दोनों का अशुभ फल होता है। मंगल शनि को देखे तो अपना अशुभ प्रभाव हो पर शनि का शुभ प्रभाव हो। यदि शनि मंगल को देखे तो दोनों ग्रहों का शुभ फल होता है।

जन्मकुण्डली में सूर्य-बुध की युति हो तो मंगल का शुभ फल होता है। सूर्य-शनि की युति हो तो मंगल का अशुभ फल मिलता है।

शरीर के मध्य में नाभि के आस-पास का हिस्सा मंगल का क्षेत्र है और सूर्य-रश्मियों का सीधा प्रभाव यहाँ पड़ता है अर्थात् कुण्डली के चौथे भाव के ग्रह मंगल की शुभता और अशुभता बताएंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि चौथे भाव में बैठे हुए ग्रहों का प्रभाव जैसा होगा वैसी

ही प्रकृति मंगल की होगी। जन्मकुण्डली में अकेला मंगल सिंह सदृश होगा जबकि अशुभ मंगल मृग-सदृश डरपोक होगा।

मंगल को फारसी में **मुरेयख** अंग्रेजी में MARS कहते हैं। इसका वार **मंगलवार** है और रंग **रक्त-सदृश**-है। मंगल **पुरुष ग्रह** है और इसका कारक भाव **तीसरा व आठवाँ** है।

मंगल ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

मंगल के लिए सूर्य, चन्द्र व गुरु **मित्र** हैं, बुध व केतु **शत्रु** हैं एवं राहु व शनि **सम** हैं। राहु मंगल के साथ मौन रहता है।

मंगल ग्रह का काल, आयु एवं गति

शुभ मंगल का काल 24 दिन, 13 वर्ष, आयु 90 वर्ष, महादशा वर्ष 3, सामान्य चक्र 2 और इसका प्रभाव प्रारम्भ में व प्रभाव की गति चीते की तरह होती है। मंगल अशुभ हो तो 32 दिन, 15 वर्ष, आयु 90 वर्ष, महादशा 4 वर्ष, सामान्य चक्र 4 इसका प्रभाव प्रारम्भ में और प्रभाव की गति मृग-सदृश होती है। मंगल की आयु किसी भी ग्रह के साथ शुभ होने पर 13 वर्ष होती है और यदि मंगल अशुभ है तो किसी भी ग्रह के साथ होने पर आयु 15 वर्ष होती है। इन दोनों की कुल आयु का योग 28 वर्ष होता है।

मंगल ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

मंगल मकर राशि में **उच्च** का और कर्क राशि में **नीच** का होता है। बुध या केतु दूसरे भाव में हो तो मंगल उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देगा। मंगल पहले और आठवें भाव में स्वगृही होता है।

मंगल का प्रभाव 20 से 25, 55 से 60, 90 से 95 और 125 से 130वें वर्ष में रहता है। इसी प्रकार इसका पहला चक्र 28 से 33 वर्ष में, दूसरा चक्र 63 से 68 वर्ष में और तीसरा चक्र 98 से 103वें वर्ष में होता है।

मंगल के अशुभ होने पर पहले और आठवें भाव का फल भी अशुभ मिलता है। मंगल व शनि का संबंध हो तो पहले व तीसरे भाव का भी अशुभ फल मिलता है। अशुभ मंगल अपनी रक्षा हेतु अपनी बाधाएँ केतु पर डालता है अर्थात् संतान को कष्ट देता है। सूर्य छठें भाव में हो और मंगल दसवें भाव में हो तो लड़के पर लड़के मरते जाएँ या भाई भतीजे को मरवा देगा।

मंगल एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर प्रथम खण्ड में चार मास

तक अपना (मंगल) प्रभाव देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक शनि का प्रभाव और तीसरे खण्ड में अगले चार मास तक शुक्र का प्रभाव देगा।

मंगल शुभ हो तो चौबीसवें दिन व तेरहवें वर्ष में और मंगल अशुभ हो तो बत्तीसवें दिन व पन्द्रहवें वर्ष में विशेष प्रभावशाली होता है।

पुरुष ग्रह मंगल सूर्य और चन्द्र को छोड़कर अन्य ग्रहों से सर्वाधिक बली है और दिन में प्रभावशाली होता है।

सुप्त मंगल कब जागेगा ?

पहला भाव सुप्त हो तो उसे मंगल ग्रह जगायेगा, मंगल औरत सम्बन्धी कार्यों पर अट्ठाइसवें वर्ष के उपरान्त जागता है। मंगल छठे या चौंतीसवें वर्ष में अशुभ फल देता है।

मंगल के शुभाशुभ भाव

मंगल चौथे व आठवें भाव में अशुभ और शेष भावों (1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11, 12वें) में शुभ फल करता है। मंगल किसी भाव में अकेला हो तो जातक चिड़िया घर का कैदी या बकरियों में पलने वाले शेर की तरह होता है।

छठें भाव में मंगल स्थित हो तो उसका प्रभाव सूर्य व केतु पर पड़ता है। सूर्य उच्च ग्रह की तरह फल देता है जबकि केतु हानि या अशुभ फल देता है।

मंगल के अशुभ होने के लक्षण

मंगल अशुभ होने पर बच्चे जन्मते ही मर जाते हैं। आँख कानी हो जाती है, शरीर के जोड़ काम नहीं करते, रक्त की कमी हो जाती है और शक्ति होने पर भी संतान नहीं होती है।

मंगल के सामान्य उपाय

- *सफेद सुरमा नेत्रों में लगाने से राहत मिलती है।*
- *तांबा अथवा मूंगा अनामिका उंगली में धारण करें।*
- *तन्दूर में लगी मीठी रोटी बाँटें।*
- *बहते पानी में रेवड़ियाँ, बताशे, शहद व सिंदूर बहाएँ।*
- *गायत्री मंत्र का जाप करें।*
- *हनुमानजी की उपासना करें।*

- मसूर, मिठाई अथवा मीठा भोजन का दान करें।
- भाई की सेवा करें एवं मृगछाला पर सोयें।
- मंगलवार का व्रत रखें एवं हनुमानजी को सिंदूर का चोला चढ़ायें।
- लाल पत्थर के दो टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन संभालकर रखें। यदि पत्थर का टुकड़ा चोरी हो जाए या खो जाए तो पुनः पत्थर का टुकड़ा पास में रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

बुध ग्रह और उसका परिचय

बुध शक्तिशाली वनस्पतियों का राजा है। वह बुद्धि के कार्य, व्यापार दस्तकारी आदि पर अपना विशेष प्रभाव डालता है। इस ग्रह का प्रभाव गर्दन और कन्धों पर विशेष रूप से पड़ता है।

बुध का गुरु से संबंध राख सदृश, सूर्य से संबंध पारे जैसा, चन्द्र से संबंध माँद में पानी की तरह, शुक्र से संबंध दही सदृश, मंगल से संबंध शेर के दांत सदृश, शनि से संबंध कलई सदृश, राहु से संबंध हाथी की सूँड़ सदृश और केतु से संबंध कुत्ते की पूँछ सदृश है।

बुध को फारसी में **अतारद** और अंग्रेजी में MERCURY कहते हैं। इसका वार **बुधवार** है और रंग हरा है। बुध **नपुंसक** ग्रह है और इसका कारक भाव सातवाँ है।

बुध ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

बुध के लिये सूर्य, शुक्र व राहु मित्र हैं, चन्द्र शत्रु है और शनि, केतु, मंगल व गुरु सम हैं।

बुध ग्रह का काल, आयु एवं गति

बुध का काल अड़सठ दिन, चौंतीस वर्ष, आयु अस्सी वर्ष, महादशा सत्तरह वर्ष, सामान्य चक्र दो, इसका प्रभाव सदैव और प्रभाव की गति मेढ़ा सदृश होती है। बुध की आयु किसी भी ग्रह के साथ होने पर चौंतीस वर्ष होगी। बुध सूर्य, मंगल के साथ हो तो आयु सत्तरह वर्ष होगी।

बुध ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

बुध कन्या राशि में उच्च और मीन राशि में नीच का होता है। चन्द्र बारहवें भाव में हो तो बुध ग्रह उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देता है।

बुध का प्रभाव 26, 27, 61, 62, 96, 97, 131, 132वें वर्ष में रहता है। इसी प्रकार इसका पहला चक्र 34-35 वर्ष में, दूसरा चक्र 69-70 वर्ष में और तीसरा चक्र 104-105वें वर्ष में होता है।

बुध तीसरे और छठें भाव में स्वगृही होती है। बुध ने अपनी रक्षा के लिए शुक्र से मित्रता कर रखी है और अपनी समस्त परेशानियाँ शुक्र पर डाल देता है।

बुध एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर प्रथम खण्ड में चन्द्र का प्रभाव चार मास तक देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक मंगल का प्रभाव और तृतीय खण्ड में अगले चार मास तक अपना प्रभाव (बुध का) देगा।

चन्द्र अड़सठवें दिन व चौंतीसवें वर्ष में विशेष प्रभावशाली होता है। बुध सूर्य, चन्द्र व मंगल को छोड़कर अन्य ग्रहों से सर्वाधिक बली है।

नपुंसक ग्रह बुध प्रातः और सायं के समय प्रभावशाली होता है। जन्मकुण्डली में बुध अशुभ हो तो पहले, तीसरे और छठे भाव का भी अशुभ फल मिलेगा।

सुप्त बुध कब जागेगा ?

तीसरा भाव सुप्त हो तो उसे बुध ग्रह जगायेगा। बुध व्यापार, बहन या लड़की के विवाह पर और चौंतीसवें वर्ष के उपरान्त जागता है। बुध दूसरे या छत्तीसवें वर्ष में अशुभ फल देता है।

बुध के शुभाशुभ भाव

बुध 3, 8, 9, 10 11, 12वें भाव में अशुभ होगा पर सदैव अशुभ न होगा। बुध 1, 2, 4, 5, 6, व 7वें भाव में शुभ फल करता है।

बुध राहु के बारहवें में नीच का होता है क्योंकि यह भाव उसके शत्रु ग्रह गुरु का है। जब बुध केतु के भाव छठे में हो तो उच्च का होता है क्योंकि यह राशि बुध की अपनी है। बुध व केतु बराबर के ग्रह हैं और दोनों ही शुक्र के मित्र हैं। बुध पर केतु और शुक्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

बुध अकेला किसी भी भाव में हो तो जातक लालची एवं देश-विदेश में व्यर्थ भ्रमण करने वाला होता है।

दूसरे भाव में बुध स्थित हो तो उसका प्रभाव गुरु पर पड़ेगा प्रत्येक प्रकार से हानि करेगा। चौथे भाव में बुध स्थित हो तो उस प्रभाव चन्द्र पर पड़ेगा और प्रत्येक प्रकार से हानि करेगा।

बुध के अशुभ होने के लक्षण

बुध अशुभ होने पर दांत झड़ जाते हैं। सूंघने की शक्ति सम हो जाती है या क्षीण हो जाती है। संभोग शक्ति क्षीण हो जाती वाणी दोष आ जाने के कारण बात करते समय हिचकिचाहट अ हकलाहट का सामना करना पड़ता है।

बुध के सामान्य उपाय

- *बुधवार का व्रत रखें।*
- *बकरी अथवा तोते को पालें अथवा उसकी सेवा करें।*
- *हिजड़ो को हरे वस्त्र एवं हरी चूड़ियां दान करें।*
- *बेटी, बहन, बुआ, मौसी और साली का आशीर्वाद लें*
- *पन्ना, हरा ऑनेक्स अथवा तुरमुली कनिष्ठिका उंगली धारण करें।*
- *दांत साफ रखें और नाक छिदवायें।*
- *अपनी खुराक या भोजन में से एक टुकड़ा गाय को, एक टुक कुत्ते को और एक टुकड़ा कौवे को खाने के लिए दें।*
- *ताँबें की पत्तर में छेद करके बहते पानी में बहा दें।*
- *दुर्गा उपासना व दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।*
- *साबुत हरे मूंग का दान करें।*
- *दो सीप या दो हीरे लेकर एक को बहते पानी में बहा और एक को आजीवन अपने पास रखें। यदि सीप हीरा चोरी चला जाए या खो जाए तो पुनः पास में रख दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।*

गुरु ग्रह और उसका परिचय

गुरु को ब्रह्माण्ड और मनुष्य के अन्दर-बाहर व्यापत हवा कहा है। यह हवा मनुष्य के जन्म लेने और मर जाने का बहाना मात्र है। सभी ग्रहों का गुरु है। यह अच्छी-बुरी दोनों स्थितियों का स्वामी है।

24

भाव में गुरु शुभ स्थिति में राजा सदृश और अशुभ स्थिति में निर्धन होते हुए भी चमत्कारिक फकीर होगा। गुरु पुरुष ग्रह के साथ या उनसे दृष्ट होने पर तांबे से स्वर्ण सदृश हो जायेगा। समस्त ग्रहों की मिलनसारिता या दृष्टि की शक्ति गुरु के कारण होती है। पाप ग्रह अशुभ होने पर गुरु स्वर्ण की अपेक्षा पीतल हो जाता है या हवा की जगह जहरीली गैस हो जाता है। राहु शुभ होने पर गुरु का कुप्रभाव नहीं होता है। अकेला गुरु कभी अशुभ प्रभाव नहीं देता है। गुरु हवा है तो शनि को पहाड़ समझें। मानसून की हवा जब भी पहाड़ से टकरायेगी लाभप्रद वर्षा होगी। परन्तु किसी कारण वायु उल्टी दिशा में चल पड़े तो सब-कुछ तबाह कर देगी।

गुरु को फारसी में **मुश्तरी** और अंग्रेजी में JUPITER कहते हैं। इसका वार **गुरुवार** है और रंग **पीला** है। गुरु **पुरुष** ग्रह है और इसका कारक भाव **2, 5, व 9वाँ** है।

गुरु ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

गुरु के लिए सूर्य, मंगल व चन्द्र **मित्र** है, शुक्र व बुध **शत्रु** हैं और राहु, केतु व शनि **सम** है।

गुरु ग्रह का काल, आयु एवं गति

गुरु का काल बत्तीस दिन, सोलह वर्ष, आयु पचहत्तर वर्ष, महादशा वर्ष सोलह, सामान्य चक्र छह, इसका प्रभाव मध्य में और प्रभाव की गति बब्बर शेर सदृश होती है। गुरु की आयु किसी भी ग्रह के साथ सोलह वर्ष है। गुरु का प्रभाव 8 से 13, 43 से 48, 78 से 83 व 113 से 118 वर्ष में रहता है।

इसी प्रकार इसका पहला चक्र 16 वर्ष से 21 वर्ष में, दूसरा चक्र 51 से 56 वर्ष में और तीसरा चक्र 86 से 91 वर्ष में होता है।

गुरु ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

गुरु कर्क राशि में **उच्च** और मकर राशि में **नीच** का होता है। शुक्र या बुध दसवें भाव में हो तो गुरु उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देता है। गुरु ग्रह दिन में प्रभावशाली होता है।

गुरु नौवें और बारहवें भाव में स्वगृही होता है।

गुरु अपनी रक्षा हेतु साथी ग्रह केतु की बलि ले लेता है। मान
गुरु पांचवें भाव में और केतु किसी अन्य भाव में हो तो गुरु की
में केतु छठे भाव का फल देगा।

गुरु सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध को छोड़कर अन्य ग्रहों में सर्वाधि
बली है।

गुरु एक वर्ष में तीन खण्ड करने पर प्रथम खण्ड में केतु
प्रभाव चार मास तक देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक अप
(गुरु) प्रभाव और तृतीय खण्ड में अगले चार मास तक सूर्य का प्रभ
देगा। गुरु बत्तीसवें दिन और छिहत्तरवें वर्ष में विशेष प्रभावशाली हो
है। गुरु जन्म कुण्डली में अशुभ हो तो 2, 4, 5, 9, 11, 12वें भाव
भी अशुभ फल देगा।

गुरु छठे भाव में हो तो पिता को श्वास रोग (दमा) हो और स्व
खो जाए।

गुरु सातवें भाव में हो तो पिता से वैचारिक मतभेद रहेंगे अ
निभेगी भी नहीं। यदि ऐसा हो तो किसी को वस्त्र कदापि दान में न
यदि देंगे तो अपने वस्त्र भी खो बैठेंगे अर्थात् वस्त्रहीन होने की स्थि
आ जायेगी।

सुप्त गुरु कब जागेगा ?

ग्यारहवाँ भाव सुप्त हो तो उसे गुरु ग्रह जगायेगा। गुरु साम
व्यापार करते समय, सोलह वर्ष के उपरान्त जागता है। गुरु छठे
बाईसवें वर्ष में अशुभ फल देता है।

गुरु के शुभाशुभ भाव

गुरु 6,7, 10वें भाव में अशुभ होगा। अशुभ गुरु को केतु
सहायता मिलती है। गुरु 1,2, 3, 4, 5, 8, 9, 12वें भाव में शुभ फ
करता है। ग्यारहवें भाव में गुरु स्थित हो तो उसका प्रभाव राहु
पड़ेगा और हानि करेगा। ऐसे में बुध भी अशुभ फल देगा। गुरु अके
किसी भी भाव में स्थित हो तो अशुभ प्रभाव नहीं देता है।

गुरु के अशुभ होने के लक्षण

गुरु अशुभ होने पर सिर पर चोटी के स्थान के बाल उड़ जायें। ग

में माला पहनने की आदत बन जाए। सोना खो जाए या चोरी चला जाए। शिक्षा बिना कारण रुक जाए। अपयश मिले या व्यर्थ की अफवाहें उड़ें।

गुरु के सामान्य उपाय

- *गुरुवार का व्रत रखें।*
- *माथे या पगड़ी पर पीला तिलक लगाएं। केसर का तिलक भी लगा सकते हैं।*
- *कोई भी कार्य शुरू करने से पूर्व नाक अवश्य साफ करें। नाक का पानी स्वतः शुष्क हो जाना सहायक है।*
- *केसर खाएं या नाभि व जीभ पर लगाना शुभ है।*
- *हरि पूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें। ब्रह्मा की उपासना लाभदायी है।*
- *पीपल की जड़ में जल चढ़ाएं।*
- *दो स्वर्ण के टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन संभालकर रखें। पास रक्खा टुकड़ा खो जाए या चोरी चला जाए तो पुनः स्वर्ण का टुकड़ा रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।*
- *पीले फूलों वाले पौधे गृह-वाटिका में लगाएं।*
- *गरुड़ पुराण का पाठ करें।*
- *साधु अथवा ब्राह्मणों की सेवा करें व उनका आशीर्वाद लें।*
- *पुखराज अथवा सुनहला तर्जनी उंगली में धारण करें।*
- *चने की दाल व स्वर्ण का दान भी लाभकारी है।*

शुक्र ग्रह और उसका परिचय

शुक्र प्रेम में दो से एक हो जाने की शक्ति को कहते हैं। शुक्र से सब-कुछ बना बनाया होगा। स्त्री की कुण्डली में शुक्र का संबंध पति से और पुरुष की कुण्डली में शुक्र का संबंध पत्नी से होगा। शुक्र अकेला स्थित हो तो कदापि कुप्रभाव नहीं देगा और पारिवारिक सुख में किसी अन्य का भी बुरा नहीं कर सकेगा।

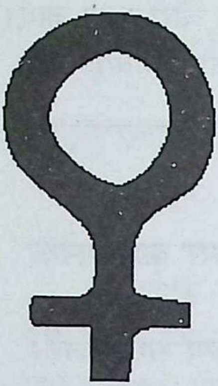

शुक्र और राहु का सम्बन्ध हो तो लक्ष्मी और पारिवारिक सुख समाप्त हो जाता है। शुक्र शत्रु राशि में हो और उसके बराबर वाले भाव में राहु स्थित हो तो शुक्र-राहु की युति या संबंध वाला फल ही होगा। सातवें भाव में शुक्र के साथ जो ग्रह हो, इसका मित्र बन जाता है। शुक्र-चन्द्र आमने-सामने हों तो माता की आंखों पर कुप्रभाव पड़ता है। प्रतिदिन अपनी खुराक में से गाय की रोटी निकालने से नेत्र रोग में माता को लाभ मिलता है।

शुक्र को फारसी में **जुहरा** और अंग्रेजी में VENUS कहते हैं। इसका वार **शुक्रवार** है और रंग दही की तरह **सफेद** है। शुक्र स्त्री ग्रह है और इसका **कारक भाव** सातवां है।

शुक्र ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

शुक्र के लिए शनि, बुध व केतु **मित्र** हैं, सूर्य, चन्द्र व राहु शत्रु हैं एवं मंगल व गुरु **सम** हैं। शुक्र व गुरु का शत्रु जैसा संबंध है।

शुक्र ग्रह का काल, आयु एवं गति

शुक्र का काल पचास दिन, पच्चीस वर्ष, आयु पिच्चासी वर्ष महादशा वर्ष बीस, सामान्य चक्र तीन, इसका प्रभाव मध्य में और प्रभाव की गति बैल सदृश होती है।

शुक्र की किसी भी ग्रह के साथ आयु 25 वर्ष होगी। शुक्र गुरु के साथ हो तो धन के लिए आयु 60 वर्ष होगी। शुक्र सूर्य के साथ हो तो आयु 34 वर्ष होगी। शुक्र शुभ मंगल के साथ हो तो आयु 8 वर्ष होगी।

शुक्र ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

शुक्र मीन राशि में **उच्च** और कन्या राशि में **नीच** का होता है। सूर्य, राहु या चन्द्र दूसरे भाव में हो तो शुक्र ग्रह उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देता है।

शुक्र दूसरे और सातवें भाव में स्वगृही होता है।

शुक्र का प्रभाव 17 से 19, 52 से 54, 87 से 89, 122 से 124वें जीवन वर्ष में रहता है। इसी प्रकार इसका पहला चक्र 25 से 27 वर्ष में, दूसरा चक्र 60 से.62वें वर्ष में और तीसरा चक्र 95 से 97वें वर्ष में रहता है।

शुक्र सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु को छोड़कर अन्य ग्रहों से सर्वाधिक बली है।

शुक्र स्त्री स्वभाव का ग्रह है। वह अपनी समस्त बाधाएं निज रक्षा के लिए माता पर डाल देता है। चन्द्र-शुक्र किसी न किसी तरह परस्पर शत्रु हो तो माता अन्धी हो जाती है।

शुक्र एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर प्रथम खण्ड में चार मास तक मंगल का, द्वितीय खण्ड में अर्थात् चार मास तक अपना (शुक्र का) प्रभाव और तीसरे खण्ड में अगले चार मास तक बुध ग्रह का प्रभाव देगा।

सुप्त शुक्र कब जागेगा ?

सातवाँ भाव सुप्त हो तो उसे शुक्र ग्रह जगायेगा। शुक्र विवाहोपरान्त 25वें वर्ष से जागता है। शुक्र 35 या 28 वें वर्ष में अशुभ फल देता है।

शुक्र के शुभाशुभ भाव

शुक्र 1, 6, 9वें भाव में अशुभ फल देगा। शुक्र 2, 3, 4, 5, 7, 8, 10, 11, 12वें भाव में शुभ फल करता है।

शुक्र अकेला हो तो कभी अशुभ नहीं होगा। शुक्र जब भी अशुभ होगा किसी न किसी ग्रह के साथ संबंध होने पर ही होगा।

शुक्र के अशुभ होने के लक्षण

शुक्र अशुभ होने पर अंगूठा बिना रोग के बेकार हो जाए। त्वचा में विकार हो जाए। स्वप्न-दोष बार-बार होता रहे। यदि ऐसा हो तो कपड़ों को साफ-सलीके से व ढंग से पहनें।

शुक्र के सामान्य उपाय

- *शुक्रवार का व्रत रखें।*
- *अपने भोजन में से गाय को कुछ भाग दें। ऐसा करेंगे तो शुक्र की सहायता होगी व धान्य सुख भी बढ़ेगा।*
- *प्रतिदिन अपने भोजन में से एक टुकड़ा कुत्ते के लिए, एक टुकड़ा गाय के लिए और एक टुकड़ा कौवे के लिए निकालें।*
- *हीरा, स्फटिक अथवा सफेद जिरकन मध्यमिका उंगली में धारण करें।*

- गोदान करें या ज्वार व चरी का दान करें।
- दूजों का पालन-पोषण करें।
- लक्ष्मी की उपासना करें।
- सफेद एवं स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- सुगन्धित पदार्थों का प्रयोग करें।
- घी, दही, कर्पूर व मोती का दान करें।
- दो मोती लेकर एक मोती पानी में बहा दें और एक मोती को आजीवन अपने पास में रखें यदि पास रखा मोती खो जाए या चोरी हो जाए तो पुनः मोती लाकर रखें। दुबारा पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

शनि ग्रह और उसका परिचय

शनि के दो दृष्टि कोण हैं—गृहस्थी छोड़कर सन्यासी हो जाना या चतुरता से धन कमाना। शुभ शनि गुरु के कारक भावों (1, 2, 5, 9, 12) में स्थित होकर कभी हानि या अशुभ प्रभाव नहीं करता है। शनि का अभिकर्त्ता

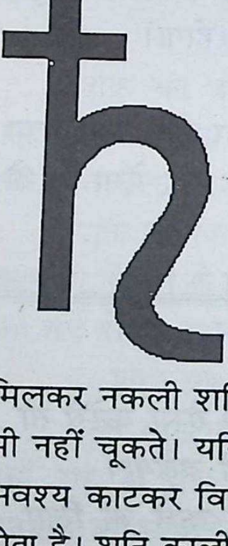

(Agent) केतु है जोकि उसकी नाव का नाविक है। शुभ शनि दस, उन्नीस व सैंतीसवें वर्ष में शुभ फल देगा। यदि शनि से पूर्व केतु हो तो शनि इच्छाधारी सर्प की तरह सहायता करता है। यदि शनि सर्प है तो राहु उसका सिर और केतु उसकी पूँछ होगी। गुरु के भावों में स्थित शनि वैद्य की तरह होगा।

शनि अकेला हो तो बच्चों को विष नहीं देता। यदि गुरु-शुक्र मिलकर नकली शनि या मंगल-बुध मिलकर नकली शनि बनकर दो सर्प हो जाएँ तो बच्चों को विष देने में भी नहीं चूकते। यदि शनि पाँचवे भाव में या बुध-राहु एक साथ हों तो अवश्य काटकर विष देता है। अशुभ समय में शनि का अभिकर्त्ता राहु होता है। शनि काली वस्तुओं पर सदैव अशुभ प्रभाव डालता है। राहु-केतु किसी भी रूप में शनि से मिलते हैं तो शनि के पापत्त्व में वृद्धि करते हैं। ऐसे में शनि नौवें, अट्ठारहवें, सत्ताईसवें, छत्तीसवें वर्ष में अधिक हानि पहुँचाता है। चन्द्र-राहु की युति बारहवें भाव में हो तो शनि कैसी भी स्थिति में हो अशुभ फल ही देगा।

यह जान लें कि सूर्य, मंगल व गुरु के साथ शनि (जब दो से अधिक पुरुष ग्रह हों) वश में आ जाता है पर अपना विष नहीं उगल पाता। परन्तु शत्रु ग्रह प्रभाव बढ़ाते जाएँ तो भी अशुभता बढ़ जाती है।

शनि की अशुभता शनि की वस्तुओं के दान देने से कम होती है। बादाम वितरित करना, साधुओं या निर्धनों को अंगीठी, चिमटा, तवा देना या कम से कम 100 मजदूरों को पेट भरकर भोजन कराना चाहिए। शनि के आगे या पीछे राहु या केतु हो तो उसका भी अशुभ प्रभाव होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शनि क्रमशः 1 से 12 तक के भाव में कहीं बैठा हो और राहु या केतु क्रमशः 12, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11वें भाव में स्थित हो तो अशुभ प्रभाव क्रमशः 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12 भाव में भी होगा।

शनि का स्त्री ग्रहों से संबंध होने पर वह केन्द्र भावों (1, 4, 7, 10) में अपने अभिकर्त्ता राहु-केतु का अशुभ प्रभाव देता है। यदि स्त्री ग्रहों के साथ उसके शत्रु ग्रह भी स्थित हों तो शनि स्त्री ग्रहों को तो छोड़ देगा पर शत्रु ग्रहों को मार देगा। गर्भवती स्त्री के सम्मुख शनि अंधा होगा, उस पर कभी आक्रमण नहीं करेगा।

शनि पहले भाव में स्थित हो तो सर्प व मंगल को विष देगा, इसी प्रकार शनि तीसरे हो तो मंगल को विष देगा, शनि चौथे हो तो चन्द्र को विष देगा, शनि पांचवे हो तो सूर्य को एवं 8वें हो तो मंगल को विष देगा।

यदि सूर्य छिपकर अत्याचार करे तो शनि दिन-दहाड़े उसकी हत्या कर देता है। गुरु के भावों में स्थित शनि अशुभ फल नहीं कर पाता है जबकि गुरु शनि के भावों में अशुभ फल देता है। मंगल शनि के भाव में अकेला हो तो राजा बनाता है। पाचवे भाव में स्थित शनि बच्चों पर भारी होता है। तीसरे भाव में शनि नकद धन से दूर रखता है। ग्याहरवें भाव में स्थित सूर्य धार्मिक होता है। शुक्र ने शनि से आँख उधार ले रखी हैं, इसीलिए सातवें भाव में उच्च का होता है।

बारहवें भाव में शनि सबका भला करता है। छठे भाव में स्थित शनि खोटे सिक्के की भाँति कभी न कभी काम आ जाता है। शनि राहु को देखे तो अशुभ हो परन्तु राहु का नीला थोथा शनिं के लोहे पर लगे तो सदैव ताँबा (सूर्य) बन जाए।

पापी ग्रहों (राहु, केतु, शनि) ने सांसारिक पापियों को सुपथ पर लाने के लिये अपनी पंचायत बना रखी है। इसीलिए गुरु ने जो सबका गुरु है शनि के भाव (11वें) में धर्म अदालत स्थापित कर रखी है। जहाँ पर शनि माता के दूध की सौगन्ध खाकर गुरु को वचन देकर राहु-केतु की गवाही पर न्याय करता है।

शनि को फारसी में **जुहल** और अंग्रेजी में SATURN कहते हैं। इसका वार **शनिवार** है और रंग **काला** है। शनि **नपुंसक** ग्रह है और इसका **कारक** भाव आठवाँ एवं दसवाँ है।

शनि ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

शनि के लिए बुध, शुक्र व राहु **मित्र** हैं, सूर्य, चन्द्र व मंगल शत्रु हैं और केतु व गुरु **सम** हैं।

शनि ग्रह का काल, आयु एवं गति

शनि का काल बहत्तर दिन, छत्तीस वर्ष, आयु नव्बे वर्ष, महादशा वर्ष उन्नीस, सामान्य चक्र छह, इसका प्रभाव कभी भी और प्रभाव की गति मछली सदृश होती है। शनि की आयु किसी भी ग्रह के साथ छत्तीस वर्ष होगी। शनि गुरु के साथ हो तो पिता के लिए आयु 18 वर्ष और धन हेतु 17 वर्ष होगी। शनि, सूर्य के साथ हो तो आयु 24 वर्ष होगी। इसी प्रकार बुध के साथ शनि हो तो आयु 36 वर्ष होगी।

शनि ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

शनि तुला राशि में **उच्च**, और मेष राशि में **नीच** का होता है। सूर्य, मंगल पहले भाव में हो तो शनि उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देता है।

शनि का प्रभाव 28, 29, 30, 31, 32, 33, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 133, 134, 135, 136, 137, 138वें वर्ष में रहता है।

शनि का पहला चक्र 1 से 6 वर्ष में, दूसरा चक्र 36 से 41वें वर्ष में, तीसरा चक्र 71 से 76वें वर्ष में और चौथा चक्र 106 से 112वें वर्ष में होता है।

शनि दसबें और ग्यारहवें भाव में स्वगृही होता है।

शनि ने अपनी रक्षा के लिए अपने अभिकर्त्ता राहु-केतु बना रखे

है। शनि की रक्षा के लिए राहु-केतु किसी भी ग्रह की तुरन्त बलि ले लेते हैं। राहु-केतु बनावटी शुक्र हैं।

जब भी शनि को सूर्य से खतरा होता है। राहु-केतु तुरन्त शुक्र की बलि ले लेता है। सूर्य और शनि की शत्रुता में शुक्र अर्थात् स्त्री मरती है। सूर्य छठे हो और शनि 12वें हो तो स्त्री पर स्त्री मरती जाती हैं।

शनि सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र को छोड़कर अन्य ग्रहों अर्थात् राहु-केतु से सर्वाधिक बली है।

शनि अशुभ हो तो पहले, तीसरे, आठवें, दसवें, ग्यारहवें भाव का भी अशुभ फल देता है। नपुंसक ग्रह शनि प्रातः व सायं के समय विशेष प्रभावशाली होता है।

शनि (एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर) प्रथम खण्ड में राहु का प्रभाव चार मास तक देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक बुध का प्रभाव और तृतीय खण्ड में अपना प्रभाव (शनि) चार मास तक देगा। शनि 72वें दिन व 36वें वर्ष में विशेष प्रभावशाली होता है।

सुप्त शनि कब जागेगा ?

नौवां व दसवां भाव सुप्त हो तो उसे शनि ग्रह जगायेगा। शनि मकान (गृह) संबंधी कार्यों पर और छत्तीसवें वर्ष के उपरान्त जागता है। शनि तीसरे या अट्ठाईसवें वर्ष में अशुभ फल देता है।

शनि के शुभाशुभ भाव

शनि 1, 4, 5, 6ठे भाव में अशुभ फल देगा और 3, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12वें भाव में शुभ फल देगा।

शनि अकेला हो तो सूर्य के इकलौते साथी बुध की तरह कार्य करेगा।

शनि के अशुभ होने के लक्षण

शनि अशुभ होने पर मकान गिर जाए, शरीर के बाल झड़ जाएँ विशेषकर पलकों एवं भौहों के, भैंस मर जाए, आग लग जाए।

शनि के सामान्य उपाय

- *शनिवार का व्रत रखें।*
- *कीकर की दांतुन करें।*

- तैंतालिस दिन तक कौओं को रोटी डालें।
- अपने भोजन से गाय, कुत्ता एवं कौवे को एक-एक टुकड़ा दें।
- शनिवार को तेल में छाया देखकर तेल दान करें।
- राजा या बड़ों की उपासना करें।
- लोहा या काले उड़द का दान करें।
- दो लोहे के टुकड़े या काले नमक के टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन अपने पास संभालकर रखें। यदि लोहा या काले नमक का टुकड़ा खो जाए या चोरी चला जाए तो पुनः लोहे या काले नमक का टुकड़ा अपने पास रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।
- भैरव की उपासना करें।
- सांप को दूध पिलायें।
- तेल एवं शराब पेड़ों की जड़ में डालें।
- तेल से चुपड़ी रोटी कुत्ते अथवा कौए को डालें।
- नीलम, जामुनिया अथवा कटैला मध्यमिका उंगली में धारण करें।
- जोड़ लगा हुआ लोहे का छल्ला मध्यमिका उंगली में धारण करें।

राहु ग्रह और उसका परिचय

राहु का स्वभाव सब कुछ होते हुए भी कुछ न होना है। शत्रुओं का नाश व उनसे रक्षा के साथ-साथ मस्तिष्क सोच का स्वामी है। शुभ राहु चोट लगे नीले शरीर को फूँक मारकर ठीक करने वाला है।

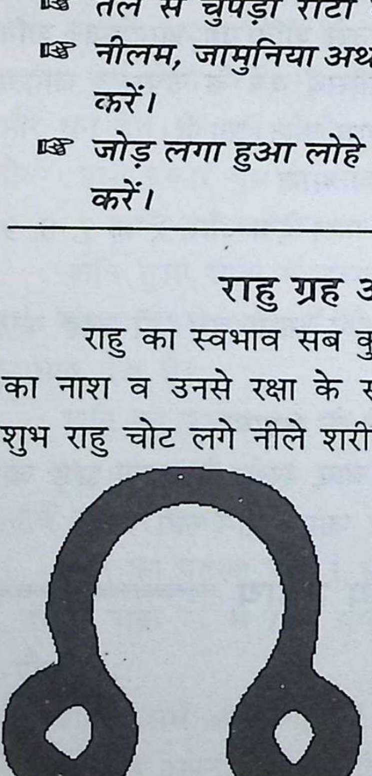

आकाश और समुद्र के नीले रंग का स्वामी राहु जिसकी सहायता के लिए तत्पर हो जाए उसके सम्मुख सबका सिर झुक जाए। शनि से पूर्व के भावों में बैठा राहु शनि को राजा सदृश आदेश देगा जबकि शनि से बाद के भावों में बैठा राहु शनि से आदेश प्राप्त करके कार्य करेगा। राहु

अशुभ हो तो उसका कुप्रभाव बयालिसवें वर्ष के बाद दूर होगा। राहु अशुभ हो तो दक्षिण द्वार का साथ हानिकारक होगा। राहु सूर्य से युत या दृष्ट हो तो राहु जहाँ स्थित है, वह भाव अशुभ होगा तथा साथ का भाव भी अनिष्टकारक है। राहु, सूर्य, मंगल या शुक्र के साथ स्थित होकर केतु को देखे तो पुत्र और केतु की वस्तुएँ व संबंधी नष्ट होंगे।

राहु अशुभ हो तो दाल मसूर या पैसा दान में प्रातः भंगी को दें। रोगी के भार के बराबर अन्न (जौ, गेहूँ) बहते पानी में बहा दें। जौ सिरहाने रखकर सो जाएँ और प्रातः पशु या निर्धनों में बाँट दें। जातक के भार के तुल्य कच्चा कोयला बहते पानी में बहाना राज्य या व्यापार से लाभकारी है। चांदी धारण करें।

सूर्य-शनि या सूर्य-शुक्र की युति हो तो राहु का अशुभ प्रभाव होता है। चन्द्रमा चौथे भाव में स्थित हो तो राहु कहीं भी हो अशुभ नहीं करेगा। मंगल के साथ राहु हो तो राहु मौन हो जाने के कारण कुप्रभाव नहीं देता है।

राहु पहले भाव में हो तो ग्रहण, दसवें हो तो शंकित, ग्यारहवें हो तो पिता (गुरु) रोए, तीसरे हो तो रक्षक, चौथे हो तो शुभ, पाँचवें हो तो गर्भपात, छठे हो तो शुभ, सातवें हो तो धन हानि, आठवें हो तो मृत्यु का नगाड़ा बजाए और नौवें हो तो अधार्मिक बना दे।

राहु को फारसी में **रास** और अंग्रेजी में DRAGON'S HEAD कहते हैं। इसका वार **गुरुवार** की सायं है और रंग **नीला** है। राहु **नपुंसक** ग्रह है और इसका कारक भाव **बारहवां** है।

राहु ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

राहु के लिए बुध, शनि व केतु मित्र हैं, सूर्य, शुक्र व मंगल शत्रु हैं और गुरु व चन्द्र सम है।

राहु ग्रह का काल, आयु एवं गति

राहु का काल 40 दिन, 42 वर्ष, आयु 90 वर्ष, महादशा वर्ष 18, सामान्य चक्र छह, इसका प्रभाव कभी भी और प्रभाव की गति हाथी सदृश होती है।

राहु की आयु किसी भी ग्रह के साथ 42 वर्ष होगी। राहु शुभ मंगल के साथ हो तो उसकी आयु शून्य वर्ष होगी। राहु केतु के साथ हो आयु 45 वर्ष होगी जोकि वर्षफल में ही संभव हो सकती है।

राहु ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

राहु मिथुन राशि में **उच्च** और धनु राशि में **नीच** का होता है। शुक्र, सूर्य या मंगल बारहवें भाव में हो तो राहु उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देता है। यहाँ तक कन्या राशि में होने पर भी शुभ फल नहीं मिलता है। राहु-बुध छठे हो तो उनका शुभ फल मिलता है। राहु बारहवें भाव में अशुभ फल देता है।

राहु का प्रभाव 1 से 4, 34 से 39, 69 से 74, 104 से 10 139 से 144वें वर्ष में रहता है। इसी प्रकार इसका पहला चक्र 7 12वें वर्ष में, दूसरा चक्र 42 से 47वें वर्ष में, तीसरा चक्र 77 से 82 वर्ष में और चौथा चक्र 112 से 117वें वर्ष में होता है।

राहु, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि को छोड़कर केतु से सर्वाधि बली है। राहु अपने से सम्बन्धित वस्तुओं पर ही कुप्रभाव डालता है।

राहु (एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर) प्रथम खण्ड में मंगल प्रभाव चार मास तक देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक का प्रभाव और तृतीय खण्ड में अपना प्रभाव (राहु) अगले चार मास देगा। राहु चालीसवें दिन व बयालिसवें वर्ष में प्रभावी होता है।

राहु चौथे भाव में अशुभ फल नहीं करता है। वर्ष कुण्डली राहु चौथे भाव में हो तो राहु संबंधी कार्य करने पर झगड़ा होता राहु के कार्य ये हैं—घर की छत बदलवाना, कोयले की बोरियाँ सं करना, नया शौचालय बनवाना और काने व्यक्ति को भागीदार बना नपुंसक ग्रह राहु प्रातः व सायं काल में प्रभावशाली होता है।

राहु अशुभ हो तो बारहवें, दसवें और पांचवें भाव का भी अशुभ मिलेगा।

सुप्त राहु कब जागेगा ?

छठा भाव सुप्त हो तो उसे राहु ग्रह जगायेगा। ससुराल संबं कार्यों पर और बयालिसवें वर्ष के उपरान्त राहु जागता है। राहु 2 या 48वें वर्ष में अशुभ फल देता है।

राहु का शुभाशुभ भाव

राहु 1, 2, 5, 7 से 12वें भाव में अशुभ फल देगा और 3, 4, भाव में शुभ फल देगा।

राहु जन्मकुण्डली में अकेला हो तो रक्षक होगा पर आर्थिक रूप से ऐसा होगा इसकी कोई शर्त नहीं होगी। राहु पहले भाव में स्थित होगा तो उसका प्रभाव सूर्य पर पड़ेगा और सूर्य कुण्डली में जहाँ होगा वहाँ सूर्य ग्रहण जैसी स्थिति होगी। राहु ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो उसका प्रभाव गुरु पर पड़ेगा और प्रत्येक प्रकार से हानि करेगा।

राहु के शुभाशुभ होने के लक्षण

राहु अशुभ होने पर काला कुत्ता मर जाए या खो जाए। हाथों के नाखुन झड़ जाएं, दिमाग खराब हो जाए अर्थात् काम न करे। शत्रुओं में वृद्धि हो जाए।

राहु के सामान्य उपाय

- संयुक्त परिवार में रहें।
- ससुराल से सम्बन्ध न बिगाड़ें।
- सिर पर चोटी रखें।
- राहु के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए केतु का उपाय करें।
- जौ या अनाज को बड़े स्थान पर बोझ के नीचे दबाएं या दूध से धोकर बहते पानी में बहाएं।
- मूलीदान करें या कोयला बहते पानी में बहाएं।
- विवाह समय कन्यादान करें।
- सरस्वती की उपासना करें।
- सरसों व नीलम का दान करें।
- मसूर की दाल एवं पैसा प्रातः भंगी को दान में दें।
- नीले कपड़े, स्टील के बर्तन, विद्युत-उपकरण दान में न लें अपितु उचित मूल्य देकर ही लें।
- गोमेद मध्यमिका उंगली में धारण करें।
- तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में न करें।
- जेब में चांदी की ठोस गोली रखें अथवा चांदी किसी अन्य रूप (छल्ला, चेन आदि) में धारण करें।
- चांदी के दो टुकड़े या दो मोती या चावल की दो पोटली

बनाकर उनमें से एक को बहते पानी में बहा दें और दूसरा चांदी का टुकड़ा या मोती या चावल की पोटली आजीवन अपने पास रखें। यदि पास रखी चांदी, चावल या मोती खो जाएं या चोरी हो जाएं तो पुनः अपने पास रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है।

केतु ग्रह और उसका परिचय

केतु शुभता का देवता, यात्रा का स्वामी और अन्त तक सहायता दे वाला ग्रह है। केतु से तात्पर्य सफेद व काला दो रंगा कुत्ता। आठवें भाव ग्रह केतु के कान, दूसरे भाव के ग्रह मुँह और छठे भाव के ग्रह पूँछ हैं। के

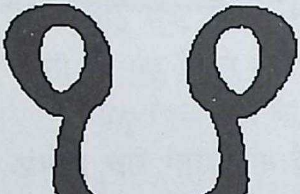

अशुभ हो तो अपनी निर्बलता के विषय में कि से कहना या दूसरों के सम्मुख अपना दुःखड़ा पर अधिक कष्ट होगा। ऐसे में गुरु का उपाय को स्वास्थ्य निर्बल हो तो चन्द्र का उपाय करें। लड़ अशुभ हो तो धर्मस्थल में कम्बल दान में दें। के अशुभ होने पर यदि घर पर चारपाई का प्रयोग हो तो केतु का अशुभ फ नहीं मिलता है। मूत्र संबंधी कष्ट हो तो रेशम का सफेद धागा या चां का छल्ला धारण करना कष्ट मुक्ति के लिए सहायक है।

केतु को फारसी में **दुम्ब** और अंग्रेजी में DRAGON'S TAIL कह हैं। केतु का वार **रविवार** प्रातः और रंग **चितकबरा (काला-सफेद)** है केतु **नपुंसक** ग्रह है और इसका कारक भाव **छठा** है।

केतु ग्रह की मैत्री एवं शत्रुता

केतु के शुक्र, राहु, **मित्र**, चन्द्र व मंगल **शत्रु** एवं सूर्य, बुध, गु व शनि **सम** हैं।

केतु ग्रह का काल, आयु एवं गति

केतु का काल तैंतालिस दिन, अड़तालिस वर्ष, आयु अस्सी वर्ष महादशा वर्ष सात, सामान्य चक्र तीन, इसका प्रभाव अन्त में और प्रभा की गति सुअर व कुत्ते की तरह होती है।

केतु की आयु किसी भी ग्रह के साथ अड़तालिस वर्ष होगी। केतु-गु की युति हो तो आयु चालीस वर्ष, केतु सूर्य या मंगल (शुभ) के साथ हो तो

आयु चौबीस वर्ष होगी। केतु राहु के साथ वर्ष कुण्डली में हो तो आयु पैंतालिस वर्ष होगी।

केतु ग्रह की उच्च-नीच राशि एवं उसका प्रभाव

केतु धनु राशि में उच्च और मिथुन राशियों में नीच का होता है। चन्द्र या मंगल दूसरे भाव में हो तो केतु उच्च फल न देकर अत्यन्त कुप्रभाव देता है। यहाँ तक मीन राशि में होने पर भी शुभ फल नहीं मिलता है।

केतु छठे भाव में नीच (अशुभ) फल देता है और यह उसका कारक भाव भी है। केतु का प्रभाव 5 से 7, 40 से 42, 75 से 77, 110 से 112 एवं 145 से 147वें वर्ष में रहता है। इसी प्रकार इसका पहला चक्र 12 से 15 वर्ष में, दूसरा चक्र 48 से 50 वर्ष में, तीसरा चक्र 83 से 85 वर्ष में और चौथा चक्र 118 से 120 वर्ष में होता है।

केतु पाप ग्रह है और अपने से सम्बन्धित वस्तुओं पर ही कुप्रभाव डालता है। केतु सब ग्रहों में निर्बल है।

नपुंसक ग्रह केतु प्रातः व सायंकाल में प्रभावशाली होता है।

केतु अशुभ हो तो 5, 6 व 10वें भाव का भी अशुभ फल मिलता है।

केतु (एक वर्ष के तीन खण्ड करने पर) प्रथम खण्ड में शनि का प्रभाव चार मास तक देगा, द्वितीय खण्ड में अगले चार मास तक राहु का प्रभाव और तृतीय खण्ड में अपना प्रभाव (केतु) अगले चार मास तक देगा। केतु 43वें दिन व 48वें वर्ष में विशेष प्रभावी होता है।

सुप्त केतु कब जागेगा ?

बारहवां भाव सुप्त हो तो उसे केतु ग्रह जगायेगा। सन्तान के जन्म पर और 48 वर्ष के उपरान्त केतु जागता है। केतु 3 या 51वें वर्ष में अशुभ फल देता है।

केतु के शुभाशुभ भाव

केतु 3 से 6ठे, 8वें भाव में अशुभ फल देगा और 1, 2, 7, 9 से 12वें भाव में शुभ फल देगा।

केतु जन्म कुण्डली में अकेला हो तो हर समय राहु के इशारे पर चलेगा। धनी नहीं बनायेगा तो निर्धन भी नहीं रखेगा। केतु का कहना यह है कि मैंने अपनी शक्ति तुमको समर्पित कर दी अब तुम जानो।

पहले भाव में केतु स्थित हो तो उसका प्रभाव सूर्य पर पड़ेगा और सूर्य

उच्च ग्रह की तरह फल देगा। केतु ग्याहरवें भाव में स्थित हो तो उसका प्र चन्द्र पर पड़ेगा और तब हानि करेगा जब बुध नौवें भाव में न हो।

केतु के अशुभ होने के लक्षण

केतु अशुभ होने पर पैरों के नाखुन झड़ जाएं मूत्र या जोड़ों बीमारी हो जाए और सन्तान को कष्ट या रोग हो जाए।

केतु के सामान्य उपाय

- *गणेश चतुर्थी का व्रत रखें।*
- *गणेश उपासना करें।*
- *कान छिदवाएँ और कुत्ता पालें।*
- *केतु के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए राहु क उपाय करें।*
- *कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डालें। ऐसा करने पर सन्ता सुख भी होगा।*
- *नौ वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों को खट्टी वस्तुएं खा को दें।*
- *काले और सफेद तिल बहते पानी में बहाएं।*
- *कपिला गाय का दान करें।*
- *तिल, नीबू और केले का दान करें।*
- *चरित्र ठीक रखें और पापकर्मों से बचें।*
- *दो रंगे पत्थर के दो टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन अपने पास रखें। यदि द रंगा पत्थर का टुकड़ा खो जाए या चोरी हो जाए तो पुनः एव टुकड़ा रखें। दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नह है। ऐसा करने पर भी केतु का अशुभ प्रभाव दूर होता है।*

इस अध्याय में नवग्रहों का संक्षिप्त परिचय और उनके साम उपाय बतला दिये गये हैं। इन उपायों का ग्रहानुसार प्रयोग में ला उनकी अशुभता से बचना चाहिए। अब अगले अध्याय में उपाय सं आवश्यक ज्ञान की चर्चा करेंगे।

❖❖❖

3

टोटके व उपाय संबंधी आवश्यक ज्ञान

इस अध्याय में लाल किताब के टोटके एवं उपायों को प्रयोग में लाने से पूर्व ध्यान रखे जाने वाले आवश्यक ज्ञान की चर्चा की गई है। लाल किताब के अद्‌भुत टोटके एवं उपाय करने से शीघ्र लाभ होता है। ये कम खर्चीले, सरल और प्रभावी हैं। टोटके एवं उपायों को करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखें—

1. इस पुस्तक में बताया गया कोई भी टोटका व उपाय अल्पतम 40 दिन और अधिकतम 43 दिन तक निरन्तर करें।
2. टोटके व उपाय प्रत्येक आठवें दिन, 40 या 43 सप्ताह तक भी कर सकते हैं।
3. उपाय करते समय बीच में कोई बाधा या नागा नहीं आनी चाहिए। यदि 39 या 42वें दिन भी भूल से उपाय छूट जाये तो पुनः प्रारम्भ से उपाय करना पड़ेगा। जब नागा हो जाए तब चावल दूध से धोकर पास में रख लें ऐसा करने पर पूर्व में किए गए उपाय व्यर्थ नहीं जायेंगे।
4. टोटका या उपाय सूर्योदय से सूर्यास्त काल के मध्य में ही करें। रात्रि में उपाय न करें। उपाय जब चाहें तभी प्रारम्भ कर सकते हैं, परन्तु चालीस या तितालिस दिन तक अवश्य करें।
5. उपाय किसी के लिए कोई भी कर सकता है। लेकिन वही कर सकता है जिसका उस व्यक्ति से रक्त का संबंध हो।

6. यह जान लें मृत्यु से पूर्व आशीर्वाद मिल जाने पर मृत्योपरान्त भी उस ग्रह से सम्बन्धित व्यक्ति को लाभ पहुँचेगा।
7. विवाह के समय अर्थात विवाह से पूर्व ही अशुभ ग्रहों का उपाय अवश्य कर लेना चाहिए क्योंकि पुरुष की कुण्डली के अशुभ ग्रह स्त्री को विवाहोपरान्त प्रभावित करते हैं।
8. उपाय अपनी जन्मकुण्डली के विश्लेषण के बाद सावधानी से चयन करें। सही उपाय लाभ कराते हैं और गलत उपाय हानि कराने से नहीं चूकते हैं।
9. **अशुभ ग्रह की अशुभता दूर करने के लिए ऐसा करें–**
   - **राहु** अशुभ हो तो केतु का उपाय करें। केतु की नब्ज (नाड़ी) दसवें भाव में होगी।
   - **केतु** अशुभ हो तो राहु का उपाय करें। पापी ग्रहों की वस्तुएं को पास रखने से भी उनका उपाय हो जायेगा।
   - **शनि** अशुभ हो तो आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कौवे को रोटी डालें एवं सन्तान की अशुभता दूर करने के लिए कुत्ते को रोटी डालें।
   - **शुक्र** अशुभ हो तो अपने भोजन में से गाय को हिस्सा दें।
   - **मंगल** अशुभ हो तो मृगछाला प्रयोग में लाएँ। तन्दूर में लगी मीठी रोटी कुत्तों को दे या भिखारियों में बाँटे। जौ को दूध में डुबोकर बहते पानी में बहा दें। बुखार हो तो जौ गाय के मूत्र में धोकर लाल रंग के कपड़े में बाँधे। गाय के मूत्र से दांत साफ करें। रेवड़ियाँ या गुड़ बहते पानी में बहाएँ। केसर नाभि पर लगाएँ।
10. पितृऋण, अशुभ ग्रह व सन्तान प्राप्ति के लिए जो ग्रह अशुभ व निर्बल हों उनका उपाय अवश्य करें। इनको करे बिना शुभ ग्रहों का फल नहीं मिलेगा।
11. ग्रहानुसार निम्नलिखित उपाय भी कर सकते हैं–
   - **सूर्य** अशुभ हो तो हरिपूजन, विष्णु पूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें।
   - **चन्द्र** अशुभ हो तो शिव उपासना करें।

- **मंगल** अशुभ हो तो हनुमान चालीसा का पाठ करें और हनुमान की उपासना करें।
- **बुध** अशुभ हो तो दुर्गा उपासना और दुगा सप्तशती का पाठ करें।
- **गुरु** अशुभ हो तो हरिपूजन या हरिवंश पुराण का पाठ करें। ब्रह्मा की उपासना भी कर सकते हैं।
- **शुक्र** अशुभ हो तो दूजों का पालन-पोषण करें। लक्ष्मी उपाासना करें।
- **शनि** अशुभ हो तो बड़े-बुर्जगों की सेवा करें। भैरव उपासना करें।
- **राहु** अशुभ हो तो कन्या दान करें। सरस्वती उपासना करें।
- **केतु** अशुभ हो तो गाय का दान करें। गणपति उपासना करें।

12. यदि ग्रह अधिक नीच फल करें तो उससे सम्बन्धित वस्तुओं का दान अवश्य करना चाहिए।
    - **सूर्य** के लिए तांबा और गेहूँ का दान करें।
    - **चन्द्र** के लिए चावल, दूध व दही का दान करें।
    - **मंगल** के लिए मसूर की दाल का दान करें।
    - **बुध** के लिए साबुत हरे मूंग का दान करें।
    - **गुरु** के लिए चने की दाल एवं सोने का दान करें।
    - **शुक्र** के लिए घी, दही, कर्पूर व मोती का दान करें।
    - **शनि** के लिए लोहा या काले उड़द का दान करें।
    - **राहु** के लिए सरसों व नीलम का दान करें।
    - **केतु** के लिए तिल का दान करें।
13. **अशुभ ग्रहों के लिए इस प्रकार भी उपाय कर सकते हैं—सूर्य** अशुभ हो तो तांबे के दो टुकड़े बराबर भार के लेकर उसी प्रकार दान करें जिस प्रकार लड़की का करते हैं। बाद में एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा पूर्णायू तक अपने पास संभालकर रखें उसे किसी भी मूल्य पर बेचे नहीं। ऐसा करने पर सूर्य का अशुभ प्रभाव कम होगा। ऐसा टुकड़ा चोर भी नहीं चुरा सकता है। यदि ऐसा टुकड़ा खो जाए तो पुनः तांबे का टुकड़ा

बना लें, दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं है। शेष ग्रहों के लिए इस प्रकार करें—

- **चन्द्र** अशुभ हो तो सूर्य की तरह सच्चा मोती, चांदी या चावल स्थापित करें।
- **मंगल** अशुभ हो तो सूर्य की तरह लाल पत्थर स्थापित करें।
- **बुध** अशुभ हो तो सूर्य की तरह हीरा या सीप स्थापित करें।
- **गुरु** अशुभ हो तो सूर्य की तरह स्वर्ण या केसर स्थापित करें।
- **शुक्र** अशुभ हो तो सूर्य की तरह सफेद मोती स्थापित करें।
- **शनि** अशुभ हो तो सूर्य की तरह लोहा, काला नमक या काला सुरमा स्थापित करें।
- **राहु** अशुभ हो तो चन्द्र ग्रह की तरह करें। परन्तु नीलम कभी न स्थापित करें।
- **केतु** अशुभ हो तो सूर्य की तरह दोरंगा पत्थर स्थापित करें।

14. ग्रहों को सहायता कैसे दें—राशि शरीर है तो ग्रह आत्मा। ग्रह के फल का उपाय ज्योतिष शास्त्र में नहीं होता है। ग्रह व राशि की संदेहात्मक स्थिति का उपाय और ग्रहों के विश्वासघात से रक्षा करना मनुष्य के वश में है। अब यहाँ कुछ महत्वपूर्ण ज्ञान बता रहे हैं जिसको व्यवहार में लाकर ग्रहों की सहायता कर सकते हैं अथवा दूजों को ग्रहों का उपाय बताने में उचित मार्गदर्शन दे सकते हैं।

- पापी ग्रह (राहु, केतु व शनि) सभी को चोट देते हैं पर उनको चोट देने के लिए उनका अपना पाप (राहु, केतु) भारी पड़ता है।
- राहु के अशुभ प्रभाव को केतु के उपाय द्वारा दूर कर सकते हैं। इसी प्रकार केतु के अशुभ प्रभाव को राहु के उपाय द्वारा दूर कर सकते हैं।
- पापी ग्रहों का उपाय उनसे सम्बन्धित वस्तुओं को रखने, पालने, उनसे आशीर्वाद या क्षमा मांगने से ही होगा।
- शुक्र ग्रह की सहायता के लिए अपने भोजन में से गाय को कुछ भाग दें। ऐसा करने पर धान्य, सुख बढ़ेगा।
- शनि की सहायता के लिए कौए को रोटी का टुकड़ा डालें। ऐसा करने पर धन हानि रुकेगी।

- केतु की सहायता के लिए कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डालें। ऐसा करने पर सन्तान होगी।
- प्रत्येक ग्रह की अशुभता के पार्श्व में दो ग्रह होते हैं। इन दोनों में से एक की अशुभता दूर करने पर शुभ फल मिलने लगते हैं। इसके लिए ऐसे ग्रह के प्रभाव को बढ़ाएं जो पाप ग्रह की अशुभता को शुभता में परिवर्तित कर दें। जैसे—शनि अशुभ हो जाए तो उसकी अशुभता के पार्श्व में शुक्र व गुरु हैं, इनमें से गुरु को हटाने के लिए बुध के प्रभाव को बढ़ाएं। शुक्र-बुध मिलने पर शनि शुभ हो जाता है।
- अशुभ मंगल के कुप्रभाव से मृगछाला बचाती है। तन्दूर में लगी मीठी रोटी बनाकर बाँटने से अशुभ मंगल का कुप्रभाव दूर होता है।
- बुध, शुक्र व शनि के अशुभ प्रभाव को गाय ग्रास से दूर कर सकते हैं। गाय ग्रास से तात्पर्य यह है कि अपनी प्रतिदिन के भोजन/खुराक में से तीन टुकड़े निकालकर एक टुकड़ा गाय को, एक टुकड़ा कुत्ते को और एक टुकड़ा कौवे को खाने के लिए दें।
- राहु का अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए जौ या अनाज को किसी बड़े स्थान में बोझ के नीचे दबाने पर या दूध से धोकर बहते पानी में बहाना चाहिए।
- यदि क्षय रोग का ताप (बुखार) तंग करे तो जौ को गाय के मूत्र में धोकर लाल वस्त्र में बाँधकर रखें और गाय के मूत्र से ही दान्त साफ करें।
- अन्य ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को बढ़ाने से अशुभ ग्रह का कुप्रभाव दूर होता है।
- यदि पुत्र-पुत्री दोनों पिता के लिए अशुभ हों तो लड़की के गले में तांबे का टुकड़ा डालना शुभ होगा।
- यदि मंगल 1, 3, 8 वें भाव में हो तो उसका उपाय कदापि न करें। ऐसे में बुध का उपाय करना लाभप्रद रहेगा।

15. जब सामान्य उपाय कारगर साबित न हों तो अतिशीघ्र प्रभाव देने वाले निम्नलिखित उपाय करें—

- सूर्य—बहते पानी में गुड़ बहाएं।

- **चन्द्र**—दूध या पानी का भरा बर्तन सिरहाने रखकर सोएँ और अगले दिन कीकर की जड़ में सारा जल डाल दें।
- **मंगल**—मंगल शुभ हो तो मिठाई या मीठा भोजन दान करें या बताशे बहते पानी में डालें। मंगल अशुभ हो तो रेवड़ियाँ बहते पानी में बहाएं।
- **बुध**—तांबे के पत्तर में छिद्र करके बहते पानी में बहा दें।
- **गुरु**—केसर खाएं या नाभि व जीभ पर लगाएं।
- **शुक्र**—गोदान करें या ज्वार व चरी का दान करें।
- **शनि**—तेल में छाया देखकर दान करें।
- **राहु**—मूली दान करे या कोयला बहते पानी में बहाएँ।
- **केतु**—कुत्ते को रोटियाँ डालें।

16. **उपाय द्वारा ग्रहों को मनोनुकूल भाव में पहुँचाने का अद्‌भुत उपाय**—ग्रहों से मनोनुकूल फल प्राप्त करने के लिए उसे अभीष्ट भाव में पहुँचाना होता है। ग्रह विशेष की वस्तुओं को नीचे लिखी रीति से स्थापित करने पर वह अभिष्ट भाव में पहुँच जाता है।

- **ग्रह को पहले भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को गले में धारण करें या उन वंस्तुओं का तिलक लगाएं।
- **ग्रह को दूसरे भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को मन्दिर या धर्म स्थान (मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च) में दान में दें या स्थापित करें।
- **ग्रह को तीसरे भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित धातु में रत्न को जड़वाकर अंगुलियों में धारण करें।
- **ग्रह को चौथे भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं बहते पानी में बहाएं।
- **ग्रह को पांचवे भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को स्कूल, विद्यालय, कालेज या शिक्षा स्थान में पहुँचाएं या स्थापित करें।
- **ग्रह को छठे भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को कुएं में डालें।

- **ग्रह को सातवें भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को भूमि में दबाएं।
- **ग्रह के आठवें भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को श्मशान में दबाएं।
- **ग्रह को नौवें भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को मन्दिर के पास दबाएं या मन्दिर में दें या शरीर पर धारण करें।
- **ग्रह को दसवें भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को पिता को खिलाएं या पहिनने के लिए दें या सरकारी कार्यालय के पास या उसकी जमीन में उस जगह दबाएं जहाँ सरकारी भवन की छाया पड़ती हो।
- **ग्रह को ग्यारहवें भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तु को कहीं भी पहुँचाने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि इस भाव में कोई भी ग्रह उच्च या नीच नहीं होता है। वस्तुतः किसी उपाय की आवश्यकता नहीं हैं।
- **ग्रह को बारहवें भाव में पहुँचाने के लिए**—उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को अपने घर की छत पर स्थापित करें या रखें।

17. जब कोई ग्रह अशुभ फल दे रहा हो तो उसके सामने वाले भाव में उसका शत्रु ग्रह स्थापित करने पर उसका अशुभ प्रभाव दूर हो जाता है। मान लीजिए बुध बारहवें भाव में नीच का है तो उसके सामने वाले छठे भाव में बुध के शत्रु ग्रह शुक्र, राहु को छठे भाव में स्थापित करने पर बुध की नीचता दूर हो जायेगी। ग्रह विशेष को मनोनुकूल भाव में पहुँचाने की रीति पूर्व में बता चुके हैं।
18. **यह सब वर्जित है इसे न करें**—ग्रहानुसार इन स्थितियों में यह सब आपके लिए वर्जित हैं, इसे कदापि न करें—
    - **शनि पहले भाव में हो और बृहस्पति पांचवें भाव में हो** तो भिखारी को तांबे का सिक्का या बर्तन कदापि न दें। यदि देंगे तो सन्तान नष्ट हो जायेगी या कष्ट में रहेगी।
    - **चन्द्र चौथे भाव में हो और गुरु दसवें भाव में हो तो**

मन्दिर या पूजास्थल कदापि न बनवाएं। यदि बनवाएंगे तो झूठे आरोपों में सजा या फांसी तक हो सकती है।

- **शुक्र नौवें भाव में हो तो** अनाथ बच्चों को न गोद लें और न अपने पास में रखें। यदि अनाथ बच्चों को गोद लेंगे या पास में रखेंगे तो सर्व प्रकार से अपना अहित ही करेंगे।
- **गुरु सातवें भाव में हो तो** किसी को वस्त्र दान में न दें वरना स्वयं अपने वस्त्र खो बैठेंगे अर्थात् वस्त्रहीन होने की स्थिति आ जायेगी।
- **शनि आठवें भाव में हो तो** सराय, धर्मशाला, यात्री निवास न बनवाएं यदि बनवायेंगे तो गृहहीन हो जायेंगे तथा निर्धनता में जीवन जीना पड़ेगा।
- **चन्द्रमा छठे भाव में हो तो** दूध या पानी का दान न करें, कुआं या तालाब न खुदवाएं या नल न लगवाएं और मरम्मत तक न करवाएं। यदि कराएंगे तो दिन-प्रतिदिन परिवार घटता रहेगा और मृत्यु सिर पर मंडराती रहेंगी। माता को कष्ट होगा सन्तान न हो तो खरगोश पालें एक खरगोश मर जाए तो दूसरा पालें।
- **चन्द्रमा बारहवें भाव में हो तो** धर्मात्मा या साधु को भोजन न खिलाएं, उसे दूध न पिलाएं, बच्चों को निशुल्क शिक्षा न दें, स्कूल या पाठशाला न खोलें। यदि ऐसा करेंगे तो आजीवन कष्ट पायेंगे और अन्त समय कोई पानी पिलाने वाला भी न होगा।

19. अशुभ ग्रह तभी प्रभाव डालता है जब वह वर्ष कुण्डली में भी अशुभ प्रभाव देने वाले भावों में जाता है। इसी प्रकार शुभ ग्रह शुभ फल तभी देता है जब वह वर्ष कुण्डली में भी शुभ प्रभाव देने वाले भावों में जाता है।

20. ग्रह यदि कारक भावों के हैं तो उनका शुभाशुभ प्रभाव अवश्य पड़ता है जिसे उपाय द्वारा भी नहीं रोका जा सकता है। ग्रहों के कारक भाव इस प्रकार हैं—**सूर्य** का कारक भाव पहला, **चन्द्र** का कारक भाव चौथा, **मंगल** का कारक भाव तीसरा और आठवां, **बुध** का कारक भाव सातवां, **गुरु** का कारक भाव दूसरा, पांचवां, नवां और ग्यारहवां, **शुक्र** का कारक भाव सातवां, **शनि** का कारक

भाव आठवां और दसवां, राहु का कारक भाव बारहवां एवं केतु का कारक भाव छठा और ग्यारहवां।

21. उपाय उस प्रकार रक्षा करता है जिस प्रकार वर्षा में छाता या बरसाती हमें भीगने से बचाती है।

इस अध्याय में उपायों संबंधी आवश्यक ज्ञान बता दिया गया है। अब अगले अध्याय में द्वादश भावों में नव ग्रहों की स्थिति के अनुसार अद्भुत टोटके एवं उपाय बतायेंगे।

❖❖❖

4

द्वादश भवनों में स्थित ग्रहों के टोटके एवं उपाय

इस अध्याय में द्वादश भवनों में ग्रहों की स्थिति के अनुसार उनका क्या उपाय होना चाहिए, इसकी चर्चा करेंगे। हमें विश्वास है कि आप इन सरल टोटकों व उपायों को व्यवहार में लाकर नवग्रहों के अशुभ प्रभावों से स्वयं को बचा सकेंगे।

जन्मकुण्डली में द्वादश भवन अर्थात् भाव होते हैं। नवग्रह किसी भी भाव में स्थित हो सकते हैं। प्रत्येक भाव में नवग्रहों का अपना शुभाशुभ प्रभाव होता हैं इन ग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय बताए गए हैं जोकि सरल होने के कारण आसानी से किए जा सकते हैं।

द्वादश भवनों में सूर्य के टोटके व उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें सूर्य किस भाव में स्थित है। सूर्य जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को सूर्य के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रह बाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं।

आईए अब सूर्य के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करें।

पहले भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- ⌘ घर में बायीं और अंधेरी कोठरी का निर्माण करें।
- ⌘ विवाह चौबीस वर्ष से पूर्व ही करें।
- ⌘ दिन में स्त्री के साथ कभी भी भोग न करें।
- ⌘ स्वयं को नैतिक व चरित्र की दृष्टिकोण से सबल बनाएँ।
- ⌘ पैतृक घर हो तो उसमें हैंडपम्प या जल का कोई साधन स्थापित करने के दस वर्ष उपरान्त भाग्योदय होगा।

दूसरे भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- ⌘ दान कभी न लें। किसी से कोई भी वस्तु मुफ्त में न लें। स्वअर्जित धन से ही जीवन को जीएं। दान में चावल, चांदी या दूध तो कदापि न लें।
- ⌘ नारियल, तेल या बादाम को मन्दिर या किसी धर्म स्थल में दान में दें।
- ⌘ अपना चरित्र सदैव ठीक रखें। चरित्रहीनता से बचना ही श्रेयस्कर है।
- ⌘ पैतृक भवन में जल संसाधन (हैंडपम्प, कुंआ आदि) का प्रबन्ध करें।

तीसरे भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- ⌘ माता या दादी का आशीर्वाद लेते रहें। उन्हें कभी भी नाराज न करें।
- ⌘ चाल-चलन ठीक रखें।
- ⌘ कभी भी पाप या बुरे क़र्मों में लिप्त न हों।
- ⌘ चन्द्रमा की वस्तुओं को स्थापित करना भी शुभ फलप्रद रहेगा।

चौथे भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- ⌘ अन्धों को भिक्षा दें या भोजन कराएँ।
- ⌘ पैतृक भवन में यज्ञ कराएँ या निशुल्क भंडारा कराएँ।
- ⌘ मछली न तो खाएँ और न कभी उनका शिकार करें।
- ⌘ शराब का सेवन भी न करें।
- ⌘ लोहे व लकड़ी का कार्य कभी न करें।
- ⌘ सोना, चांदी व कपड़े का कार्य अवश्य करें।
- ⌘ तांबे का सिक्का खाकी धागे में पिरोकर गले में धारण करें।

पांचवे भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- ⌘ झूठ न बोलें और दूजों के प्रति दुर्भावना न रखें।
- ⌘ वचन दें तो अवश्य निभाएँ।

- ⌘ प्राचीन परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों की अवहेलना न करें।
- ⌘ लाल मुख के बन्दर की सेवा करें या गुड़ खिलाएँ।
- ⌘ तीन प्रकार के कुत्तों की सेवा करें अर्थात् साले, दामाद और नाती को पालना करें।
- ⌘ पक्षी, मुर्गा और बच्चों का पालन-पोषण करें।
- ⌘ घर में रसोई पूर्व दिशा में बनाएं।

छठे भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- ⌘ बन्दर को गुड़ या सूर्य की वस्तुएँ खिलाएँ।
- ⌘ बाजरा या सूर्य की वस्तुएँ दान में दें।
- ⌘ सफेद चींटियों को सात दालों का चूरा बुरकें।
- ⌘ बुध का उपाय करें।
- ⌘ चांदी या गंगाजल घर में लाकर रखें।
- ⌘ रात्रि का भोजन करने के बाद चूल्हे की आग दूध से बुझाएँ।
- ⌘ घर में भूमिगत भट्टी न बनवाएँ।
- ⌘ तांबे का चौकोर पत्तरा भूमि के नीचे दबाएँ।
- ⌘ मन्दिर या धर्मस्थल में कुछ न कुछ दान दें या वहाँ के कुत्ते को भोजन कराएँ।
- ⌘ रात्रि में अपने सिरहाने चन्द्रमा की वस्तुएँ (पानी आदि) रखकर सोएं
- ⌘ दूसरों के द्वारा धर्मस्थल में दान की गई वस्तुएँ अपने घर में न लाएँ
- ⌘ पैतृक रीति-रिवाजों का पालन करें।

सातवें भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- ⌘ कोई भी कार्य थोड़ा मीठा खाकर या पानी के कुछ घूंट पीकर प्रारम्भ करें
- ⌘ काली या बिना सींग वाली गाय की सेवा करें।
- ⌘ भोजन करने से पूर्व रोटी के टुकड़े की आहुति अग्नि में डालें।
- ⌘ नमक कम खाएँ।
- ⌘ तांबे का चौकोर टुकड़ा भूमि के नीचे दबाएँ। यह उपाय तब करें जब पुत्र तंग या कष्ट में हो।
- ⌘ दूध से आग बुझाएं। यह उपाय तब करें जब शनि पहले और सूर्य सातवें भाव में स्थित हो।
- ⌘ गुरु का उपाय करें।

⌘ सांसारिक व्यवहार उत्तम रखें।

आठवें भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

⌘ घर का मुख्यद्वार दक्षिण में न रखें या दक्षिणद्वार से युक्त घर में न रहें।
⌘ घर में सफेद गाय न पालें।
⌘ काली गाय या बड़े भाई की सेवा करें।
⌘ रोगी के पास कभी न बैठें।
⌘ मीठा खाकर व पानी पीकर कोई कार्य करने पर कार्य सिद्धि अवश्य होगी।
⌘ नैतिक पतन न होने दें या चरित्र से ठीक रहें।
⌘ सालों के साथ न रहें।

नौवें भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

⌘ दान कभी न लें।
⌘ चन्द्रमा की वस्तुओं का दान करें।
⌘ मुफ्त में चान्दी या चावल कदापि न लें। मुफ्तखोर न बनें।
⌘ पापकर्म से बचें।
⌘ घर के पुराने पीतल के बर्तन रखे रहने दें, उन्हें ना बेचें।
⌘ दूजों से मजाक या दिल्लगी कदापि न करें।
⌘ न अधिक क्रोध करें और न अनावश्यक सहन करें। सदैव सामान्य रहें।

दसवें भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

⌘ सफेद रंग की टोपी या पगड़ी से सदैव सिर ढंककर रखें।
⌘ काले व नीले रंग के कपड़े कदापि न पहनें।
⌘ अपने दोषों या परेशानियों का कदापि ढिंढोरा न पीटें।
⌘ सिर कभी नंगा न रखें, सदैव ढंककर रखें।
⌘ गंगाजल घर पर लाकर रखें या पैतृक घर में कुंआ या हैंडपम्प लगवाएँ।
⌘ नदी, नाले या समुद्र के बहते पानी में चालीस या तैंतालिस दिन तक ताँबे का सिक्का लगातार बहाएँ।
⌘ भूरी भैंस की सेवा करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

⌘ शराब न पीएँ या मांस न खाएँ।
⌘ ऐसा कोई कार्य न करें जिससे शनि अशुभ हो जाए।

- वायदा न तोड़ें, झूठी गवाही न दें, धोखाधड़ी भी न करें।
- रात्रि में पांच मूली या बादाम सिरहाने रखकर अगले दिन प्रातः मन्दिर या धर्मस्थल पर दान देने से आयु बढ़े और सन्तान सुख भी मिले।
- कसाई से बकरी या बकरा खरीदकर उसकी रक्षा करें या पेड़-पौधा रौपें।

बारहवें भाव में स्थित सूर्य के टोटके एवं उपाय

- राहु संबंधी कार्यों को न करें। ससुराल से अधिक संबंध न रखें।
- घर में बरामदा अवश्य रखें।
- पराई आग में हाथ न डालें।
- धार्मिक कार्य अवश्य करें।
- घर ऐसा बनाएँ जहाँ सूर्य का प्रकाश अवश्य आए।
- आटा पीसने की चक्की घर पर रक्खें।
- झूठी गवाही न दें।
- दूजों को धोखा न दें। गबन न करें। अमानत रखकर बाद में मना न करें। ईर्ष्या न करें। असत्य कदापि न बोलें।

द्वादश भवनों में चन्द्र के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें चन्द्र किस भाव में स्थित है। चन्द्र जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को चन्द्र के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब चन्द्र के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- चांदी के बर्तनों में दूध या पानी पीएं।
- कांच के बर्तनों में दूध या पानी न पीएं ।
- दूध न बेचें, अपितु दूध का दान दें या दूध मुफ्त पिलायें।
- पलंग या चारपाई के चारों पायों में ताँबे की कील गाड़ें।
- वटवृक्ष पर जल चढ़ाएंगे तो सम्मान और शन्ति मिलेगी।
- माता के चरण स्पर्श करके सदैव उनका आशीर्वाद लें।

- माता की मृत्यु से पूर्व उनसे आशीर्वाद रूप में चन्द्रमा की वस्तुएँ चावल, चांदी आदि लेकर रखें।
- माता के स्वास्थ्य के लिए माता को साथ रखें और मंगल की वस्तुएँ भूमि के नीचे दबाएं।
- अट्ठाईसवें वर्ष से पूर्व विवाह न करें या शुक्र संबंधी कार्य न करें।
- वर्षा का जल और चन्द्रमा की वस्तुएँ किसी न किसी रूप में घर पर स्थापित करें।
- चौबीसवें वर्ष में नौकरानी या गाय घर पर रखें।
- परिवार के साथ नदी पार करने का सुअवसर मिले तो नदी में तांबे का सिक्का डालें।
- चौबीसवें वर्ष से पूर्व भवन न बनायें।

दूसरे भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- हरे रंग के वस्त्र तैंतालिस दिन तक निरन्तर कन्याओं को दें।
- घर की नींव में चांदी की ईंट या वस्तुएँ दबाएँ।
- माता से आशीर्वाद के रूप में चन्द्रमा की वस्तुएँ प्राप्त करें।
- परिवार में वृद्धा स्त्री जो भी हो उसकी सेवा करें।
- घर का फर्श कच्ची मिट्टी का रखें।
- चन्द्रमा की वस्तुएँ घर पर स्थापित करें।

तीसरे भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- दूर्गा पूजा करें।
- पुत्री के विवाह पर या अन्य कन्याओं के विवाह पर कन्यादान करें।
- कन्या के जन्म पर चन्द्रमा की वस्तुएँ और पुत्र के जन्म पर सूर्य की वस्तुएँ दान में दें।
- सामान्यतः सूर्य का दान लाभप्रद है।
- लड़की का धन प्रयोग में न लाएँ।
- घर में स्त्रिओं की सेवा, पूजा और पालना अवश्य करें।

चौथे भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- शुभ कार्य करने से पूर्व पानी या दूध से भरा घड़ा भरकर रखें।
- दूध का दान करें। दूध कभी न बेचें। दूध बेचने से तबाही व दूध मुफ्त बाँटने से सांसारिक सुख बढ़ेगा।

- पैतृक कार्य करते रहने से लाभ होगा।
- दादा, पोता या दोहता एक साथ मन्दिर जाएं या पितृ यज्ञ करें।

पांचवें भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- लालच न करें।
- स्वार्थी न बनें।
- धर्म पर चलें, सत्यमार्गी बनें और सिद्धान्तों पर चलें।
- अशुभ मत बोलें, गाली-गलौज न करें।
- कोई भी चन्द्र संबंधी कार्य करने से पूर्व मीठा भोजन करके घर निकलें।
- सोमवार को श्वेत वस्त्र में चावल, मिश्री बाँधकर बहते पानी बहाएँ।
- कभी-कभी पहाड़ी स्थानों पर घूमने जाएं।

छठे भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- अपने रहस्यों को किसी को भी न बताएँ।
- पिता को अपने हाथों दूध पिलाएं।
- सूर्य, मंगल एवं गुरु की वस्तुओं का दान धर्मस्थल या मन्दिर में
- रात्रि में दूध कदापि न पीएं। दूध स्वास्थ्य के लिए पीना आवश्‍ हो तो दिन में पीएं या रात्रि में फटा दूध, दही या पनीर प्रयोग लाएं। दूध को फाड़कर पानी या दही में से पानी निकालकर पदार्थ प्रयोग में ला सकते हैं।
- सामान्यजन के लिए मुफ्त पानी का प्रबन्ध न करें।
- धर्मार्थ कुआँ या प्याऊ लगाएं। अस्पताल या श्मशान के बरामदे नल या कुआँ लगाना लाभप्रद है। ध्यान रखें खेती हेतु या साम प्रयोग के लिए लगाया गया नल अशुभ होगा।
- दूध का दान कदापि न करें। दूध देना हो तो धर्मस्थल पर ही दें
- खरगोश पालें।

सातवें भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- चौबीसवें या पच्चीसवें वर्ष में विवाह न करें।
- दूध व पानी कभी न बेचें। यदि बेचेंगे तो सन्तान व माता का नहीं मिलेगा।

- विवाह के पूर्व चन्द्र की वस्तुएँ स्थापित करें।
- घर पर दूध या नदी का पानी अपने भार के बराबर स्थापित करें।
- विवाह के समय ससुराल से स्त्री के साथ चन्द्रमा की वस्तुएँ अवश्य लाएँ।
- अपना चरित्र ठीक रखें।

आठवें भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- गुरु, सूर्य या मंगल की वस्तुएँ धर्मस्थल में दान करें।
- श्मशान के अन्दर लगे नल से जल लाकर घर में रखें।
- नाक छिदवाएँ।
- बड़े-बुर्जुगों के नाम पर श्राद्ध करें।
- बड़े-बुर्जुगों के चरण स्पर्श करें या पानी से धोने पर आयु बढ़े।
- बड़े-बुर्जुगों और बच्चों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लें।
- जुआ न खेलें।
- घर में चन्द्रमा की वस्तुएँ स्थापित करें।
- श्मशान या अस्पताल में जल संसाधन का प्रबन्ध करें।

नौवें भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- अपना चरित्र ठीक रखें।
- चन्द्रमा की वस्तुओं को स्थापित करें।
- चन्द्रमा के मित्र ग्रहों की वस्तुओं को स्थापित करें।
- धर्मस्थलों पर अवश्य जाएं।

दसवें भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

- गुरु ग्रह का उपाय करें।
- चरित्र ठीक रखें।
- यदि वैद्य या चिकित्सक हैं तो मुफ्त दवाएं कभी न दें।
- रात्रि में दूध कदापि न पिएं।
- भूमि के नीचे का जल, नदी, नाले, हैंड पम्प का जल घर में दस-पन्द्रह वर्ष तक रखें।
- दूध देने वाले पशु घर पर न पालें।
- तरल औषधियाँ कभी न ग्रहण करें।
- मकान न बनाएँ।

⌘ ससुराल से अधिक संबंध न बनाएँ।

ग्यारहवें भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

⌘ जब स्त्री के प्रसव का समय आए तो माता को कहीं अन्यत्र चले जाना चाहिए और तैंतालिस दिन तक बच्चे का मुख नहीं देखना चाहिए।

⌘ कुआँ कभी न लगवाएँ।

⌘ दूध की वस्तुएँ पेड़े या दूध जो भार में इतने हों कि एक व्यक्ति का पेट भर जाए। इस भार का ग्यारह गुना करके बच्चों में बाँट दें या ग्यारह व्यक्तियों को भर पेट दूध की वस्तुएँ खिला दें।

⌘ भैरों जी के मन्दिर में दूध का दान दें।

⌘ जातक की माता सिर और आँखें दूध से धोए।

⌘ हैंडपम्प के पानी गिरने के स्थान पर चक्की का पत्थर रखें और जातक की माता उसे प्रतिदिन धोए।

⌘ स्त्री-संसर्ग से पूर्व सोने की सलाख को अग्नि में लाल करके दूध में बुझाएँ, यह ग्यारह बार करें। जातक के लिए दूध का प्रयोग वर्जित हो तो गर्म किया सोना पानी में बुझाकर प्रयोग करें। यदि वीर्य में शुक्राणु कम हों तो देसी दवाईयाँ अधिक प्रयोग करें जिनमें स्वर्ण या स्वर्ण भस्म मिली हो।

बारहवें भाव में स्थित चन्द्र के टोटके एवं उपाय

⌘ वर्षा का जल घर में स्थापित करें।

⌘ चुप रहना और पिछड़े रहना स्वयं की तबाही के कारण होंगे।

⌘ गुरु का उपाय करना लाभप्रद होगा।

⌘ कोई भी कार्य पानी का घूँट पीने के बाद करें।

द्वादश भवनों में मंगल के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें मंगल किस भाव में स्थित है। मंगल जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को मंगल के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब मंगल के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- फकीर या साधू का साथ परिवार के लिए शुभ न होगा।
- मुफ्त माल या वस्तु पाने का कभी प्रयास न करें। यदि करेंगे तो समझ लें दूध में विष ग्रहण कर रहे हैं और शरीर में रक्त पानी बन जायेगा, भाग्य जल जायेगा।
- गुरु का उपाय करें अर्थात् गुरु संबंधी वस्तुओं (चने की दाल, बेसन से बनी वस्तुएँ, हीरा, सोना आदि) मन्दिर में दान में दें। गुरु के उपाय से मंगल का कुप्रभाव कम होगा।
- हाथी दांत की वस्तुएँ घर पर न रखें।
- कदापि झूठ न बोलें।
- शुक्र का उपाय करें अर्थात् शुक्र संबंधी वस्तुओं (कर्पूर, घी, दही, सुगन्धित पदार्थ, वस्त्र आदि) को जमीन में दबायें।

दूसरे भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- दोपहर में गुड़ और गेहूँ बच्चों को बाँटें।
- दूसरों को पालते रहने से उन्नति हो, सम्पन्नता बढ़े। अतः दूजों को या सगे-सम्बन्धियों को अवश्य पालते रहें।
- भाई को कभी न दुतकारें। समय-असमय उसकी सहायता करते रहें। यदि भाई का अपमान करेंगे या उसको दुतकारेंगे तो समझ लें अवनति का द्वार अपने लिए खोले रहे हैं।
- चन्द्र सम्बन्धी वस्तुओं (चांदी, चावल, दूध, पानी, सफेद वस्तुएँ, धोती, अंगोछा आदि) को धार्मिक स्थान, मन्दिर व गुरुद्वारे आदि में रखें या दान में दें।
- मुगछाला घर पर रखें।
- माता व दादी का अपमान कदापि न करें।
- ससुराल में कुआँ न हो तो बनवायें या प्याऊ आदि खुलवाएँ।
- लाल रंग का रुमाल अपने पास रखें।

तीसरे भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- हठी व अकड़ू न बनें।
- अय्याशी से बचें।
- हाथी दांत पास में या घर पर रखें।

- चांदी की अंगूठी बिना जोड़ वाली तर्जनी अंगुली में धारण करें।
- चीनी और शहद का व्यापार कदापि न करें।

चौथे भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- प्रतिदिन प्रातःजल से दांत साफ करें।
- चन्द्र का उपाय करें या बरगद (वटवृक्ष) की जड़ पर दूध में मीठा डालकर चढ़ाएं।
- वटवृक्ष पर चढ़ाए हुए दूध से जो मिट्टी गीली हो उसका तिलक लगाने पर उदर विकार से मुक्ति मिल जायेगी।
- बन्दर, माता और साधू की सेवा करें।
- आग लगने की घटनाएँ अधिक होती हों तो घर, दुकान या फैक्ट्री की छत पर चीनी की खाली बोरियाँ रखें।
- निस्संतान हों, स्त्री या सन्तान को कष्ट रहता हो तो मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर शमशान में जाकर दबाएँ।
- लम्बी बीमारी से मुक्ति पाने के लिए मृगछाला पर सोएँ।
- चांदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।
- घर का दक्षिणी द्वार लोहे की कील से कील दें।
- काले, काने, लंगड़े, निस्संतान व्यक्ति एवं ढाक के वृक्ष से दूर रहें।
- मंगल के मित्र ग्रहों गुरु, सूर्य व चन्द्र की वस्तुओं को स्थापित करें। सूर्य की वस्तुएँ तांबा, गुड़, गेहूँ, बन्दर, मक्खियाँ आदि, चन्द्र की वस्तुएँ कुआँ, घोड़ा, चांदी, मोती आदि एवं गुरु की वस्तुएँ सोना, वृद्ध, साधू, पुखराज आदि। सोना, तांबा एवं चांदी तीनों धातु की अंगूठी बनवाकर धारण करें।
- चिड़ियों को मीठा डालें।
- हाथी दाँत पास में रखें।

पाँचवें भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- रात में सिरहाने पानी रखकर सोएँ।
- परस्त्री गमन से बचें।
- चालचलन ठीक रखें।
- बड़े-बूढ़ों को साथ में रखें।
- बुजुर्गों के नाम के श्राद्ध अवश्य करें।

⌘ दूध का दान करें।
⌘ नीम का वृक्ष रोपें।

छठे भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

⌘ शनि का उपाय करें।
⌘ कन्याओं की पूजा करें एवं उनका आशीर्वाद लें।
⌘ सन्तान के लिए चन्द्र और बुध का उपाय करें। माता, लड़की, बहन, बुआ, फूफी एवं मौसी का सम्मान करें। उनके लिए कुछ करें।
⌘ कन्याओं को दूध, चावल एवं चांदी का दान करना शुभ होगा।
⌘ सन्तान के जन्म पर मीठे के स्थान पर नमकीन बाँटें। जन्मदिन का उत्सव कभी न मनाएँ।
⌘ चालचलन ठीक रखें।
⌘ गणेश की उपासना करें।

सातवें भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

⌘ भाई के बच्चों की सहायता करें।
⌘ शनि एवं शुक्र की वस्तुएँ उचित ढंग से प्रयोग करने पर रक्त विकार, पीलिया और स्वास्थ्य ठीक रहे।
⌘ बहिन कभी भी घर आए बिना मीठे के कभी खाली वापिस न जाए।
⌘ विधवा लड़की, साली या बहिन साथ में रहे तो प्रातः कभी भी काम से निकलें तो उनको मीठा अवश्य दें।
⌘ ठोस चांदी रखने से घर में सुख-सम्पत्ति बढ़े।
⌘ शनि का उपाय करें या छोटी दीवार बार-बार बनाकर गिराते रहने से शुभ फल प्राप्त हो।
⌘ बेल या लताओं वाले पौधे (Creeping Plant) घर पर न लगाएं।
⌘ बुध सम्बन्धी वस्तुएँ मुफ्त में न लें, घर में चमगादड़ न रहे, चौड़े पत्तों वाले वृक्ष न लगाएँ, तोता या मैना न पालें या उनका घोंसला घर पर न हो, सूखे फूल घर पर न रखें, कलईगिरी का कार्य न करें, ढोलक या तबला बार-बार न बजाएँ, माँस व शराब का सेवन न करें, घर की सीढ़ियां बार-बार न गिराएँ और न बनाएँ, डाई बनाने का कार्य ना करें एवं बकरी व बदसूरत गाय घर पर न पालें। घर पर खोखला बाँस या सूखी घास न रखें, सफेदी का कार्य भी ना

करें। यदि उपर्युक्त सब कुछ करेंगे तो मंगल का अशुभ प्रभाव ही मिलेगा।

- ⌘ बुआ या बहिन को लाल कपड़े देते रहें।
- ⌘ चरित्र ठीक रखें

आठवें भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- ⌘ विधवा का आशीर्वाद लें।
- ⌘ रोटी सेंकने वाला तवा जब गर्म हो जाए तो उस पर ठंडे पानी के छींटे मारने के बाद रोटी सेंकने से परिवार से रोग दूर हो।
- ⌘ गले में चांदी धारण करें।
- ⌘ घर पर जमीन के नीचे भट्टी न बनाएँ।
- ⌘ घर का द्वार दक्षिण में न रखें।
- ⌘ तन्दूर में लगायी मीठी रोटी चालीस या तैंतालिस दिन तक कुत्ते को दें।
- ⌘ चौथे भाव में मंगल के स्थित होने पर जो उपाय बताए गए हैं, वे भी करें।

नौवें भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- ⌘ भाई की स्त्री अर्थात् भाभी की सेवा करें।
- ⌘ बड़े भाई के साथ रहें, उनसे अलग न हों।
- ⌘ बुध की वस्तुओं को कुएँ में डालें।
- ⌘ शुक्र की वस्तुएँ जमीन में दबाएं।
- ⌘ चन्द्र की वस्तुएँ मन्दिर या गुरुद्वारे में दें।
- ⌘ लाल रंग का कपड़ा या रुमाल जेब में रखें।

दसवें भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- ⌘ बाप-दादा की जायदाद न बेचें।
- ⌘ हिरण को पालना लाभकारी हो।
- ⌘ काला, काना और सन्तानहीन की सेवा करें।
- ⌘ दूध उबालते समय ध्यान रखें कि दूध उबले नहीं।
- ⌘ घर का सोना बेचने की नौबत न आने दें।

ग्यारहवें भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

- ⌘ पैतृक सम्पत्ति को कदापि न बेचें।

⌘ लड़के का जन्म होने पर ही शुभ फल मिलेगा।
⌘ सांसारिक कुत्तों (साले, दामाद और नाती) को पालें या कुत्ता पालें।
⌘ लहसुनिया धारण करें या केतु की वस्तुएँ मन्दिर में दान करें।
⌘ मिट्टी के बर्तन में सिन्दूर या शहद रखें।

बारहवें भाव में स्थित मंगल के टोटके एवं उपाय

⌘ प्रातः सबसे पहले शहद से मुख मीठा करें।
⌘ मंगल की वस्तुएँ पास में न रखें।
⌘ खाकी रंग की टोपी या पगड़ी से सिर ढककर रखें।
⌘ प्रातः सबसे पहले शहद से मुख मीठा करें।
⌘ बड़े भाई को चाहिए कि ऐसे जातक को पानी के स्थान पर दूध पिलाए तथा अपने पास चन्द्रमा की वस्तुएँ (चावल, चांदी) रखें।
⌘ मीठा खाएँ और मीठा ही खिलाना शुभ होगा।
⌘ मीठी रोटी या दूध में खांड डालकर दरवेश, फकीर, कुत्ते आदि को दें।
⌘ सूर्य को मीठा पानी का अर्घ्य दें।
⌘ मन्दिर या धर्म स्थान में बताशे का दान दें।
⌘ मेहमानों को पानी की अपेक्षा दूध पिलाएँ।
⌘ सिर पर चोटी रखें।
⌘ जातक के बड़े भाई को लाल रंग के वस्त्र नहीं पहनने चाहिएं।

द्वादश भवनों में बुध के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें बुध किस भाव में स्थित है। बुध जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को बुध के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब बुध के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

⌘ एक जगह टिक कर रहें। इधर उधर न भटकें।
⌘ अंडा व मांस का सेवन न करें। नशे की लत से बचें।
⌘ ऐसे कार्य न करें जिसमें अपयश का भय हो।

- हरे रंग की वस्तुओं से बचें।
- मछली न मारें।

दूसरे भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

- साली का साथ न करें एवं उससे सम्बन्ध न रखें।
- नाक छेदन कराकर 90 दिन तक चाँदी पहने रखना या 96 घंटे तक छेद रखना लाभकारी होगा।
- चन्द्र व गुरु की वस्तुएँ मन्दिर में देना या चन्द्र व गुरु का उपाय करना लाभप्रद रहेगा।
- फिटकरी से दांत साफ करें।
- भेड़, बकरी व तोता-तोती कभी न पालें।

तीसरे भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

- दुर्गा-पूजा करें।
- कन्याओं का आर्शीवाद लें।
- प्रतिदिन फिटकरी से दांत साफ करें।
- बुध से सम्बन्धित वस्तुओं का प्रयोग न करें।
- पक्षियों की सेवा करें।
- बकरी का दान करें।
- केतु को स्थापित करें।
- रात्रि में मूंग फिटकरी के नमकीन पानी में भिगोकर प्रातः जानवरों को तैंतालिस दिन तक बिना नागा डालें।
- ढाक के चौड़े पत्ते दूध में धोकर घर से बाहर सुनसान स्थान पर दिन के समय एक गड्ढे में डालकर उसके ऊपर एक पत्थर का टुकड़ा रखकर मिट्टी डाल दें। जिस वस्तु से गड्ढा खोदें और जिस बर्तन में दूध लें उसे घर में वापिस न लाएँ। पत्थर का रंग जन्मपत्री के नौवें व ग्यारहवें भाव के स्वामी ग्रह के विपरीत न हो। पत्ते भवन के मध्य या पश्चिमी दीवार की तह में भी दबा सकते हैं।
- घर में लगा पत्थर दूध से प्रतिदिन धोएं।
- पीले रंग की कोड़ियां जलाकर उनकी राख बहते पानी में बहाएँ।
- दमे की दवाई मुफ्त में बांटें।
- बुध से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करें।

चौथे भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

⌘ तोता, बकरी या भेड़ न पालें।
⌘ केशर को तैंतालिस दिन तक तिलक के रूप में मस्तक पर लगाएँ और खाएँ।
⌘ गुरु और सूर्य का उपाय करें।
⌘ चांदी की जंजीर मन की शान्ति के लिए धारण करें।
⌘ धन-सम्पत्ति के लिए स्वर्ण की जंजीर धारण करें।
⌘ हरे रंग की वस्तुएं प्रयोग न करें एवं पेड़-पौधे घर पर न लगाएं।

पांचवे भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

⌘ गले में तांबे का पैसा धारण करें।
⌘ गौ पालन करने से सन्तान, स्त्री और अपना भाग्य उत्तम होगा।

छठे भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

⌘ शुभ कार्य करते समय कन्या का आशीष लेना लाभदायक रहेगा। पुष्प का शकुन भी शुभ है।
⌘ बुध अशुभ हो तो दूध की बोतल वीराने में दबा दें और यदि चन्द्र सहायक हो तो गंगाजल की बोतल उपजाऊ भूमि में दबाना सहायक होगा। शुक्र अशुभ होने पर यह उपाय अवश्य करें।
⌘ स्त्री के बाएँ हाथ में चांदी का छल्ला धारण करना लाभप्रद रहेगा।
⌘ गुरु को स्थापित करना बौद्धिक कार्यों में लाभप्रद रहेगा।
⌘ बहन या बेटी की ससुराल उत्तर दिशा में नहीं होनी चाहिए।

सातवें भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

⌘ बहन को माता सदृश समझकर आदर व मान दें।
⌘ सट्टा कभी न खेलें।
⌘ बिगड़ी हुई साली से संबंध कदापि न रखें।
⌘ मोती गले में धारण करने से समुद्री यात्राओं से लाभ एवं शनि का छल्ला मध्यमिका अंगुली में धारण करने से स्त्री का कुटुम्ब धनी हो जाए।
⌘ पन्ना या हीरा धारण करें।

आठवें भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

⌘ मिट्टी के बर्तन में देशी खांड या शहद भरकर वीराने में दबा दें।

- साबुत मूंग तांबे के बर्तन में भरकर उसका ढक्कन बन्द करके टांका लगवाकर बहते पानी में बहा दें।
- छत पर वर्षा का पानी या दूध रखें या लड़की की नाक में चांदी का छल्ला पहनाएँ।
- बुध अशुभ हो तो दूसरे भाव में स्थित ग्रह की वस्तुएँ उस ग्रह के संबंधी या पशु को दें जो वर्ष कुण्डली में दूसरे भाव में स्थित हो।
- पूजा का स्थान बार-बार न बदलें।
- घर की सीढ़ियाँ बार-बार तुड़वाकर न बनवाएँ।
- मंगल की वस्तुएँ शमशान में दबाएँ।
- कच्छा काले रंग का धारण करें।

नौवें भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

- लोहे की लाल रंग की गोलियाँ अपने पास में रखें।
- मशरुम मिट्टी के बर्तन में रखकर मन्दिर में दे आएँ।
- दरिया के पानी से धुला, पीला कपड़ा घर में दबाएँ या चांदी दबाएँ।
- नाक छिदवाएँ।
- तोता, बकरी न पालें और हरे रंग को प्रयोग में न लाएँ।
- फकीर या साधु से कोई ताबीज न लें।

दसवें भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

- शराब, मांस व अण्डे का सेवन न करें।
- शनि का उपाय करें।
- घर पर मनी प्लान्ट या तुलसी का पेड़ न लगाएं।

ग्यारहवें भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

- खाली बरतन ढककर न रखें।
- किसी फकीर या साधु से ताबीज लेकर न धारण करें। ताबीज न लेना ही उत्तम है यदि लेंगे तो बर्बाद हो जायेंगे।
- गले में तांबे का पैसा धारण करें।
- चौड़े पत्तों के पेड़-पौधे घर पर न लगाएं।

बारहवें भाव में स्थित बुध के टोटके एवं उपाय

- वाणी को वश में रखें।

- ⌘ झूठे वायदे करने की अपेक्षा दिया वायदा पूरा करें।
- ⌘ क्रोध न करें।
- ⌘ मस्तक पर केसर का तिलक तैंतालिस दिन तक लगाएँ या प्रतिदिन लगाने की आदत बनाएँ।
- ⌘ नाक छिदवाएँ।
- ⌘ बिना जोड़ का लोहे का छल्ला पहनना शुभ होगा। छल्ला किसी से मुफ्त न लें।
- ⌘ खाली घड़ा बहते पानी में बहाएँ।
- ⌘ काला-सफेद कुत्ता पालें। कुत्ता भूरे रंग का न हो।
- ⌘ गणेश जी की उपासना करें।
- ⌘ पीला धागा हर समय गले में पहने रखें।
- ⌘ दुर्गा पूजा करें या कन्याओं का आशीर्वाद लें।

द्वादश भवनों में गुरु के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें गुरु किस भाव में स्थित है। गुरु जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को गुरु के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब गुरु के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ स्त्री का सम्मान और पालना करें।
- ⌘ गौ पालन करें।
- ⌘ भूमि में मंगल की वस्तुएँ दबाएँ।
- ⌘ क़िसी से कोई दान या सहायता न लें।
- ⌘ चन्द्रमा को स्थापित करें या उसका उपाय करें।
- ⌘ राजकोष से प्राप्त धन में से कुछ भाग तिजोरी में अवश्य रखें।
- ⌘ भाग्य पर विश्वास रखें।

दूसरे भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ दूसरों का भला करते रहने से स्वयं की उन्नति होगी।

- गुरु की वस्तुएँ पीले कपड़े में बाँधकर मन्दिर में दे आएँ।
- अतिथियों का अपमान न करके उनका स्वागत करें।
- साँप को दूध पिलायें।
- गुरु की वस्तुएँ स्थापित करें या गुरु का उपाय करें।

तीसरे भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- दुर्गा-पूजा करें।
- कन्याओं की सेवा करें और उनका आशीर्वाद लें।
- कन्याओं की पूजा सदैव शुभ रहे।
- दूसरों की चापलूसी कदापि न करें वरना गुरु का अशुभ फल मिलेगा।
- हल्दी और केसर का तिलक लगाएं।
- घर के सामने गड्‌ढा हो तो भरवा दें।

चौथे भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- मन्दिर जाकर पूजा करें।
- हवाई किले न बनाएँ।
- पुरोहित से आशीर्वाद लें।
- बड़ों की आज्ञा सदैव मानें और उनका अपमान न करें।
- पीपल पर जल चढ़ाएं या पीपल का पेड़ लगाएं।
- माँस और शराब का सेवन न करें। परस्त्री से यौन संबंध कदापि न बनाएँ।
- राहु व केतु को अशुभ न होने दें।
- किसी के सम्मुख नंगे न नहाएं या शरीर न दिखाएं।

पाँचवें भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- सिर पर चोटी रखें।
- धर्म के नाम पर धन संग्रह न करें या दान न लें।
- गणेश उपासना करें।
- केतु का उपाय करें।
- शराब, माँस व परस्त्री गमन से दूर रहें।
- किसी से मुफ्त में कुछ न लें।
- साधुओं की सेवा करें या मन्दिर की सफाई करें।

छठे भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- पुजारी को कपड़े दान में दें।
- गुरु की वस्तुएं मन्दिर में दान करें।
- बच्चों के साथ या उनकी सहायता से व्यापार करें।
- बड़ों के नाम पर सदैव दान-पुण्य करते रहें।
- चरित्र या चाल-चलन भ्रष्ट न होने दें।
- केतु का उपाय करें।
- कुत्ते को मीठी रोटियाँ डालें।
- गणेश उपासना करें।
- किसी भी रंग का कुत्ता पाले।
- कन्याओं की पूजा करें।
- पीपल के वृक्ष को पानी दें।
- मुर्गा पालें या उनको खाने के लिए दाना दें।

सातवें भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- शिव उपासना करें।
- चन्द्र का उपाय करें।
- रत्तियां जो सोना तोलने के काम आती हैं, पीले कपड़े में बाँधकर या सोने के साथ रखें।
- एय्याशी से बचें।
- आवारा साधु के साथ से बचें। प्रयास करें कि धर्म प्रचार न करें।
- युवावस्था में सन्तान के प्रति बेपरवाह न हों।
- घर पर तुलसी की माला या तुलसी का पौधा न रखें।

आठवें भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- गुरु व शुक्र की वस्तुएँ मन्दिर में दान करें।
- गले में स्वर्ण धारण करें।
- फकीर या साधु को दान देते रहें।
- श्मशान में पीपल का पेड़ लगाएँ।
- कहीं पर कोई मरने वाला हो तो वहाँ से हट जाएँ नहीं तो उसके प्राण नहीं निकलेंगे।
- पीली अथवा सफेद वस्तुओं का दान करें।

नौवें भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ सदैव सत्य बोलें।
- ⌘ प्रतिदिन देवदर्शन के लिए मन्दिर जाएँ।
- ⌘ धर्म विरोधी न बनें। धर्म का पालन करें।
- ⌘ शराब न पिएँ।
- ⌘ बुध की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएँ या विद्यालय या पाठशाला में दान में दें।
- ⌘ गंगा स्नान करें।
- ⌘ तीर्थ यात्रा अवश्य करें।

दसवें भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ नाक साफ करके कोई कार्य शुरू करें।
- ⌘ सिर ढककर रखें। यदि पगड़ी बाँधते हैं तो उस पर पीले केसर का तिलक लगायें।
- ⌘ तांबे का सिक्का चालीस अथवा तैंतालिस दिन तक बहते पानी में बहाएँ।
- ⌘ मस्तक पर तैंतालिस दिन तक पीले केसर का तिलक लगायें।
- ⌘ सूर्यग्रहण पर शनि की वस्तुएँ (बादाम, नारियल, उड़द व तेल) दान में दें।
- ⌘ किसी का भला न करें।
- ⌘ धार्मिक व्यक्ति, पीपल व पंडित की सेवा न करें।
- ⌘ केतु या गुरु का उपाय करें।
- ⌘ पीले कपड़े व सोना न धारण करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ कफन का दान करें। जब भी किसी की मृत्यु हो प्रयास करें कि कफन दान में दें अर्थात् कफन दान में देने का अवसर न गवाएँ।
- ⌘ यदि किसी को वचन दें तो उसे पूर्ण अवश्य करें। वचन न पूर्ण करने पर स्थिति बिगड़ेगी।
- ⌘ परिवार के साथ रहें। परिवार से अलग रहना अशुभ होगा।
- ⌘ शनि का उपाय करें या उसे स्थापित करें।
- ⌘ ईर्ष्या से बचें।

⌘ स्त्री को अलग न रखें।
⌘ चाल-चलन ठीक रखें।
⌘ धार्मिक बनें।
⌘ पीपल को जल चढ़ाएं।
⌘ पिता के प्रयोग में लाये कपड़े काम में लाएं।
⌘ शराब न पिएँ व माँस न खाएँ।
⌘ पाकिट में पीला रुमाल रखें।

बारहवें भाव में स्थित गुरु के टोटके एवं उपाय

⌘ प्रतिदिन माथे पर केसर का तिलक लगाएँ।
⌘ सिर पर चोटी रखें और सिर को ढककर रखने का प्रयास करें।
⌘ कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व नाक को साफ करें।
⌘ गले में माला कभी न धारण करें।
⌘ गुरु सम्बन्धी वस्तुएँ जो पीली हों, उनको स्थापित करें।
⌘ गुरु व साधू का अपमान करने की अपेक्षा उनकी सेवा करें।
⌘ पीपल का पेड़ कभी न कटवाएँ।
⌘ बृहस्पति सम्बन्धी अशुभ कार्य कभी न करें।
⌘ किसी का बुरा न करें और न ही किसी के लिए दुर्वचन बोलें।
⌘ दूसरों का भला करने से अपनी भाग्य-वृद्धि हो।
⌘ अपव्यय से बचें।
⌘ अधार्मिक न बनें।
⌘ किसी को धोखा न दें।
⌘ झूठी गवाही न दें।

द्वादश भवनों में शुक्र के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें शुक्र किस भाव में स्थित है। शुक्र जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को शुक्र के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभंता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब शुक्र के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ प्रेम–प्यार व एय्याशी में अधिक संलग्न न रहें।
- ⌘ दिन में संभोग न करें।
- ⌘ गोमूत्र प्रयोग में लाएं।
- ⌘ पत्नी को मस्तक में सोना धारण करना चाहिए।
- ⌘ ईश्वर पर विश्वास दृढ़ रखें।
- ⌘ दूसरों की सलाह अवश्य लें।
- ⌘ गुड़ न खायें।
- ⌘ काली गाय की सेवा करें।
- ⌘ दही से स्नान करें।
- ⌘ गौ ग्रास दें अर्थात् अपनी खुराक में से गाय, कुत्ते और कौवे को खाने को दें।

दूसरे भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ मंगल की वस्तुएँ प्रयोग करनी शुभ हैं।
- ⌘ चाल–चलन ठीक रखें एवं परस्त्री गमन से बचें।
- ⌘ दो किलो आलू हल्दी से पीले करके गाय को खिलायें।
- ⌘ दो सौ ग्राम गाय का पीला घी मन्दिर में दें।
- ⌘ चौपाए घरेलू पशु पालें।

तीसरे भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ मंगल की वस्तुएं प्रयोग में लाएं।
- ⌘ स्त्री का सम्मान करें। कभी भी उसे अपमानित न करें।
- ⌘ परस्त्री गमन से बचें।
- ⌘ घर में नृत्य और संगीत न बजने दें।

चौथे भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ चन्द्र का उपाय या गुरु की वस्तुएँ कुएँ में डालें।
- ⌘ घर में कुआं न खुदवाएँ।
- ⌘ अपनी पत्नी से पुनः विवाह करें।
- ⌘ गुरु का उपाय करें।
- ⌘ आड़ू की गुठली में काला सुरमा भरकर जमीन में दबाएँ।

- नशा न करें।
- ऐब ढांपकर रखें और गुणों का बखान करें।

पांचवें भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- गाय और माता की सेवा करें।
- हृदय में अपवित्रता न रखें।
- चरित्र ठीक रखें।
- गुप्तांग दूध-दही से धोते रहने से अशुभ शुक्र से बचाव होगा। गुप्तांग का स्थान साफ रखना सहायक हो।
- चन्द्र की वस्तुएँ दूध व चांदी सहायता करेंगी।
- माता-पिता की इच्छा के विपरीत विवाह न करें।

छठे भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- चान्दी की ठोस गोली पास में रखे।
- पत्नी बीमार रहे तो गुप्तांग लाल दवाई से धोएं।
- पत्नी नंगे पैर जमीन पर न चले। जुराब या चप्पल पहने रहे।
- स्त्री बालों में सोने का हेयरक्लिप लगाकर रखे।
- विवाह के समय सास-ससुर सोने के दो टुकड़े संकल्प करके दामाद को दें तो सन्तान सुख में सहायक हों।
- चाल-चलन ठीक रखें। परस्त्री गमन से बचें।
- स्त्री जाति का अपमान न करें।

सातवें भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- गन्दे नाले में तैंतालिस दिन तक नीला फूल डालें।
- लाल गाय की सेवा करें।
- कांसे के बर्तन का दान शुक्रवार को मन्दिर में दें।
- स्त्री बीमार हो तो उसके भार तुल्य या भार का दशांश के तुल्य ज्वार मन्दिर में दें।
- माता-पिता का आशीर्वाद लें।

आठवें भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- तांबे का सिक्का या नीला फूल गन्दे नाले में तैंतालिस दिन तक डालें।

- ⌘ काली गाय की सेवा करें।
- ⌘ चाल-चलन ठीक रखें।
- ⌘ किसी की सौगन्ध न लें या जमानत न करें।
- ⌘ विवाह पच्चीस वर्ष के बाद करें।
- ⌘ मन्दिर में सिर झुकाएं शत्रु कमजोर होगा।
- ⌘ स्त्री रोगी हो तो उसके भार तुल्य ज्वार मन्दिर में दान करें।
- ⌘ दान कभी न स्वीकार करें।

नौवें भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ घर में चांदी, शहद व घोड़ी स्थापित करें या चांदी व शहद को नींव में दबाएं।
- ⌘ आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नीम के वृक्ष तले चांदी के चौकोर टुकड़ें दबाएं।
- ⌘ काली या लाल गाय की सेवा करें।

दसवें भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ शराब व मांस का सेवन न करें।
- ⌘ शनि का उपाय करने से सहायता हो।
- ⌘ परस्त्री गमन से बचें।
- ⌘ अति कामुकता से बचें। संयम रखें। गुप्तांग दही से साफ करें।
- ⌘ घर की पश्चिमी दीवार कच्ची रखें।
- ⌘ मछली न मारें।

ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ बुध का उपाय करें।
- ⌘ शनि व चन्द्र की वस्तुएँ दवाई रूप में लें।
- ⌘ शनिवार को तेल का दान करें।
- ⌘ कपिला गाय की सेवा करें।
- ⌘ स्त्री को घर का कोष न सौंपे।
- ⌘ रूई व दही मन्दिर में दान करें।

बारहवें भाव में स्थित शुक्र के टोटके एवं उपाय

- ⌘ देशी घी का दीपक घर पर जलाएं।

- स्त्री अपने हाथों वीराने में नीला फूल या धूल दबाये तो सभी दुःख दूर हों।
- स्त्री को मान-सम्मान व प्यार दें।
- राहु की वस्तुओं का साथ व संबंध न रखें।
- स्त्री के द्वारा या उसके नाम पर गौ दान करें।

द्वादश भवनों में शनि के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें शनि किस भाव में स्थित है। शनि जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को शनि के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब शनि के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- मद्य व माँस का सेवन न करें।
- वीरान जगह पर भूमि के नीचे सुरमा दबाएं।
- वटवृक्ष (बरगद) या केले के वृक्ष की जड़ में मीठा दूध चढ़ाकर गीली मिट्टी का तिलक लगाएँ।
- बन्दर पालें या उसकी सेवा करें।
- तवा, चिमटा व अंगीठी का दान करें।
- झूठ न बोलें।
- दूसरों की वस्तुओं पर कुदृष्टि न डालें।

दूसरे भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- नंगे पांव मन्दिर जाकर निज भूलें मान लें।
- सांप को दूध पिलाएं।
- शिवलिंग पर जल चढ़ाएं।
- काली या दो रंगी भैस न पालें। भूरी भैंस पालें।
- मस्तक पर कभी भी तेल न लगाएं। दूध या दही का तिलक लगाएं।

तीसरे भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- कुत्ते की सेवा करें या दोहता, साला व जीजा की सेवा करें।

- ⌘ घर में कुत्ता अवश्य पालें।
- ⌘ केतु का उपाय करने पर धन-सम्पत्ति बढ़े।
- ⌘ घर की दहलीज लोहे की कीलों से कील दें।
- ⌘ नेत्रों की औषधि मुफ्त बांटने से दृष्टि दोष दूर हो।
- ⌘ भवन के अन्त में अन्धेरी कोठरी बनाना धन-सम्पत्ति के लिए सहायक होगा।
- ⌘ मांस या शराब का सेवन न करने पर आयु बढ़े।
- ⌘ पूर्व व दक्षिण में घर का मुख्य द्वार न रखें।

चौथे भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- ⌘ सांप को दूध पिलाएं।
- ⌘ कौओं को रोटी डाले।
- ⌘ भैंस को पालें या रोटी डालें।
- ⌘ मजदूर की सेवा करें।
- ⌘ कुएं में दूध गिराएं।
- ⌘ परस्त्री गमन से बचें। विधवा स्त्री से संबंध बनायेंगे तो कंगाल हो जायेंगे।
- ⌘ शराब बहते पानी में बहाएं।
- ⌘ रोग में शनि की वस्तुओं का प्रयोग करें।
- ⌘ सांप को न मारें।
- ⌘ शराब न पीएं।
- ⌘ रात्रि में भवन की नींव न रखें।
- ⌘ रात्रि में दूध न पिएं।
- ⌘ हरे रंग का प्रयोग न करें।
- ⌘ काले रंग के वस्त्र न धारण करें।

पांचवें भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- ⌘ पैतृक भवन की अंधेरी कोठरी में सूर्य (गुड, तांबा, भूरी भैंस, बन्दर), मंगल (सौंफ, खांड, शहद, लाल मूंगे, हथियार), चन्द्र (चावल, चांदी, दूध, कुंआ, घोड़ा) स्थापित करें।
- ⌘ अपने भार के दशांश के तुल्य बादाम बहते पानी में बहाएंगे या धर्मस्थल में ले जाकर आधे घर लाकर रखें उन्हें खाएं नहीं।

- सन्तान के जन्म लेने पर मीठा न बाटें या मीठा बाटें तो उसमें नमक लगा दें।
- कुत्ता पालें।
- बुध का उपाय करें।
- अड़तालिस वर्ष से पूर्व निज भवन का निर्माण न करें।

छठे भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- सरसों के तेल का भरा बर्तन पानी के भीतर जमीन के नीचे दबा दें। तेल में मुख अवश्य देख लें।
- शनि संबंधी कार्य कृष्ण पक्ष की रात्रि में करें।
- सांप की सेवा से सन्तान सुख मिलेगा।
- नारियल या बादाम बहते पानी में बहाएं।
- बुध का उपाय करें।
- काला कुत्ता पालें या उसकी सेवा करें या उसे रोटी दें।
- चमड़े या लोहे की नई वस्तुएं न खरीदें, पुरानी वस्तुएं खरीद सकते हैं।

सातवें भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- शनि सुप्त हो तो बांसुरी में खाण्ड भरकर एकान्त स्थल में दबाएं।
- पहला भाव खाली हो तो शहद भरा बर्तन एकान्त में दबाएं। यदि नहीं करेंगे तो पौत्र उत्पन्न होने के बाद से निर्धन हो जायेंगे।
- काली गाय की सेवा करें।
- भवन की दहलीज साफ रखें व उसकी पूजा करें।
- शराब न पीएं व मांस न खाएं।
- परस्त्री गमन से सन्तान को कष्ट होगा, इससे बचें।

आठवें भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- मिट्टी पर बैठकर स्नान न करें। पांव का नंगा तलवा भूमि पर स्नान करते समय नहीं लगना चाहिए। पांव के तले पत्थर या लकड़ी होनी चाहिए।
- चान्दी धारण करें। चांदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।
- शराब का सेवन न करें। मांस-मछली न खाएं।
- जैसा केतु होगा वैसी रक्षा होगी। राहु अशुभ फल करेगा।
- चन्द्र शुभ हो तो बुध या शनिवार को आठ सौ ग्राम उड़द सरसों का

तेल लगाकर पानी में बहाएं। यदि चन्द्र अशुभ हो तो सोमवार को उड़द बहाने से पूर्व आठ सौ ग्राम दूध पानी में बहाएं।

- सांप को दूध पिलाएँ

नौवें भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- गुरु का उपाय करें।
- माता-पिता की मृत्यु के उपरान्त यदि कष्ट हो तो घर में कहीं भी पत्थर लगाएं।
- घर की छत पर लकड़ी, ईंधन और चौखट व्यर्थ में न रखें।
- घर के पीछे कोने में अंधेरी कोठरी बनाएँ।

दसवें भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- गुरु का उपाय करें।
- शराब न पिएँ व माँस का सेवन न करें।
- दस नेत्रहीनों को भोजन कराएं।
- गणेश उपासना करें।
- किसी की हत्या कभी न करें और न कराएं।
- अड़तालिस वर्ष से पूर्व अपना भवन न बनाएँ।

ग्यारहवें भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- तैंतालिस दिनों तक तेल या शराब प्रातः काल में सूर्योदय समय धरती पर गिरायें।
- शराब व मांस का सेवन कदापि न करें।
- किसी भी कार्य से बाहर जाएं तो पानी से भरा घड़ा सम्मुख रखें या दर्शन करके जाएं।
- परस्त्री गमन न करें।
- गुरु का उपाय करें।
- किसी को धोखा न दें।
- कामुकता से बचें अर्थात् संयम रखें।
- घर पर चांदी की ईंट रखें।
- घर का द्वार दक्षिण में न रखें।
- तेल में अपनी छाया देखकर तेल दान करें।

बारहवें भाव में स्थित शनि के टोटके एवं उपाय

- ⌘ झूठ न बोलें, शराब न पिएं और न ही मांस खायें।
- ⌘ परस्त्री गमन न करें।
- ⌘ किसी से धोखा न करें।
- ⌘ घर के पिछवाड़े खिड़की या द्वार न रखें।
- ⌘ बारह बादाम काले कपड़े में बाँधकर लोहे के पात्र में बन्द करके आजीवन रख छोड़ें। उसे कभी खोलकर न देखें।

द्वादश भवनों में राहु के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें राहु किस भाव में स्थित है। राहु जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को राहु के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब राहु के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ चार सौ ग्राम सिक्का बहते पानी में बहाएं।
- ⌘ काले-नीले वस्त्र न पहनें।
- ⌘ बिल्ली की जेर नारंगी कपड़े में बांधकर पास में रखें।
- ⌘ सूर्य संबंधी वस्तुओं का दान करें।
- ⌘ गले में चान्दी धारण करें। चौकोर चांदी का टुकड़ा पॉकिट में भी रख सकते हैं।
- ⌘ नारियल बहते पानी में बहाएं।
- ⌘ दूध से स्नान करें।

दूसरे भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ चांदी की ठोस गोली जेब में रखें।
- ⌘ गुरु की वस्तुएँ (सोना, केसर, पीली वस्तु) शरीर पर धारण करें।
- ⌘ माता से मधुर संबंध बनाकर रखें।
- ⌘ विवाहोपरान्त ससुराल से कोई बिजली का सामान कदापि न लें।
- ⌘ मन्दिर में पाप या कुकर्म न करें।

- ⌘ हाथी के पैरों तले की मिट्टी कुएँ में गिराएं।
- ⌘ हल्दी या केसर का तिलक लगाएँ।
- ⌘ चांदी का चौकोर टुकड़ा पूजा स्थल में रखें।
- ⌘ पानी का प्रबन्ध ईशान कोण में करें।
- ⌘ सोने के गहने धारण करें।

तीसरे भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ हाथी दांत पास में कदापि न रखें और न ही हाथी दांत की वस्तुएँ घर पर लाएं।
- ⌘ चन्द्र का उपाय करें।

चौथे भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ सीढ़ियों के नीचे रसोई न बनाएँ।
- ⌘ चान्दी धारण करें।
- ⌘ चार सौ ग्राम धनिया या बादाम या दोनों बहते पानी में बहाएं।
- ⌘ मकान पूरा बनाएँ या मरम्मत करायें तो पूरी करायें। अधूरा कार्य न छोड़ें।
- ⌘ गंगा स्नान करें।
- ⌘ घर के आस-पास गंदा पानी एकत्र न होने दें।

पांचवें भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ अपनी स्त्री के साथ पुनः फेरे लेने पर राहु की अंशुभता दूर हो जाए।
- ⌘ चान्दी का हाथी घर पर रखें।
- ⌘ शराब, मांस व परस्त्री गमन से दूर रहें।
- ⌘ स्त्री के सिरहाने पाँच मूलियाँ रात में रखकर अगले दिन प्रातः मन्दिर में दान करें।
- ⌘ घर के प्रवेश द्वार की दहलीज के नीचे चांदी का पत्तरा दबाएं।
- ⌘ दूसरा विवाह कदापि न करें।

छठे भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ काला कुत्ता पालें।
- ⌘ पॉकिट में सिक्के या काले कांच की गोली रखें।

- भाई-बहिन का अहित न करें।
- घर व कार्यालय में काले कांच की खिड़कियों में लगाएँ।

सातवें भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- चार नारियल बहते पानी में बहाएं।
- बहते पानी में तैंतालिस दिन तक एक सिक्का प्रतिदिन डालें।
- गंगाजल एक बर्तन में भरकर चांदी का टुकड़ा डालकर टांका लगाकर रखें। बर्तन का पानी खत्म न हो या सूखे तो पुनः भरकर रखें।
- घर पर चांदी की ईंट रखें।
- विवाह इक्कीस वर्ष से पूर्व न करें। यदि विवाह इक्कीस वर्ष से पूर्व करे तो चांदी के बर्तन में चांदी का टुकड़ा व गंगाजल डालकर पति-पत्नी अपने पास रखें।

आठवें भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- खोटा सिक्का या सिक्का प्रतिदिन तैंतालिस दिन तक बहते पानी में बहाएं।
- चार नारियल बहते पानी में बहाएं।
- बेईमानी कदापि न करें।
- जन्म मास से आठवां मास हानिकारक हो। आठ मास से अगले जन्म दिन तक चार माह लगातार चार बादाम मन्दिर में चढ़ाकर दो बादाम वापिस ले आएं और सुरक्षित बर्तन में रखें। जन्म दिन आने पर इन्हें बहते पानी में बहा दें। यह ध्यान रखें कि बादाम कोई खाए नहीं।

नौवें भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- मन्दिर में माथा टेकें।
- सर पर चोटी रखें।
- केसर का प्रतिदिन तिलक लगाएँ।
- सोना धारण करें।
- परिवार का मुखिया न बनें।
- कुत्ता पालें। एक कुत्ता मरे तो दूसरा पालें।
- गुरु का उपाय करें।
- ससुराल से संबंध न बिगाड़े।
- संयुक्त परिवार में रहें।

दसवें भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- जातक सिर ढककर रखे।
- मंगल का उपाय करें।
- नीले व काले रंग की पगड़ी या टोपी धारण करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- कभी-कभी भंगी को दान में कुछ न कुछ देते रहें।
- गुरु का उपाय करें अर्थात् स्वर्ण धारण करें, केसर का तिलक लगाएं।
- गुरुवार को गुरु की वस्तुएँ दान में दें और इस दिन प्याज न खाएं।
- लोहा शरीर पर स्थापित करें। चांदी के गिलास में पीने की वस्तुएं प्रयोग में लाएं अर्थात् पिएं।

बारहवें भाव में स्थित राहु के टोटके एवं उपाय

- घर के अन्त में अंधेरी कोठरी बनाएं।
- रात्रि में सोते समय सिरहाने या तकिए के नीचे मंगल की वस्तुएँ चीनी, सौंफ या मूंगा रखें।
- खाना जहाँ बनाएँ वहाँ बैठकर ही खाएं।
- कम सोचें। जिद्द या हठ न करें।

द्वादश भवनों में केतु के टोटके एवं उपाय

आप अपनी जन्मपत्रिका में देखें केतु किस भाव में स्थित है। केतु जिस भाव में स्थित हो उसी के अनुसार टोटके व उपाय चुनकर उन्हें करके स्वयं को केतु के अशुभ प्रभाव से बचाने का प्रयास करें। ग्रहबाधा या अशुभता से बचकर आप सहज में अपना लक्ष्य, सफलता और उन्नति पा सकते हैं। आईए अब केतु के द्वादश भावों में स्थिति के अनुरूप उनके टोटके व उपायों की चर्चा करेंगे।

पहले भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- काला-सफेद कुत्ता पालें।
- चन्द्र का उपाय करें।
- पाकिट में लाला रुमाल रखें।
- बन्दर को गुड़ खिलाएं।
- बुध का उपाय करें।

- ⌘ काला-सफेद कम्बल मन्दिर में दान देने पर सन्तान के कष्ट से मुक्ति मिले।
- ⌘ पैरों के अंगूठों में चांदी धारण करें या सफेद धागा बांधकर रखें।
- ⌘ प्रतिदिन केसर का तिलक लगाएं।
- ⌘ गली के अन्तिम मकान में न रहें।

दूसरे भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ माथे पर केसर का तिलक लगाएं।
- ⌘ चाल-चलन अर्थात् चरित्र ठीक रखें।
- ⌘ नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं की सेवा करें।

तीसरे भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ केसर का तिलक लगाएँ।
- ⌘ गुरु की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएं।
- ⌘ आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए शरीर पर स्वर्ण धारण करें।
- ⌘ सूर्य एवं चन्द्र की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएँ

चौथे भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ सूर्य की वस्तुएँ कुल पुरोहित को दान में देकर आशीर्वाद लें।
- ⌘ गुरु की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएं।
- ⌘ कुत्ता पालें।
- ⌘ मन की शान्ति के लिए चांदी धारण करें।

पांचवें भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ चन्द्र व मंगल की वस्तुएँ दूध, खाण्ड का दान करें।
- ⌘ गुरु का उपाय करें।
- ⌘ शनि की वस्तुएँ ताले में न रखें।

छठे भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ कुत्ता पालें।
- ⌘ सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
- ⌘ गुरु का उपाय करें।

सातवें भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ झूठा वायदा न करें, घमंड न करें और अपशब्द न कहें।

- गुरु का उपाय करें।
- केसर का तिलक लगाएं।
- चार दिन तक चार नीबू बहते पानी में बहाएँ।

आठवें भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- चाल-चलन ठीक रखेंगे तो पत्नी का स्वास्थ्य ठीक रहेगा।
- गणेश उपासना करें।
- कुत्ते को रोटी दें।
- काला-सफेद कम्बल मन्दिर में दान करें। यदि केतु के साथ कोई और ग्रह स्थित हो तो उसकी वस्तुएँ भी दान करें।
- कान छिदवाकर सोना धारण करें।
- केसर का तिलक लगाएँ।

नौवें भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- यदि घर पर कुतिया बच्चे दे तो निस्सन्तान को सन्तान हो, नामर्द मर्द बन जाए।
- कानों में सोना पहनें।
- घर में किसी स्थान पर सोने का चौकोर पतरा स्थापित करें।
- कुत्ता पालें।
- गुरु का उपाय करें।

दसवें भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- चांदी का बर्तन शहद से भरकर घर में रखें।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- अड़तालिस वर्ष के बाद कुत्ता अवश्य पालें। कुत्ता पालना शुभ है।
- परस्त्री गमन से बचना आवश्यक है।
- गुरु का उपाय करें।
- चन्द्र का उपाय करें।
- भवन की नींव में दूध व शहद दबाएं।

ग्यारहवें भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- काला कुत्ता पालें।
- ग्यारह मूली स्त्री के सिरहाने रखकर प्रातः मन्दिर में दे दें। यह तैंतालिस दिन तक करें। मूली की संख्या कम या अधिक कर सकते हैं।

- ⌘ बुध की धातु या पन्ना रत्न कनिष्ठका अंगुली में धारण करें।

बारहवें भाव में स्थित केतु के टोटके एवं उपाय

- ⌘ गणेश उपासना करें।
- ⌘ कुत्ता पालें। यदि कुत्ता मर जाए तो दूसरा कुत्ता चालीस दिन में ले आएं।
- ⌘ सन्तान को कष्ट हो तो राहु का उपाय करें।
- ⌘ निस्सन्तान से भूमि न खरीदें।
- ⌘ चाल-चलन ठीक रखें।
- ⌘ सन्तान की चिन्ता करें।

इस अध्याय में द्वादश भाव में नवग्रहों के स्थित होने पर अलग-अलग लाल किताब के उपाय बता दिए गए हैं। अब अगले अध्याय में पैतृक ऋण और उनके उपाय बतलायेंगे।

❖❖❖

5

पैतृक ऋण और उनका उपाय

इस अध्याय में लाल किताब के आधार पर पैतृक ऋणों और उनके उपायों की चर्चा करेंगे। प्रायः यह देखने में आता है कि हमारा कोई दोष नहीं होता फिर भी हमें कष्ट उठाना पड़ता है। ऐसा क्यों होता है ? पूर्वजों में से किसी ने अशुभ या पाप कर्म किए होते हैं जो पैतृक ऋण बन जाते हैं और उनको कुटम्ब के किसी सदस्य को चुकाना होता है, इसीलिए वह कष्ट उठाता है।

कभी-कभी हम पर बड़े-बूढ़ों के पाप का रहस्यमयी प्रभाव पड़ता है जो हमारे लिए अविश्वासनीय व अचम्भित करने वाला होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पाप कोई करे और दण्ड कोई पाए। पैतृक ऋण होने पर दण्ड भी कोई निकट सम्बन्धी ही पाता है।

पैतृक ऋणों का विचार जन्मकुण्डली से किया जाता है। यदि ऋण का ज्ञान हो जाए तो उसका उपाय भी रक्त के संबंधी को ही करना होता है। पैतृक ऋण दूसरा व्यक्ति नहीं उतार सकता है। रक्त सम्बन्धियों के अन्तर्गत बहिन, बेटी और उनके बच्चे आते है बहिन, लड़की, पोता-पोती, नाती-नातिन आदि।

कभी-कभी कोई रक्त संबंधी उपाय के लिए अपना भाग देने को मना कर देता है क्योंकि उसे इन सब बातों पर विश्वास नहीं है। जो उपाय में अपना भाग देते हैं वे पैतृक ऋण के कष्टों से मुक्ति पा लेते हैं और जो नहीं देते हैं उनके भाग का दस गुना जातक को मिलाना चाहिए।

जो उपाय में अपना भाग नहीं देता है, वो पैतृक ऋण के अशुभ प्रभाव से युक्त रहता है।

कैसे जानें की पैतृक-ऋण है या नहीं ?

यदि आपकी इच्छा यह जानने की है कि आपकी जन्मकुण्डली में पैतृक ऋण है या नहीं तो यहाँ नौ प्रकार के योग दे रहे हैं जिन्हें निज कुण्डली में ढूंढकर सरलता से जान लें कि पैतृक ऋण किस प्रकार का है।

स्व-ऋण की पहचान

जब जन्मकुण्डली के पांचवें भाव में शुक्र या पापी ग्रह (राहु या केतु) स्थित हो तो स्व-ऋण होगा।

स्व-ऋण होने पर जातक नास्तिक, अधार्मिक और प्राचीन परम्पराओं का विरोध करते हुए उन पर मूत्र करने की वृत्ति होने के कारण अन्त बुरा हो।

संकेत—जातक के घर पर भूमिगत अग्नि कुण्ड होगा या छत में से प्रकाश आने के कई मार्ग होंगे।

राज्यभय, मुकदमों कर और दण्ड का भागी होगा। स्वास्थ्य कमजोर, हृदय रोग व कार्य का संघर्ष करना पड़ेगा। निर्दोष होने पर भी दण्ड भुगतना पड़ेगा।

मातृ-ऋण की पहचान

जब जन्मकुण्डली के चौथे भाव में केतु स्थित हो तो मातृ-ऋण होगा।

संकेत—जातक अपने घर की गन्दगी या धूल नदी, कुआँ या बहते पानी में डालेगा।

मातृ-ऋण होने पर जातक माता के प्रति लापरवाह रहता है अर्थात उसके सुख-दुःख का ध्यान नहीं रखता है। माता को अपनी सन्तान के उत्पन्न कर देने के बाद बेघर कर देता है। धन व्यर्थ में खर्च हो जाए। किसी भी प्रकार की सहायता न मिले। सभी प्रयास निष्फल हो जाएं। रोग, ऋण या कर रूप में धन खर्च करना पड़े। शान्ति सहित किसी से दूध पिया हो या किसी को पिलाया हो—ऐसा याद न आए।

संबंधी-ऋण की पहचान

जब जन्मकुण्डली के पहले या आठवें भाव में बुध या केतु स्थित हो तो संबंधी ऋण होगा।

संकेत—संबंधियों से घृणा करे, उनसे मिलने की न सोचे और सदैव विरोध करे। बच्चों का जन्मदिन या पारिवारिक उत्सवों को न मनाए।

सभी प्रकार की सफलता, सुख-समृद्धि मिलने के उपरान्त अचानक सब-कुछ स्वाहा हो जाए। दुःख इतने मिलें कि उनकी कल्पना करने से भी आत्मा काँप जाए। मित्र शत्रुओं जैसा व्यवहार करें। किसी से कोई सहायता न मिले। अट्ठाइस से छत्तीस वर्ष के मध्य यह सब भोगना पड़े। अट्ठाइसवाँ वर्ष आते ही सब सुख समाप्त हो जाए।

बहन या पुत्री संबंधी ऋण की पहचान

जब जन्मकुण्डली के तीसरे या छठे भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो बहन या पुत्री संबंधी ऋण होगा।

संकेत—अबोध बच्चों को लालाचवश बेचा हो या उनको आपस में बदला हो।

लड़की या बहन की हत्या करी हो या उन पर अत्याचार किया हो। युवावस्था में उनको धोखा दिया हो। आर्थिक तंगी हो और अड़तालिस वर्ष तक संघर्ष करना पड़े जिससे जीने की इच्छा भी मर जाए। ससुराल और ननिहाल वाले न रहें। सहायक गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो जाएं।

पितृ-ऋण की पहचान

जब जन्मकुण्डली के दूसरे, पांचवे, नौवें बारहवें भाव में शुक्र, बुध व राहु स्थित हो तो पितृ संबंधी ऋण होता है।

संकेत—किसी कारण वश कुटम्ब का कुल पुरोहित परिवर्तित किया गया होगा या पड़ोस के मन्दिर या पीपल के वृक्ष को नष्ट किया होगा।

जब तक बाल सफेद न हों तब तक ही घर में सम्पन्नता रहे। कार्यों में बाधा, दुःख, निराशा, मानहानि, निसंतान और आर्थिक रूप से नष्ट हो जाएं।

स्त्री-ऋण की पहचान

दूसरे या सातवें भाव में सूर्य, राहु व चन्द्रमा स्थित हो तो स्त्री संबंधी ऋण होता है।

संकेत—लालचवश गर्भवती स्त्री की हत्या या कुटम्ब में मारपीट की होगी।

जब घर पर मांगलिक कार्य हो रहा होगा तब संबंधी के यहाँ अर्थी उठ रही होगी। सुख में दुःख अर्थात् विवाह में मृत्यु या प्रत्येक ने आँसू बहाए हों पर यह न पता चले कि क्यों ऐसा हुआ।

निर्दयी-ऋण की पहचान

जब जन्मकुण्डली के दसवें या ग्याहरवें भाव में सूर्य, चन्द्र व मंगल स्थित हो तो निर्दयी-ऋण होता है।

संकेत—घर का मुख्य द्वार दक्षिण में होगा या निस्सन्तान से भूमि क्रय करके घर बनाया गया होगा।

जीव हत्या की होगी या किसी का घर धोखे से ले लिया होगा और उसका मूल्य नहीं चुकाया होगा। कार्यस्थल पर आग लग जाए और आग बुझाने का प्रबन्ध हो सके।

यहाँ तक जलने वाले या घायलों को अस्पताल पहुँचाने का भी साधन न मिले। घर बनाते समय वर्षा आ जाए और रूके नहीं। ससुराल वालों व बच्चों को पुलिस तंग करे। योग्य सन्तान भी अयोग्य हो जाए। घर के लोग चैन से न सो सकें, जो सोएं वे पुनः न उठें। कुटम्ब के सदस्य धीरे-धीरे घटते जाएं और कारण का पता न चले।

अजन्मे के ऋण की पहचान

जब जन्मकुण्डली के बारहवें भाव में सूर्य, शुक्र व मंगल हो तो अजन्मे का ऋण होता है।

संकेत—ससुराल वालों से धोखा किया हो या निकटस्थों या संबंधियों से धोखे की घटनाएं इस तरह की हों कि दूसरे का कुल ही बर्बाद हो जाए। घर का गंदा पानी मुख्य द्वार के नीचे से बाहर निकले या दक्षिणी दीवार के पास उजड़ा कब्रिस्तान या भड़भूजे की भट्टी होगी।

अचानक आग लग जाए या धोखे से धन हानि हो। सम्बन्धियों

में सोलह से इक्कीसवें वर्ष की आयु के व्यक्ति के सिर पर चोट या रोग के कारण युवावस्था में वृद्ध होना पड़े। सोच-समझकर कार्य करने पर हानि हो। रक्त के सम्बन्धी भी परेशान रहें। मुकदमें में हार, निर्दोष होने पर भी दण्ड मिले, सन्तान सुन्दर पर रोगी हो।

ईश्वरीय ऋण की पहचान

जब जन्मण्डली के छठे भाव में चन्द्र या मंगल हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

संकेत—दूसरे की नर सन्तान छुपाना, मरवाना, कुत्तों को मरवाना या लालचवश दूजों के कुल को नष्ट करना या करा देना।

कुटम्ब में लड़का न हो और हो तो रोगी हो जाए। जब पूंजी यात्रा में खो जाए। विश्वसनीय ही विश्वासघात करें।

पैतृक-ऋण की पहचान के बाद उपाय करें ?

यहाँ विगत पृष्ठों में नौ प्रकार के पैतृक-ऋण (Parental Afflication) की पहचान बतायी गयी है। अपनी जन्मकुण्डली में देखकर निर्णय करें कि उसमें से पैतृक-ऋण कौन सा है। जब यह ज्ञात हो जाए तो उसी के अनुसार उनका उपाय करना चाहिए। अब सभी नौ प्रकार के पैतृक ऋणों के प्रभावशाली उपायों के बारे में चर्चा करते हैं। ये सभी उपाय शीघ्र फलदायी हैं। यदि आपकी कुण्डली में पैतृक ऋण है तो इन उपायों को करना अनिवार्य है। यदि यह उपाय करेंगे तो कुण्डली के अन्य महत्वपूर्ण योगों का फल नहीं मिलेगा और अन्य उपाय भी फलीभूत नहीं होंगे।

स्व-ऋण का उपाय

कुटुम्ब में जहाँ तक रक्त का सम्बन्ध हो वहाँ तक सभी से यज्ञ करने के लिए धन का कुछ भाग (हिस्सा) लेकर यज्ञ करने पर स्व-ऋण सें मुक्ति मिलती है। स्व-ऋण होने पर सूर्य अशुभ होता है।

मातृ-ऋण का उपाय

कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य से बराबर भाग चाँदी लेकर बहते पानी में एक ही दिन में एक साथ बहाने पर मातृ-ऋण से मुक्ति मिलती है। मातृ-ऋण होने पर चन्द्र अशुभ होता है।

सम्बन्धी-ऋण का उपाय

कुटम्ब के प्रत्येक सदस्य से धन एकत्र करके वैद्य को कार्य करने के लिए दान में देने पर इस ऋण से मुक्ति मिलती है। सम्बन्धी-ऋण होने पर मंगल अशुभ होता है।

बहन या पुत्री संबंधी ऋण का उपाय

सम्पूर्ण कुटम्ब के सभी सदस्य पीले रंग की कौड़ियां एक स्थान पर एकत्र करके जलाकर प्राप्त राख को बहते पानी में बहा देने पर बहन या पुत्री के ऋण से मुक्ति मिलती है। बहन या पुत्री का ऋण होने पर बुध अशुभ होता है।

पितृ-ऋण का उपाय

कुटम्ब के प्रत्येक सदस्य से एक-एक पैसा एकत्र करके मन्दिर में दान कर दें या कुटम्ब के पैतृक घर से सोलह कदम के अन्दर पड़ने वाले मन्दिर या पीपल के पेड़ की देखभाल करने पर इस ऋण से मुक्ति मिलती है। पितृ-ऋण होने पर गुरु अशुभ होता है।

स्त्री-ऋण का उपाय

कुटम्ब के प्रत्येक सदस्य से आवश्यक खर्च के लिए धन एकत्र करके सौ गायों को भोजन कराने पर स्त्री ऋण से मुक्ति मिलती है। स्त्री-ऋण होने पर शुक्र ग्रह अशुभ होता है।

निर्दयी-ऋण का उपाय

कुटम्ब के सभी सदस्यों से धन एकत्र करके सौ मजदूरों को एक दिन में भोजन कराने या सौ स्थानों की मछलियों को एकत्र करके कुटम्ब के सभी सदस्य भोजन कराएं तो निर्दयी-ऋण से मुक्ति मिलती है। निर्दयी-ऋण होने पर शनि अशुभ होता है।

अजन्मे-ऋण का उपाय

कुटम्ब के प्रत्येक सदस्य से एक-एक नारियल एकत्र करके एक ही दिन में बहते पानी में बहा देने पर अजन्मे के ऋण से मुक्ति मिल जाती है। अजन्मे-ऋण होने पर राहु अशुभ होता है।

ईश्वरीय-ऋण का उपाय

कुटम्ब के प्रत्येक सदस्य से धन एकत्र करके एक ही दिन में सौ

कुत्तों को भोजन कराने या गृह प्रवेश करते समय दायीं ओर के घर में रहने वाली विधवा का आशीर्वाद लेने पर ईश्वरीय-ऋण से मुक्ति मिलती है। ईश्वरीय-ऋण होने पर केतु अशुभ होता है।

इस अध्याय में पैतृक-ऋणों की पहचान व उसके उपाय बता दिये गए हैं। अपने परिचितों व परिजनों की कुण्डली में पैतृक ऋणों की पहचान करके उनका उपाय करके जीवन में आने वाली अशुभता से बचें। अगले अध्याय में हम जीवन की विभिन्न समस्याओं से मुक्ति पाने के लिये लाल किताब के अनेक सरल एवं अचूक उपायों की चर्चा करेंगे।

❖❖❖

6

विभिन्न समस्याओं से मुक्ति दिलाने वाले लाल किताब के टोटके व उपाय

इस अध्याय में लाल किताब के विभिन्न टोटके एवं उपायों की चर्चा कर रहे हैं। वैसे भी लाल किताब की लोकिप्रयता का मूल कारण यही है कि यह ज्योतिष को सरल ढंग से सिखाती है। फलित करने के लिए इसके रचयिता ने अपने अनुभवों के उपरान्त इसके सिद्धान्तों को बनाया है। इसके उपाय सस्ते और प्रभावी होने के कारण करने में भी सरल हैं। सही उपाय का चयन करके उसे करने पर शीघ्र प्रभाव होता है और ग्रह के अनिष्ट से भी मुक्ति मिल जाती है।

उपायों को करने का विधान अध्याय तीन में भली-भांति समझा दिया गया है।

मुख्य बात ध्यान रखने की यह है कि कोई भी उपाय अल्पतम चालीस दिन और अधिकतम तैंतालिस दिन तक करें। उपाय में नागा कदापि न करें। नागा हो जाने पर उपाय पुनः नए सिरे से करना होगा। इतना अवश्य है कि भूल से यदि नागा हो जाए तो चावल दूध से धोकर पास में रख लें। ऐसा करने पर पूर्व में किए गए उपाय व्यर्थ नहीं जायेंगे। उपाय किसी के लिए कोई भी कर सकता है, लेकिन वहीं कर सकता है जिसका उस व्यक्ति से रक्त का सम्बन्ध हो।

इस अध्याय में विभिन्न प्रकार के उपायों की चर्चा की गई है। इन उपायों को परिस्थिति और जन्मकुण्डली के अनुसार चयन करके

व्यवहार में लाने पर अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाकर लाभ की स्थिति बन सकेगी।

यदि उपाय स्वंय चयन करने में असुविधा हो रही हो तो किसी लाला किताब के जानकार ज्योतिषी को अपनी जन्मकुण्डली दिखाकर सही उपाय ज्ञात कर लें। यह भली-भांति समझ लें कि गलत उपाय को करने से हानि भी उठानी पड़ सकती है। बिना कुण्डली का विश्लेषण किए कोई भी उपाय न करें। जन्मकुण्डली नहीं है तो ग्रहों के लक्षणों के अनुरूप तात्कालिक उपाय चयन करें अथवा कार्य के अनुरूप उपाय चुनकर करें।

आईए अब विभिन्न प्रकार के उपायों को इस अध्याय से जानकर लाभ उठाएं।

भवन निर्माण सम्बन्धी टोटके एवं उपाय

1. पुण्य नक्षत्र में भवन निर्माण करना चाहिए। इस नक्षत्र में भवन सम्बन्धी निर्माण कार्य करना सर्वोत्तम एवं शुभफल प्रद है।
2. ग्रह प्रवेश करते समय दान अवश्य करना चाहिए। ऐसा करना शुभफलदायी और सुख-सम्पन्नता के लिए आवश्यक है।
3. भवन की नींव भरते समय भूमि के चारों ओर जल डालकर रेखा खींच लें और चन्द्र की वस्तुओं से भरा बर्तन चालीस-तैंतालिस दिन तक दबा दें और परिवार में होने वाले शुभाशुभ प्रभाव पर दृष्टि रखें। बर्तन दबाने के समय से ही जन्मकुण्डली में शनि की भाव संख्या के दिन तक अपना शुभाशुभ प्रभाव अवश्य मिलेगा। अशुभ प्रभाव में परिवार में रोग, मुकदमा, झगड़ा या कार्यों में बाधाएं अनायास आ जायेंगी। यदि अशुभ प्रभाव होता है तो तुरन्त दबाया हुआ बर्तन निकालकर बहते पानी (नदी या नाले) में बहा देने पर अशुभ प्रभाव से मुक्ति मिल जाती है। यह ध्यान रखें कि इस नींव पर भवन निर्माण न करें, यदि करेंगे तो कुटुम्ब बर्बाद हो जायेगा।
4. जन्मकुण्डली में शनि तीसरे भाव में हो तो केतु का उपाय अवश्य करें। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो निर्धन हो जायेंगे और अशुभ फल से ग्रस्त हो जायेंगे।
5. जन्मकुण्डली में शनि चौथे भाव में हो तो अपना भवन नहीं बनाना

चाहिए। किराए के भवन में ही रहना शुभ है। यदि भवन बनाएंगे तो बड़े-बुजुर्गों (माता, दादी, सास, ननिहाल वाले) को कष्ट होगा।

6. जन्मकुण्डली में शनि पांचवे भाव में हो तो अपना भवन नहीं बनाना चाहिए। यदि भवन बनायेंगे तो सन्तान को कष्ट होगा या उसकी बलि ले लेंगे। यदि भवन बनाना ही चाहते हैं तो निर्माण से पूर्व शनि की बड़ी भारी वस्तु भैंसा या भैंस दान में दे दें या बलि के लिए जीवित ही स्वतन्त्र छोड़ दें। शनि की वस्तु भी दान में देना नहीं चाहते हैं तो अड़तालिस वर्ष के उपरान्त भवन निर्माण करें।
7. जन्मकुण्डली में शनि छठे भाव में हो तो 39 वर्ष के पूर्व भवन निर्माण न करें। यदि निर्माण करेंगे तो लड़की के सम्बन्धियों को नष्ट करेंगे।
8. जन्मकुण्डली में शनि सातवें भाव में हो तो निर्मित भवन अधिक प्राप्त होंगे। यदि भवन बिकने लगें तो प्राचीन भवन में दहलीज स्थापित करें या प्राचीन भवन की चौखट दहलीज सहित संभालकर रखेंगे तो भवन विक्रय नहीं होंगे।
9. जन्मकुण्डली में शनि ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो भवन का द्वार दक्षिण दिशा में न रखें। यदि रखेंगे तो रोग के कारण तड़प या गल-सड़कर मरना पड़ेगा।
10. जन्मकुण्डली में शनि बारहवें हो तो भवन निर्माण करते समय अधूरा न छोड़ें अर्थात् कार्य बीच में बन्द न करायें। चौकोर भवन बनाना शुभ होगा।
11. यदि भवन का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में हो तो स्त्री को कष्ट, जेल जाने की नौबत आए या विधुर का जीवन जीना पड़े। घर में रोग हो और आर्थिक तंगी व धनहानि से दो-चार होना पड़े। वर्ष में एक बार या कभी-कभी बकरी का दान अवश्य करना चाहिए। बकरी दान में नहीं दे सकते तो बुध सम्बन्धी वस्तुओं का दान करें।
12. भवन के समीप पीपल का वृक्ष हो तो उसकी सेवा करनी चाहिए। यदि सेवा नहीं करेंगे तो पीपल की छाया जहाँ तक पड़ेगी वहाँ तक भवन में अनिष्ट फल होंगे।

13. भवन के पास कुआं है तो उसमें श्रद्धासहित थोड़ा दूध डालते रहें। यदि नहीं डालेंगे तो अनिष्ट होगा और अशुभ फल ही मिलेंगे।
14. भवन में कभी भी कीकर का वृक्ष न लगाएं। यदि लगाएंगे तो निस्संतान बना देगा। यदि भवन में पहले से ही कीकर का वृक्ष लगा हो तो ब्रह्ममुहूर्त के समय जब तारों की छांव हो तो चालीस दिन तक प्रत्येक शनिवार को उसकी जड़ में पानी डालें।

रोग मुक्ति के टोटके एवं उपाय

यदि घर में रोग न डेरा डाल रखा है अर्थात् सदैव परिवार का कोई न कोई सदस्य बीमार रहता है तो यहां बताए गए उपाए करके रोग से बचें—

1. जब कभी किसी ग्रह सम्बन्धी रोग हो तो उस रोग से सम्बन्धित ग्रह का उपाय करें। ऐसा करने पर उस रोग से मुक्ति में सहायता मिलेगी।
2. जब कई ग्रह भाव में एकत्र हों तो उस ग्रह का उपाय करें जो वहां स्थित होकर अन्य ग्रहों को नष्ट कर रहा हो। उदाहरणतः गुरु और राहु की युति में राहु का उपाय करना चाहिए।
3. घर के प्रत्येक सदस्य और अतिथियों की संख्या गिनकर उसमें एक जोड़ लें। कुल संख्या के अनुसार मीठी रोटी प्रत्येक माह एक बार कुत्तों या कौवों को खिलाएं।
4. हलवा या पका हुआ फोफा कद्दू जो अन्दर से खोखला हो धर्म स्थल में तीन या छह माह बाद एक बार अवश्य रखें अथवा यह उपाय वर्ष में एक बार तो अवश्य करें।
5. रात्रि में रोगी के पास तांबे के दो सिक्के रखकर प्रातः किसी भंगी को चालीस-तैंतालिस दिन तक देते रहें। यह एक प्रकार का पूर्वजन्म का ऋण है जो चुकाना ही पड़ेगा।
6. श्मशान या कब्रिस्तान जाने का कभी सुअवसर मिले तो एक-दो पैसा वहां अवश्य गिरा दें। यह गुप्त दान है जो समय पर काम आता है।
7. वर्ष कुण्डली में यदि केतु आठवें भाव में हो तो उस वर्ष पुत्र, कान, रीड़ की हड्डी व जोड़ों पर अशुभ प्रभाव होगा। इस अशुभता

से बचने के लिए चन्द्र का उपाय करें। मन्दिर में पन्द्रह दिन तक बिना नागा चन्द्र की वस्तुएं दें या कुत्तों को पन्द्रह दिनों तक बिना नागा दूध पिलाएं।

सन्तान संबंधी टोटके एवं उपाय

1. सन्तान उत्पन्न होने के चालीस-तैंतालिस दिन पूर्व शनि में औरत के सिरहाने रखकर प्रातः धर्म स्थल में पहुँचा देना लाभदायक है।
2. स्त्री के गर्भवती हो जाने के दिन से उसके बाजू पर लाल धागा बांधें जो बाद में सन्तान उत्पन्न होने के उपरान्त बच्चे को बांध दें। माता को पुनः नया लाल धागा बांध दें। यह धागा बच्चे को अट्‌ठारह मास तक बांधें रखें। यह बच्चे की आयु वृद्धि के लिए उत्तम है।
3. गाय ग्रास देने से भी सहायता मिलती है।
4. सन्तान वृद्धि के लिए गणेश उपासना उत्तम है।
5. राहु अशुभ होने पर सन्तान जन्म से पूर्व जौ का पानी बोतल में बन्द करके रख लेने पर प्रसव सरलता से हो जाता है।
6. घर से सौ या अधिक दिन बाहर रहना हो तो नदी पार करते समय तांबे का सिक्का डालने से सन्तान कष्ट से रक्षा होती है।
7. दिन में मीठी रोटियां तन्दूर में लगवाकर कुत्ते को खिलाएं। मीठी रोटी लोहे के तवे पर न बनाकर तन्दूर में ही लगवाएँ।
8. बच्चे उत्पन्न होकर न बचते हों तो उत्पन्न होने पर मीठा न बाँटकर नमकीन वस्तु बांटें।
9. धर्मस्थान में गर्भ में आया बच्चे का प्रसव भी धर्मस्थान में होने पर बच्चा दीर्घायु होता है।
10. केतु उच्च होने पर बच्चों के पालन-पोषण से परिवार में श्रीवृद्धि हर प्रकार से होती है।
11. शुक्र उच्च हो तो स्त्री सेवा से उन्नति और लाभ होता है।
12. बच्चे के जन्म से पूर्व बर्तन में दूध व दूसरे बर्तन में खांड स्त्री का हाथ लगाकर रख लें। बच्चा बिना किसी भय के आराम से होगा। बाद में बर्तन समेत दोनों वस्तुएँ धर्मस्थल में दे दें। अधिक प्रयोग में आने वाले बर्तन देने से लाभ अधिक रहेगा।

मिश्रित टोटके एवं उपाय

1. अपने भोजन से गाय, कौआ व कुत्ते को तीन टुकड़े एक-एक करके प्रतिदिन खाने को दें।
2. भोजन रसोईघर में एक ओर बैठकर खाएँ या भोजन जहाँ बनाएँ वहाँ ही खाएँ तो राहु के कुप्रभाव से बचेंगे व मंगल-राहु का शुभ प्रभाव मिलेगा।
3. रात्रि में थोड़ा जल किसी बर्तन में अपने सिरहाने रखकर सोएँ और अगले दिन ऐसी जगह डाल दें जहाँ पर उसका अपमान न हो। इस जल को अपने प्रयोग में कभी न लाएँ। ऐसा करने पर आपसी झगड़े, अपमान, रोग, अपयश और परेशानियों से बचेंगे।
4. यदि शनि सातवें भाव में हो तो अपनी चतुरता न छोड़ें। यदि छोड़ेंगे तो परेशान हो जायेंगे और दुःखी व व्याकुल रहना पड़ेगा।

उपाय रूप में दान कब न करें ?

1. **उच्च ग्रह** की वस्तुओं का दान न करें और **नीच ग्रह** की वस्तुओं का दान किसी से न लें। यदि ऐसा करेंगे तो हानि होगी।
2. **चन्द्रमा छठे भाव में हो तो** पानी का दान या कुआँ, तालाब, बावड़ी, खुदवाना, नल लगवाना, प्याऊ लगवाना, दूजों को पानी पिलाना, दूजों के आराम के लिए धन अपनी आय से देना वंशहीन या सन्तानहीन होना पड़े।
3. **शनि आठवें हो तो** सराय, होटल या ऐसा मकान न बनाएँ जो लोग मुफ्त आराम करें। ऐसा करेंगे तो आर्थिक तंगी होगी और बेघर भी होना पड़ सकता है।
4. **शनि पहले या गुरु पांचवे हो तो** भिखारी को तांबे का सिक्का दान देना ठीक नहीं है। यदि ऐसा करेंगे तो अशुभ समाचार मिलेंगे और बच्चों की मृत्यु हो जाए।
5. **गुरु दसवें हो और चन्द्रमा चौथे भाव में हो तो** धर्म स्थल बनवाना या धार्मिक कार्य करने पर निर्दोष होने पर भी प्राण दण्ड या सजा मिले।
6. **शुक्र नौवें भाव में हो तो** लोगों को मुफ्त सहायता या अनाथ बच्चों की सहायता न करें। यदि करेंगे तो निर्धन या कंगाल हो जायेंगे।

7. **चन्द्रमा बारहवें भाव में हो तो** पंडित या धार्मिक प्रवचन या कथावाचक को भोजन कराना या मुफ्त शिक्षा देने का प्रबन्ध करना अशुभ होगा। कहने का तात्पर्य है कि अन्तिम अवस्था (मरते समय) में कोई पानी पिलाने वाला भी नहीं होगा। मृत्यु के समय शान्ति नहीं मिलेगी।
8. **गुरु सातवें भाव में हो तो** पुजारी को मुफ्त कपड़े न दें। यदि देंगे तो निर्धनता और निस्संतान होने का व्यर्थ के कारण बनेंगे।
9. **शनि छठे अशुभ हो तो** जब भतीजे या भतीजी का विवाह होगा तो वे निस्सन्तान, निर्धन व दुःखी होंगे। यदि चाचा अपनी आय से उनका विवाह करे तो फल शुभ हो। अशुभ समय में शनि की वस्तुओं का दान सहायता देगा परन्तु दत्तक पुत्र से दान कराने पर अशुभ व हानि हो।

ग्रह युतियों के टोटके एवं उपाय

1. ग्यारहवें भाव में **सूर्य-चन्द** की युति हो तो शराब व मांस से दूर रहने पर ही दीर्घायु होंगे।
2. **सूर्य-शुक्र** की युति किसी भी भाव में होने पर दुर्गा-पूजन लाभप्रद हो।
3. दसवें भाव में **सूर्य-शुक्र** की युति होने पर चौथे भाव के ग्रह सहायता करेंगे। चौथा भाव रिक्त हो तो चन्द्रमा का उपाय करें।
4. **सूर्य-शुक्र** की अशुभ युति होने पर निम्नलिखित उपाय करें—
   - स्त्री को सोने की चूड़ी या कड़ा पहनाएं।
   - स्त्री के भार के तुल्य चरी या अन्न का दान धर्म स्थल पर दें।
   - विवाह या सगाई के दिन से ही स्त्री-पुरुष गुड़ खाना छोड़ दें।
   - दिन में संभोग न करें।
   - पर स्त्री गमन से बचें।
   - सांप को दूध पिलाएं ।
   - दूध देने वाली गाय का दान करें।
5. **सूर्य-बुध** की युति केन्द्र (1, 4, 7, 10) भावों में हो तो लेखन या रात्रि में करने वाले कार्यों से लाभ होगा।

6. **सूर्य-बुध** की युति आठवें हो तो शीशे के बर्तन में गुड़ भरकर श्मशान में दबाएं।
7. **सूर्य-बुध** की युति ग्यारहवें भाव में हो तो पैतृक घर में धार्मिक लोगों को रखना चाहिए। ऐसा करने पर भाग्यवृद्धि होती है।
8. **सूर्य-शनि** की युति होने पर निम्नलिखित उपाय करें—
   - बादाम या नारियल बहते पानी में बहाना चाहिए।
   - दिन में संभोग नहीं करना चाहिए।
   - स्त्री को कष्ट हो तो सिर के बालों में तांबा, सोना मूंगा किसी न किसी रूप में धारण करना चाहिए।
9. **सूर्य-राहु** की युति हो तो उपाय के रूप यह सब करें—
   - जौ को बोझ तले अन्धेरे स्थान पर रखने पर चोरी या हानि नहीं होगी।
   - जौ को दूध या गोमूत्र में धोकर बहते पानी में बहाने या दान देन से बुखार से रक्षा होती है।
   - राहु की वस्तुएं नदी-नाले के बहते पानी में बहाना शुभ है।
   - तांबे का सिक्का रात भर या बारह बजे आग में जलाकर प्रातः नदी-नाले के बहते पानी में बहाना शुभ होगा।
10. **सूर्य-केतु** की युति हो तो सूर्य ग्रहण के समय केतु की वस्तुएं बहते पानी में बहाएं।
11. गोमूत्र घर पर छिड़कने से **केतु, शुक्र व बुध** का प्रभाव शुभ हो जाता है।
12. **चन्द्र-शुक्र** की युति हो तो गले में चान्दी धारण करें अथवा चान्दी की ठोस गोली पॉकिट में रखें।
13. **चन्द्र-शुक्र** की युति दूसरें भाव में हो तो कभी भी न कुआं खोदें और न खुदवाएं। यदि ऐसा करेंगे तो स्त्री को कष्ट होगा और बुढ़ापे में प्रेम का रोग लग जायेगा।
14. अपना व स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहे और आर्थिक तंगी रहे तो लाल धागा कलाई में सदैव बांधकर रखें।
15. बुध अशुभ या नीच हो तो मंगल व राहु के उपाय करके सहायता लेनी चाहिए।

16. **चन्द्र-शनि** की युति हो तो शनि व केतु का उपाय करना लाभदायक है। समान आयु के सम्बन्धी के साथ मिलकर कार्य करना लाभदायक है। चन्द्र ग्रहण में शनि की वस्तुएं बहते पानी में बहाएं।
17. दृष्टि कमजोर हो तो तैंतालिस दिन तक सादा पानी न पीएं। जब भी पानी पीएं उसमें कुछ न कुछ मिलाकर पीएं।
18. सांप को दूध पिलाने पर चन्द्रमा बलवान हो जाता है।
19. **शनि व चन्द्र** के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए सूर्य का उपाय करें।
20. **चन्द्रमा-राहु** की युति होने पर निम्न उपाय करें–
    - चन्द्र ग्रहण पर राहु की वस्तुएं बहते पानी में बहाएं।
    - ग्यारहवें भाव में स्थित चन्द्र का उपाय करें।
    - चन्द्र, मंगल एवं गुरु का उपाय भी कर सकते हैं।
21. **चन्द्र-केतु** की युति होने पर बुध व केतु की वस्तुओं का दान देना लाभदायी है।
22. विद्या हेतु धर्मस्थल में केतु की वस्तुएं दान करनी चाहिए। तीन केले अड़तालिस दिन तक मन्दिर में भी दान में दे सकते हैं।
23. **मंगल-बुध** की अशुभ युति हो तो मंगल का उपाय करके सहायता लेनी चाहिए।
24. **मंगल-शनि** की युति हो तो उपाय में ये सब कर सकते हैं–
    - मंगल या शनि का उपाय करें।
    - घोड़ी के बच्चा देने पर पहली बार का दूध शीशे के बर्तन में भरकर घर में स्थापित करने पर डाका, चोरी व धोखों से बचाव होता है।
    - माता की आज्ञा मानें।
    - चन्द्र का उपाय करें।
25. **मंगल-राहु** की युति हो तो निम्नलिखित उपाय करें–
    - मिट्टी के बर्तन में राहु की वस्तुएं (जौ, सरसों आदि) भरकर बहते पानी में बहाएं।
    - चूल्हे पर बैठकर भोजन करने से राहु अशुभ ही होगा।
    - मंगल का उपाय करने से भी सहायता मिलती है।

26. **बुध-शनि** की युति हो तो शराब, मांसादि का सेवन न करें। एहसान फरामोशी भी कदापि न करें।
27. **बुध-राहु** की युति हो तो उपाय में कच्ची मिट्टी की सौ गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन सौ दिन तक धर्मस्थल में पहुँचाएं। इसमें नागा नहीं होनी चाहिए। धर्मस्थल बदलना चाहें तो बदल सकते हैं।
28. **गुरु-सूर्य** की युति हो तो इसकी अशुभता पिता-पुत्र के एक साथ रहने पर दूर होगी। घर में सबसे प्राचीन चारपाई प्रयोग में लाएं। शुद्ध सोना घर में स्थापित करना भी शुभ है।
29. **गुरु-चन्द्र** की युति होने पर निम्नलिखित उपाय करने चाहिएं—
   ✠ चांदी का बर्तन घर के कोने में दबाएं।
   ✠ केतु की वस्तुएं जमीन में दबाएं या केतु का दो रंगा पत्थर चान्दी में जड़वाकर धारण करें।
   ✠ भंगी को दान देते रहें।
   ✠ कन्याओं का पूजन करें और उनका आशीर्वाद लें।
   ✠ नदी में तांबे का सिक्का बहाएं।
   ✠ दुर्गा उपासना करें।
   ✠ श्मशान में नल, कुआं या प्याऊ लगवाएं।
30. **बुध-शुक्र** की युति होने पर निम्नलिखित उपाय करें—
   ✠ दैनिक जीवन में मृगछाला का प्रयोग करें।
   ✠ रेवड़ियां बहते पानी में बहाएं।
   ✠ ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र का उपाय करें।
31. **बुध-गुरु** की युति के लिए अधोलिखित उपाय करें—
   ✠ नाक छिदवाएं।
   ✠ चांदी का तार चार या नौ दिन तक धारण करें।
   ✠ खाण्ड से भरा बर्तन भूमि में दबाएं।
32. **गुरु-शनि** की युति के लिए उपयोगी उपाय अधोलिखित हैं—
   ✠ परस्त्री गमन न करें।
   ✠ शराब, मांस और नशे का सेवन न करें।
   ✠ शनि का उपाय करें।

- चन्द्र का उपाय करें।
- शिव की उपासना करें।
- दूजों से मुफ्त का माल कभी न लें।

33. **शुक्र-मंगल** की युति हो तो मंगल का उपाय करें।
34. **गुरु-राहु** की युति हो तो निम्न उपाय करें—
    - केतु का उपाय करें।
    - सोना धारण करें।
    - मंगल का दान करें।
    - जौ दूध से धोकर लगातार 43 दिन तक पानी में बहाएं।
    - गुरु आठवें स्थित होने के सभी उपायकरें।
35. **गुरु-केतु** की युति हो तो पीले नींबू मन्दिर में दान करें।
36. **शुक्र-बुध** की युति हो तो निम्नलिखित उपाय करें—
    - चन्द्रमा का उपाय तब करें जब यह युति ग्यारहवें भाव में हो।
    - तीन लड़कियों के विवाहोपरान्त बुध का अशुभ फल नहीं मिलेगा।
    - बकरी का दान दें।
    - लड़की को गोदान दें।
    - सोने की पीले खोल वाली मोती की माला को दूध में धोकर धारण करें।
37. **शुक्र-शनि** की युति हो तो निम्नलिखित उपाय करें—
    - तांबे का पैसा बहते पानी में बहाएं।
    - दसवें भाव में जो ग्रह स्थित हो उसका उपाय करें।
38. **शुक्र-राहु** की युति होने पर अधोलिखित उपाय करने चाहिएं—
    - दूध और हरे नारियल का दान करें।
    - स्त्री के बाएं हाथ में चान्दी का छल्ला धारण करें।
    - स्त्री के हाथों या अपने हाथों नीला फूल सायंकाल में मिट्टी में तैंतालिस दिन तक लगातार बहाएं।
39. **शनि-राहु** की युति हो तो निम्नलिखित उपाय करें—
    - नीच राहु और नीच शनि का उपाय करें
    - बादाम और नारियल आग में भूनकर और तलकर कदापि न खायें।

40. **राहु-केतु** की युति होने पर निम्नलिखित उपाय करें—

- ✠ चन्द्र का उपाय करें अर्थात् चान्दी का टुकड़ा अपने पास रखें।
- ✠ केतु के लिए सूर्य का उपाय करें अर्थात् तांबा अपने पास रखें या बन्दर को गुड़ खाने को दें या गुड व तांबा बहते पानी में बहा दें।

ये उपाय करके इन ग्रहों (राहु-केतु) के मन का पाप पकड़ा जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन ग्रहों से सम्बन्धित घटनाएं होने लगेंगी।

41. **राहु-केतु की युति पहले** भाव में हो तो पहले सूर्य के स्थित होने का उपाय करें, **चौथे** राहु-केतु की युति हो तो चौथे गुरु का उपाय करें, **सातवें** राहु-केतु की युति हो तो सातवें शनि के स्थित होने का उपाय करें और **दसवें** राहु-केतु की युति हो तो दसवें मंगल के स्थित होने का उपाय करें।

42. **सूर्य-चन्द-राहु** की युति होने पर दुर्गा उपासना करें या बुध का उपाय करे। **सूर्य-चन्द्र-केतु** की युति होने पर भी यही उपाय करें।

43. **सूर्य-बुध-शुक्र** की युति हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

- ✠ कानों में स्वर्ण धारण करें।
- ✠ काला-सफेद कुत्ता पालें।
- ✠ शुद्ध चांदी का छल्ला धारण करें।
- ✠ लड़की के विवाह के समय तांबे की गागर साबुत मूंग से भरकर ढक्कन बन्द करके संकल्प रूप में दान में दे दें और अगले दिन नदी या नाले के बहते पानी में बहा दें।

44. **सूर्य-बुध-राहु** की युति होने पर चन्द्रमा का उपाय करें।

45. **सूर्य-बुध** की युति हो तो निम्नलिखित उपाय करें—

- ✠ इष्टदेव की उपासना करें।
- ✠ गायत्री पाठ करें।
- ✠ कन्यादान करें।
- ✠ गौ दान करें।
- ✠ दुर्गा पाठ करें।

- सब्ज रंग के तोते को पालें।
- स्याह रंग की मछलियों को अपनी खुराक के दशांश आटे की गोलियां बनाकर खिलाएं। यह दान चालीस सप्ताह तक करें।

46. **चन्द्र-मंगल-शनि** की युति होने पर मंगल का उपाय करें।
47. **चन्द्र-मंगल-राहु** की युति हो तो दूध में मीठा हलुआ बनाकर स्वयं खाएं और दूजों को भी खिलाएं।
48. **चन्द्र-बुध-शनि** की युति हो तो निम्न उपाय करें—
    - दूध व गुरु की वस्तुएं मन्दिर में दान करें।
    - मृगछाला का प्रयोग करे।
49. **बुध-शनि-राहु** की युति हो तो इन तीनों बुध, शनि और राहु का उपाय करें।
50. **गुरु-चन्द्र-बुध** की युति दूसरे, तीसरे चौथे भाव में हो तो बुध का उपाय करें। इन तीनों के अतिरिक्त अन्य भावों में युति हो तो गुरु का उपाय करें।
51. **गुरु-चन्द्र-शनि** की युति हो तो शनि का उपाय करें।
52. **गुरु-चन्द्र-केतु** की युति हो तो केतु का उपाय करें।
53. **गुरु-मंगल-बुध** की युति हो तो निम्नांकित उपाय करें—
    - तन पर सोना धारण करें।
    - यदि इन तीनों की युति पर राहु की दृष्टि पड़े तो जो कन्या राजस्वला न हो उसे बादाम देकर आशीर्वाद लें।
    - बकरी को कच्चे सफेद या काले चने दिन के समय खिलाएं।
54. **गुरु-बुध-शनि** की युति हो तो बुध को उच्च करें अर्थात् बुध की वस्तुएं कुएं में गिराएं।
55. **गुरु-शनि-राहु** की युति हो तो शनि की वस्तुएं जमीन में दबाएं।
56. **शुक्र-बुध-शनि** की युति हो तो निम्नलिखित उपाय करें—
    - अपनी खुराक से तीन टुकड़े निकालकर कौवे, कुत्ते व गाय को खाने को दें।
    - घर की छत में प्रकाश के लिए कोई रोशनदान न छोड़ें।
    - काली गाय या काले कुत्ते को रोटी दें।
    - घर में गाय या कुत्ता पालें।

✠ ध्यान रखें पड़ौसी या अन्य आपकी गाय या कुत्ते को रोटी न दें।

57. **शनि-राहु-केतु** की युति हो तो गौ ग्रास दें अर्थात् अपनी खुराक से तीन टुकड़े निकालकर गाय, कुत्ते और कौए को खाने के लिए दें।
58. **चन्द्र-शुक्र-मंगल-बुध** की युति हो तो यह प्रयास करना चाहिए कि लड़की का विवाह शीघ्र हो जाए।
59. **शुक्र-मंगल-बुध-राहु या केतु** की युति हो तो घर में दक्षिण द्वार की दहलीज के नीचे उसकी लम्बाई के बराबर चांदी का तार या पत्तर दबा दें।
60. **गुरु-सूर्य-शुक्र-बुध** की युति हो तो प्रातः सूर्य उपासना करें या उसको प्रणाम करें।
61. पांच ग्रहों की युति हो तो धार्मिक रहते हुए पापी ग्रहों की वस्तुएं मुफ्त बांटने से शुभ फल मिलेगा। शनि की बादाम सिगरेट, शराब, केतु की केले, तिल, खट्टी वस्तुएं और राहु की जौ, कोयला, कच्चा नारियल आदि वस्तुएं बांट सकते हैं।

सभी के लिए उपयोगी उपाय

1. आप अनचाहे झगड़ों, बीमारी और अनावश्यक खर्चों से परेशान हैं तो मीठी रोटी जानवरों को बिना नागा के निरन्तर खाने को दें।
2. रात्रि में सोते समय बुरे स्वप्न न आएं और नींद अच्छी आए, इसके लिए सिरहाने तांबे के बर्तन में जल भरकर रखें और अगले दिन वह जल पेड़ या तुलसी के पेड़ पर डाल दें।
3. आर्थिक तंगी हो और ऋण बढ़ रहा हो तो अपनी खुराक में से प्रतिदिन कौए को रोटी को खाने को दें।
4. अपने भोजन में से एक-एक टुकड़ा गाय, कौवे और कुत्ते को प्रतिदिन दें।

इस अध्याय में अनेक प्रकार के उपाय बताये गए हैं। इन उपायों को आवश्यकतानुसार व्यवहार में लाकर लाभ उठाना चाहिए क्योंकि लाल किताब के उपाय सरल, प्रभाव और कम खर्चीले हैं। अधिकांश उपाय तो ऐसे हैं जिनमें खर्चा होता ही नहीं है।

7

शनि की साढ़े साती और लाल किताब के टोटके एवं उपाय

इस अध्याय में शनि की साढ़े साती की लाल किताब के आधार पर चर्चा करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि शनि की साढ़े साती होने पर लाल किताब के कौन से टोटके और उपाय करें, इसकी चर्चा यहां करेंगे।

शनि की साढ़े साती से क्या तात्पर्य है ?

शनि गोचर में परिभ्रमण करता हुआ जन्मराशि से बारहवें भाव में आता है तब यहां वह ढाई वर्ष तक रहता है, बाद में जन्मराशि में ढाई वर्ष रहता है और फिर जन्मराशि से दूसरे भाव में ढाई वर्ष रहता है इस प्रकार साढ़े सात वर्ष तक इन तीन भावों में रहने के कारण इसे शनि की साढ़े साती कहते हैं।

कैसे जानें कि आप पर साढ़े साती है या नहीं ?

आप अपनी जन्मपत्री देखें उसमें चन्द्रमा जिस राशि में स्थित हो उसी राशि को जन्म राशि कहते हैं।

जन्म राशि से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में गोचरवश शनि जब आता है तब शनि की साढ़े साती रहती है। अब यह बताते हैं कि किस राशि पर शनि आए तो किस जन्मराशि वाले पर शनि की साढ़े साती का कुप्रभाव होगा।

1. जब **मीन, मेष और वृष राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **मेष राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।
2. जब **मेष, वृष और मिथुन राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **वृष राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।
3. जब **वृष, मिथुन और कर्क राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **मिथुन राशि वालों** की साढ़े साती है।
4. जब **मिथुन, कर्क और सिंह राशि, पर शनि** गोचरवश रहता है तो **कर्क राशि वालों** की साढ़े साती रहती है
5. जब **कर्क, सिंह और कन्या राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **सिंह राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।
6. जब **सिंह, कन्या और तुला राशि पर शनि** गोचरवश रहतो है तो **तुला राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।
8. जब **तुला, वृश्चिक और धनु राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **वृश्चिक राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।
9. जब **वृश्चिक, धनु और मकर राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **धनु राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।
10. जब **धनु, मकर, और कुम्भ राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **मकर राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।
11. जब, **मकर, कुम्भ और मीन राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **कुम्भ राशिवालों** की साढ़े साती रहती है।
12. जब, **कुम्भ, मीन और मेष राशि पर शनि** गोचरवश रहता है तो **मीन राशि वालों** की साढ़े साती रहती है।

मेष राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर मेष राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

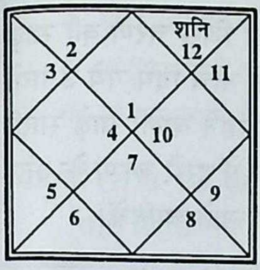

पहला चरण

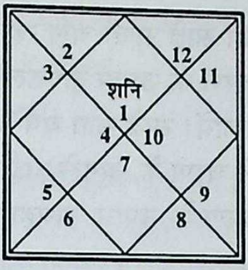

दूसरा चरण

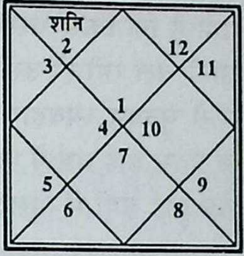

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- शराब न पिएं और मांस-मछली का सेवन न करें।
- नंगे पैर मन्दिर या धर्मस्थल में जायें।
- मिट्टी के बर्तन में सरसों का तेल भरकर पानी के अन्दर दबाएं।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी का छल्ला मध्यमिका उंगली में धारण करें।
- सूखे नारियल व बादाम का दान क़रें।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- कन्याओं की सेवा या दुर्गा पूजन करें।
- शराब न पिएं और मांस-मछली का सेवन न करें।
- बन्दर की पालना करें या गुड़ खिलायें।
- गणेश जी की पूजा करें।
- खुशी के समय मीठा न बाटें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- भैरों के मन्दिर में शराब को भेंट चढ़ाएं।
- नंगे पैर मन्दिर या धर्मस्थल में जाएं।
- सांप को दूध पिलाएं।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- आठ किलो उड़द जल में बहाएं।

वृष राशि के साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर वृष राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया

गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

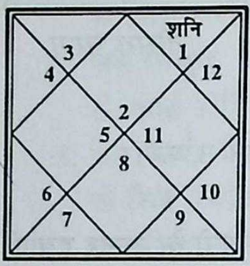

पहले चरण

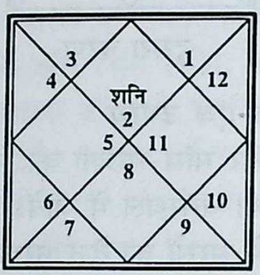

दूसरा चरण

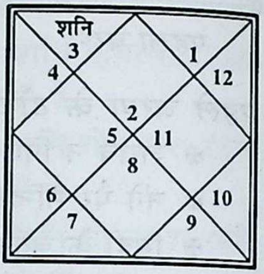

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- ✠ सूखा नारियल और बादाम बहते जल में बहाएं।
- ✠ शराब न पियें और मांस-मछली न खाएं।
- ✠ भूरी भैंस की पालना या सेवा करें।
- ✠ सांप को दूध पिलायें या शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ सुरमा वीराने में दबायें।
- ✠ तीन कुत्तों को रोटी डालें।
- ✠ चाल-चलन ठीक रखें।
- ✠ वटवृक्ष की जड़ में मीठा दूध डालें और दूध से भीगी मिट्टी का तिलक करें।
- ✠ बन्दर की पालना करें या उसे गुड़ खिलाएं।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहने।
- ✠ हनुमान जी को सिन्दूर लगाएं।

- छोटे बच्चों को दो दुकानों से बराबर फल लेकर बाँटें।
- उड़द बहते जल में बहाएं।
- शराब जल में बहाएं।

मिथुन राशि की साढ़े साती और उसके उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर मिथुन राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

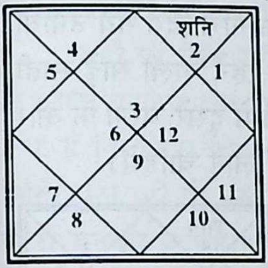

पहला चरण

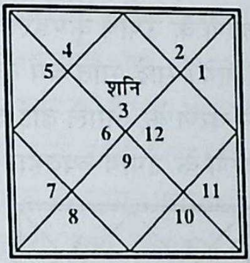

दूसरा चरण

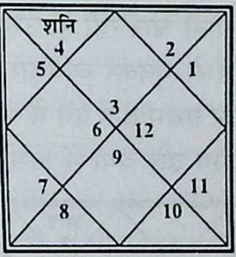

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- सांप को दूध पिलायें।
- काले भैंसे की नाल की अंगूठी धारण करें।
- शनि की उपासना करें।
- सूखा नारियल या बादाम जल में बहाएं।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें या कराएं।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- बावडी में तांबे का पैसा डालें।
- सांप को दूध पिलायें या शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- विवाह आदि के समय मीठे के साथ-साथ नमक भी बाँटें।

✠ बच्चों को दो दुकानों से आम लेकर बराबर--बराबर बांटें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

✠ मजदूर की सेवा या पालना करें।
✠ शराब न पिएं और चाल-चलन ठीक रखे।
✠ धर्म स्थान में नंगे पैर जाएं।
✠ नाव की कील की अंगूठी या छल्ला पहनें।
✠ हनुमान जी की उपासना करें।

कर्क राशि के साढ़े साती और उसके टोटके व उपाय

यहाँ पर कर्क राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

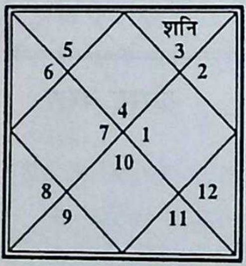

पहला चरण

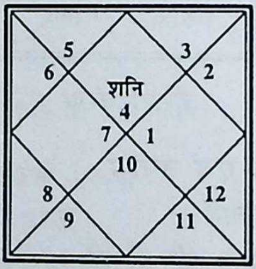

दूसरा चरण

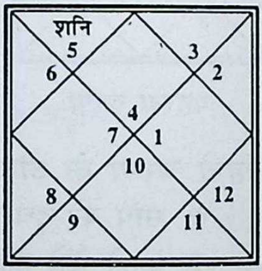

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

✠ बच्चों को दो दुकानों से आम लेकर बराबर-बराबर बांटें।
✠ नाव की कील की अंगूठी या छल्ला मध्यमिका अंगुली में धारण करें।
✠ बच्चों को दोपहर के समय हलवा बांटें।
✠ नंगे पैर मन्दिर या धर्मस्थल में जायें।
✠ सूखा नारियल जल में बहाएं।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- तीन कुत्तों को रोटी डालें।
- सुरमा वीराने में दबायें।
- शराब न पियें और मांस-मछली न खायें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- शराब जल में बहाएं।
- नाव की कील की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- मजदूर व्यक्ति की सेवा या पालना करें।
- शराब भैरों मन्दिर में चढ़ावें।

सिंह राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर सिंह राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

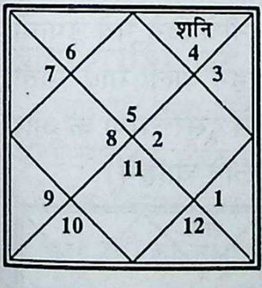

पहला चरण

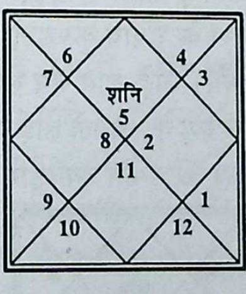

दूसरा चरण

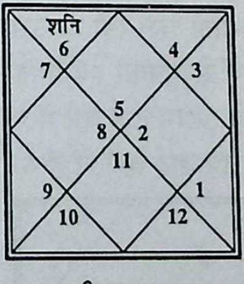

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।

- ✠ हनुमान उपासना करें।
- ✠ सांप को दूध पिलाएं या शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं।
- ✠ मिट्टी का बर्तन तेल से भरकर पानी के अन्दर दबाएं।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ बन्दर की पालना करें या उसे गुड़ खिलाएं।
- ✠ खुशी के समय मिठाई न बांटें।
- ✠ गणपति उपासना करें।
- ✠ बावड़ी में तांबे के पैसे गिरायें।
- ✠ मछलियां को आटे की गोलियां डालें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ उड़द बहते पानी में बहाएं।
- ✠ चाल-चलन ठीक रखें।
- ✠ काले भैंसे की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- ✠ हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- ✠ शराब न पिएं और मांस-मछली भी न खायें।

कन्या राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर कन्या राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

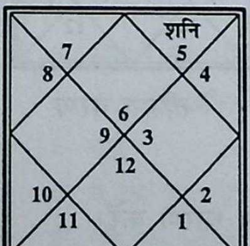

पहला चरण

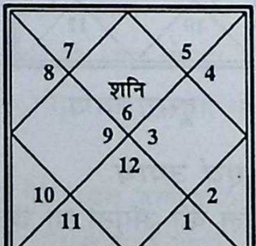

दूसरा चरण

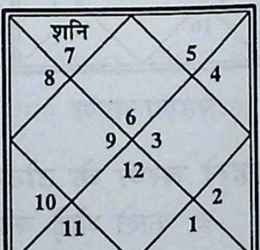

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- काले भैंसे की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- नंगे पैर मन्दिर या धर्म स्थल में जाएं।
- कौवे को रोटी डाले।
- दुर्गा उपासना करें।
- कन्याओं की सेवा करें।
- मजदूर की सेवा या पालना करें।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- नौ वर्ष से छोटी कन्याओं को आम खाने को दें।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें या करायें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय।

- काले भैंसे की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- शराब जल में बहाएं।
- शराब न पियें।
- मांस-मछली भी न खाये।
- नंगे पैर मन्दिर धर्म स्थल में जाएं।
- चाल-चलन ठीक रखें।

तुला राशि की साढ़े साती और टोटके एवं उपाय

यहाँ पर तुला राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

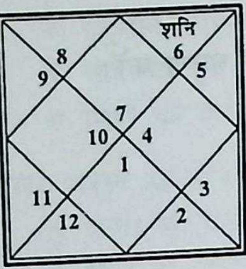

पहला चरण

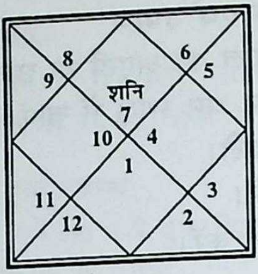

दूसरा चरण

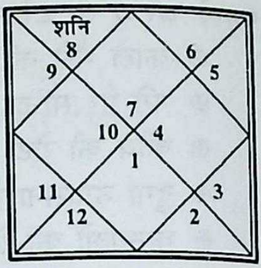

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- नंगे पैर मन्दिर में जायें।
- कौवे को रोटी डालें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सूखा नारियल और बादाम बहते जल में बहाएं।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- खुशी के समय मिठाई के साथ नमकीन भी बांटें।
- कुत्ते की पालना या सेवा करें।
- हनुमान की उपासना करें।
- वटवृक्ष को मीठा दूध डालें और उस दूध से भीगी मिट्टी का तिलक करें।
- शराब न पियें और चाल-चलन भी ठीक रखें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- नाव की कील की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें।
- नंगे पैर धर्मस्थल में जाएं।
- उड़द बहते जल में बहाएं।
- सांप को दूध पिलाएं या शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।

वृश्चिक राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर वृश्चिक राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह

दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

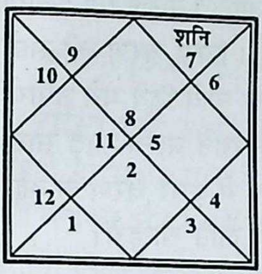

पहला चरण

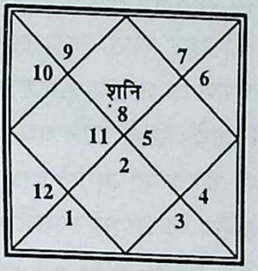

दूसरा चरण

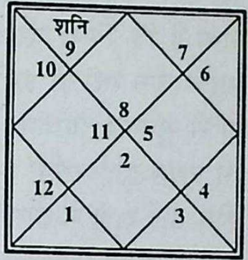

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ शराब न पियें और मांस-मछली भी न खायें।
- ✠ मिट्टी का बर्तन सरसों के तेल से भरकर पानी के अन्दर दबाएं।
- ✠ सांप को दूध पिलायें और शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं।
- ✠ चाल-चलन ठीक रखें।
- ✠ शनि उपासना करें।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ काली मछली को आटे की गोलिया डालें।
- ✠ बन्दर की पालना करें या उसे गुड़ खिलाएं।
- ✠ सुरमा जमीन में दबायें।
- ✠ काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- ✠ अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- ✠ काले घोड़ें की नाल की अंगूठी पहनें।
- ✠ हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- ✠ शराब न पियें।
- ✠ मांस-मछली भी न खायें।

- शराब जल में बहाएं।
- मजदूर की पालना या सेवा करें।

धनु राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर धनु राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

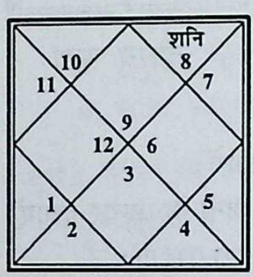

पहला चरण

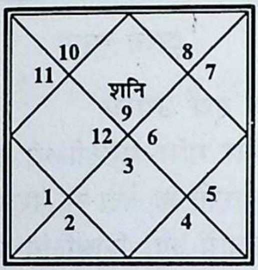

दूसरा चरण

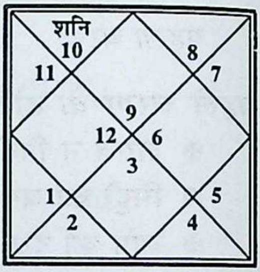

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- काले भैंसे की सेवा करें।
- नाव की कील की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ाएं।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- कन्याओं की सेवा या दुर्गा पाठ करें।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- शनि स्रोत का पाठ करें।
- नारियल के खोपरे में तिल और गुड़ भरकर जमीन में दबाएं।
- बावड़ी में चार सिक्के गिराएं।
- खुशी के समय मिठाई के साथ नमकीन बांटें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।

्सरे चरण के टोटके एवं उपाय

- सांप को दूध पिलाएं।
- शराब न पियें और मांस-मछली न खाएं।
- सूर्योदय से पहले शराब कच्ची जमीन में गिराएं।
- काले भैंसे की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें।

्र राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर मकर राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की ्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया ा है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े ी चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों े चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती ्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

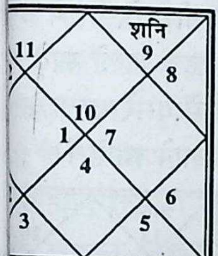

पहला चरण

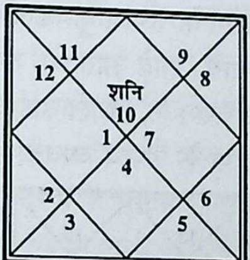

दूसरा चरण

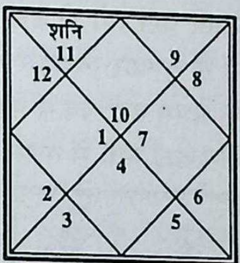

तीसरा चरण

ले चरण के टोटके एवं उपाय

- काले भैंसे की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- नौ वर्ष से कम आयु के बच्चों को आम या मिठाई बांटे।
- भूरी भैंस की सेवा या पालना करें।
- शराब न पियें और मांस-मछली भी न खाएं।
- नंगे पैर धर्म स्थान में जाएं।

चरण के टोटके एवं उपाय

- अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।

- बन्दर की पालना करें या उसे गुड़ खिलायें।
- सुरमा वीराने में दबाएं।
- तीन कुत्तों को रोटी डालें या कुत्तों की सेवा करें।
- शराब न पियें और चाल-चलन भी ठीक रखें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- उड़द बहते पानी में बहाएं।
- हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ाएं।
- शराब न पिएं और शनि स्रोत का पाठ करें।
- नाव की कील की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- शराब जल भी बहाएं।

कुम्भ राशि की साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर कुम्भ राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े साती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों में से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती के प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और शेष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

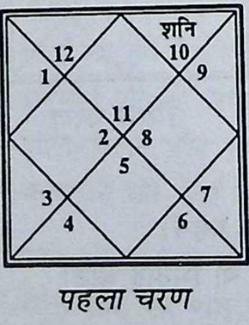

पहला चरण

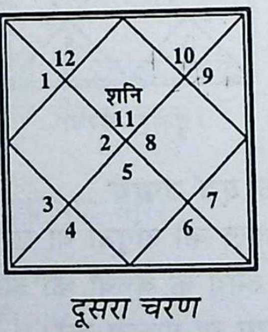

दूसरा चरण

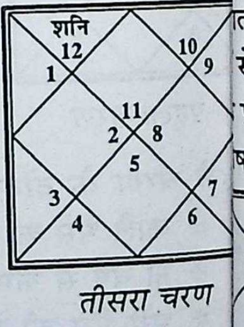

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- शराब न पियें और मांस-मछली न खाएं।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें या कराएं।
- शनि उपासना करें।

- सांप को दूध पिलायें या शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं।
- सूखा नारियल और बादाम बहते जल में बहाएं।

सरे चरण के टोटके एवं उपाय

- नारियल के खोपरे में तिल व शक्कर भरकर जमीन में दबायें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला धारण करें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- काली मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शुभ काम या खुशी के समय मिठाई के साथ नमकीन बांटें।

सरे चरण के टोटके एवं उपाय

- महामृत्युञ्जय का जाप करें।
- उड़द बहते जल में बहाएं।
- शराब भैरव के मन्दिर में चढ़ाएं।
- काले भैंसे की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- सूर्योदय से पहले शराब कच्ची जमीन पर गिरायें।

न राशि के साढ़े साती और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर मीन राशि की साढ़े साती के प्रत्येक चरण (ढाई वर्ष) की ण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति भाव में अंकित करके यह दर्शाया या है कि किस चरण की साढ़े साती चल रही है। जिस चरण की साढ़े ती चल रही हो उसी चरण के उपाय कुण्डली के नीचे दिये गये उपायों से चुनकर व्यवहार में लायें। साढ़े सात वर्ष तक रहने वाली साढ़े साती प्रथम ढाई वर्ष में पहले चरण के, अगले ढाई वर्ष में दूसरे चरण के और ष ढाई वर्षों में तीसरे चरण के उपाय व्यवहार में लाने चाहियें।

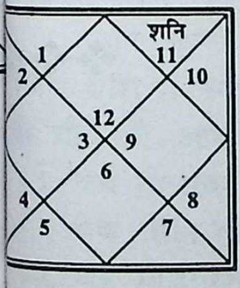

पहला चरण

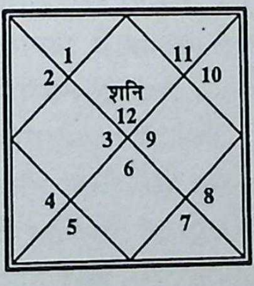

दूसरा चरण

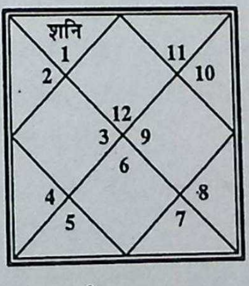

तीसरा चरण

पहले चरण के टोटके एवं उपाय

- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें या कराएं।
- भूरी भैंस की सेवा या पालना करें।
- काले भैंसे की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- नारियल और बादाम का दान करें।

दूसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- सुरमा जमीन में दबायें।
- वटवृक्ष को मीठा दूध डालें और उस दूध से भीगी मिट्टी का तिलक करें।
- तीन कुत्तों को रोटी डालें।
- अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।

तीसरे चरण के टोटके एवं उपाय

- सूर्योदय से पहले शराब कच्ची जमीन पर गिराएं।
- मजदूर की सेवा या पालना करें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- नंगे पैर धर्म स्थल में जाएं।

इस अध्याय में द्वादश राशि के लिए शनि की साढ़े साती के तीनों चरणों (प्रथम ढाई वर्ष, द्वितीय ढाई वर्ष और तृतीय ढाई वर्ष) के टोटके व उपाय बता दिए गए हैं। इन उपायों को व्यवहार में लाकर शनि की साढ़े साती के अशुभ प्रभाव से बचकर लाभ का मार्ग प्रशस्त करना न भूलें।

8

शनि की ढैय्या और लाल किताब के टोटके एवं उपाय

इस अध्याय में शनि की ढैय्या की लाल किताब के आधार पर चर्चा करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि शनि की ढैय्या होने पर लाल किताब के कौन से टोटके एवं उपाय करने चाहियें, उनकी चर्चा यहां करेंगे।

शनि की ढैय्या से क्या तात्पर्य है ?

शनि गोचरवश परिभ्रमण करता हुआ जन्म राशि से चौथे या आठवें भाव में आता है तो लघु साढ़े साती अर्थात् लघु कल्याणी ढैय्या होगी।

कुछ विद्वान जन्मराशि से पांचवे और नौवें स्थित शनि भी अशुभ मानते हैं। शनि की ढैय्या ढाई वर्ष रहती है।

कैसे जानें कि आप पर शनि की ढैय्या है या नहीं ?

आप अपनी जन्मपत्री में चन्द्रमा देखें किस राशि में स्थित है। जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो वही आपकी जन्मराशि है। जन्मराशि से चौथे और आठवें गोचरवश शनि आने पर ढैय्या होती है।

1. जब गोचरवश शनि **कर्क** और **वृश्चिक** राशि पर आता है तो **मेष राशि वालों** की शनि की ढैय्या रहती है।
2. जब गोचरवश शनि **सिंह** और **धनु** राशि पर आता है तो **वृष राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।

3. जब गोचरवश शनि **कन्या** और **मकर** राशि पर आता है तो **मिथुन राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
4. जब गोचरवश शनि **तुला** और **कुंभ** राशि पर आता है तो **कर्क राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
5. जब गोचरवश शनि **वृश्चिक** और **मीन** राशि पर आता है तो **सिंह राशि वालों की** शनि ढैय्या रहती है।
6. जब्र गोचरवश शनि **धनु** और **मेष** राशि पर आता है तो **कन्या राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
7. जब गोचरवश शनि **मकर** और **वृष** राशि पर आता है तो **तुला राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
8. जब गोचरवश शनि **कुंभ** और **मिथुन** राशि पर आता है तो **वृश्चिक राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
9. जब गोचरवश शनि **मीन** और **कर्क** राशि पर आता है तो **धनु राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
10. जब गोचरवश शनि **मेष** और **सिंह** राशि पर आता है तो **मकर राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
11. जब गोचरवश शनि **वृष** और **कन्या** राशि पर आता है तो **कुंभ राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।
12. जब गोचरवश शनि **मिथुन** और **तुला** राशि पर आता है तो **मीन राशि वालों की** शनि की ढैय्या रहती है।

मेष राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय

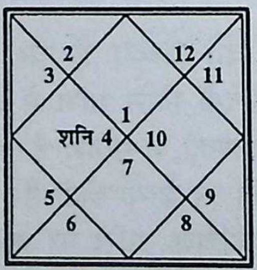

पहली ढैय्या

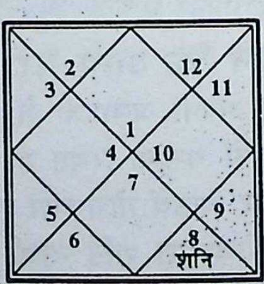

दूसरी ढैय्या

यहाँ पर मेष राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं

आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- काले घोड़े की नाल की अंगूठी धारण करें।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें या करवाएं।
- कौवे को अपने भोजन से रोटी डालें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- सांप को दूध पिलाएं
- शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- उड़द जल में प्रवाहित करें।
- नंगे पैर धर्म स्थल में जायें।
- अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।
- धर्म स्थल में बादाम चढ़ाएं।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।

वृष राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय

यहाँ पर वृष राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

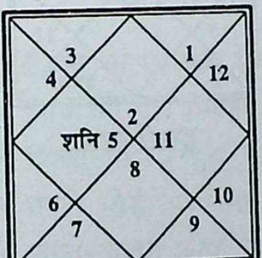

पहली ढैय्या

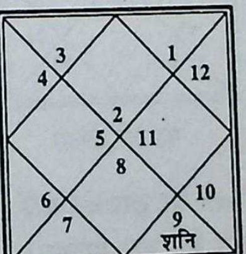

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- हरा और काला रंग प्रयोग में न लाएं।
- शराब न पियें
- मांस-मछली न खायें।
- दूध कुएं में डालें।
- नाव के कील की अंगूठी पहनें।
- चाल-चलन ठीक रखें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- भवन निर्माण न करें और न ही निर्मित भवन खरीदें।
- कुत्ते की पालना करें या रोटी डालें।
- बादाम बहते पानी में बहाएं।
- नंगे पैर धर्म स्थल में जायें।
- भंगी की सेवा करें।

मिथुन राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय

यहाँ पर मिथुन राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

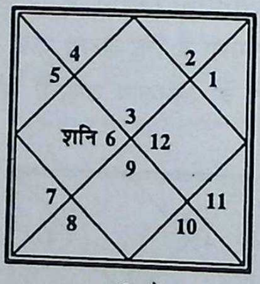

पहली ढैय्या

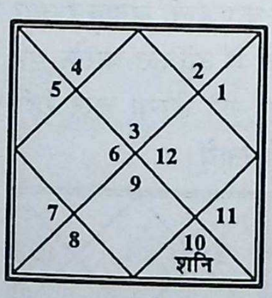

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- सांप को दूध पिलाएं।
- महामृत्युञ्जय का जाप करें या कराएं।

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलायें।
- काला कपड़ा न पहनें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- बादाम मन्दिर में चढ़ाएं।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शराब न पीएं
- मांस-मछली न खायें।
- अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।
- उड़द बहते पानी में बहाएं।

कर्क राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय

यहाँ पर कर्क राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

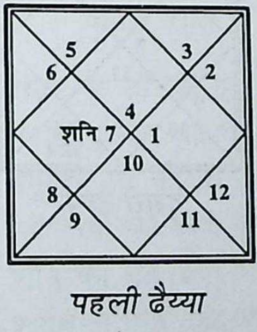

पहली ढैय्या

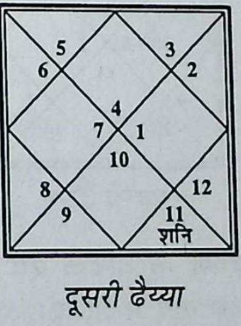

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- सांप को दूध पिलाएं
- शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी या छल्ला पहनें।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- कौवे को अपने भोजन का कुछ भाग खाने को दें।

- शराब न पिएं।
- मांस-मछली न खायें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- ब़न्द गली के मकान में न रहें।
- चांदी का चौकौर टुकड़ा पास में रखें।
- पत्थर पर बैठ कर दूध से स्नान करें।
- भंगी की सेवा करें।
- नंगे पैर धर्म स्थल में जायें।

सिंह राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय

यहाँ पर सिंह राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

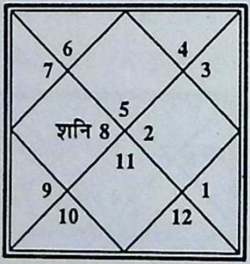

पहली ढैय्या

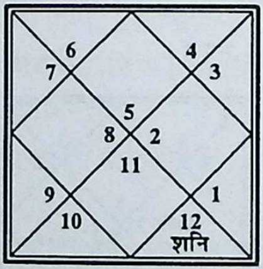

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- दूध कुएं में गिराएं।
- नाव की कील की अंगूठी पहनें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- काले रंग का कपड़ा न पहनें।
- सांप को दूध पिलाएं।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- नंगे पैर जमीन पर न नहाएं।

- उड़द बहते पानी में बहाएं।
- भवन निर्माण न करें और न ही निर्मित भवन खरीदें।
- बादाम मन्दिर में चढ़ाएं।
- अन्धे व्यक्तियों की सेवा करें।

कन्या राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय

यहाँ पर कन्या राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

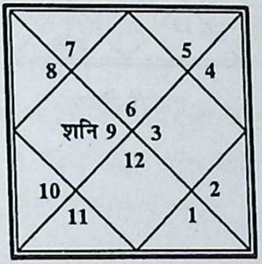

पहली ढैय्या

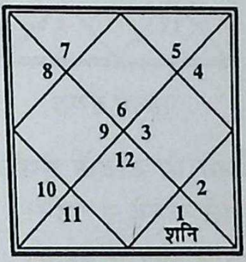

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- महामृत्युञ्जय का जाप स्वयं करें या अन्य से करायें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- मछलियों को आटे की गोलियां डालें।
- शनि का व्रत करें।
- शराब न पियें और मांस-मछली न खायें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- कुत्ते को रोटी डालें।
- गणेश जी की आराधना करें।
- उड़द बहते पानी में बहाएं।
- बन्द गली का मकान हो तो उसमें न रहें।
- चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास रखें।

तुला राशि के ढैय्या और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर तुला राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

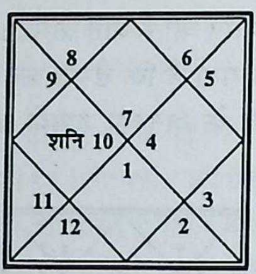

पहली ढैय्या

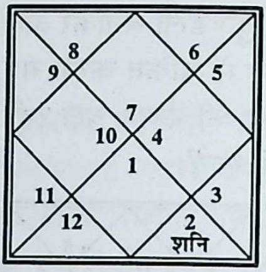

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- काले कपड़े न पहनें।
- शराब जल में बहाएं।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी धारण करें।
- दूध कुएं में गिराएं।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करें।
- उड़द जल में प्रवाहित करें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- नंगे पैर धर्म स्थल में जायें।
- नहाते समय पांव का तलवा जमीन पर न लगाएं।

वृश्चिक राशि की ढैय्या और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर वृश्चिक राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती

है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

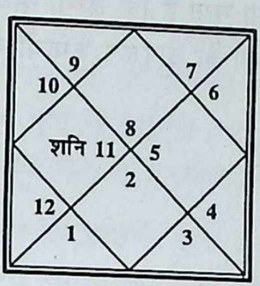

पहली ढैय्या

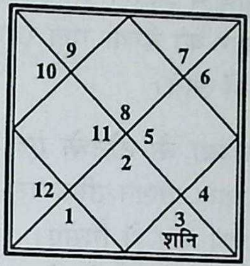

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- हरा रंग प्रयोग न करें।
- नाव के कील की अंगूठी पहनें।
- शराब न पियें और मांस-मछली न खायें।
- शराब जल प्रवाहित करें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- चांदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।
- बादाम जल में प्रवाहित करें।
- पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करें।
- शराब न पियें और मासं-मछली न खायें।
- भवन में दरारें पड़ जाएं तो मरम्मत कराएं।

धनु राशि की ढैय्या और उसके टोटके एवं उपाय

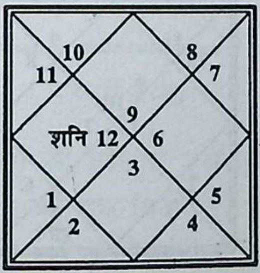

पहली ढैय्या

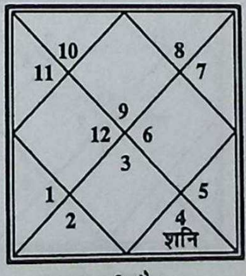

दूसरी ढैय्या

यहाँ पर धनु राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- चाल-चलन ठीक रखें।
- दूध कुएं में गिराएं।
- कौवे को अपने भोजन का कुछ भाग दें।
- काला कपड़ा न पहनें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलायें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान न करें।
- चांदी का चौकोर टुकड़ा पास रखें।
- उड़द जल में प्रवाहित करें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- नहाते समय पांव का तलवा जमीन पर न लगे।

मकर राशि की ढैय्या और उसके टोटके व उपाय

यहाँ पर मकर राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

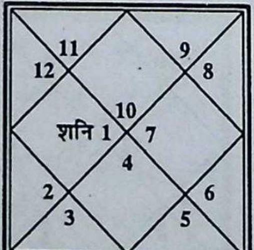

पहली ढैय्या

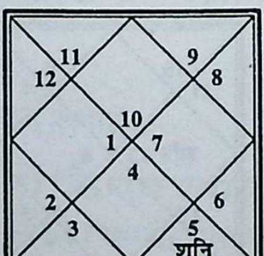

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- महामृत्युञ्जय का जाप करें या कराएं।
- काले घोड़े की नाल की अंगूठी पहनें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।
- दूध कुएं में गिरायें।
- शराब जल में प्रवाहित करें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- अन्धे व्यक्ति की सेवा करें।
- पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करें।
- चांदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।
- मन्दिर में बादाम चढ़ाएं।
- भवन में दरारें पड़ जायें तो मरम्मत कराएं।

कुम्भ राशि की ढैय्या और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर कुम्भ राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

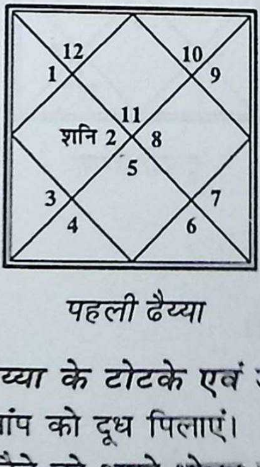

पहली ढैय्या

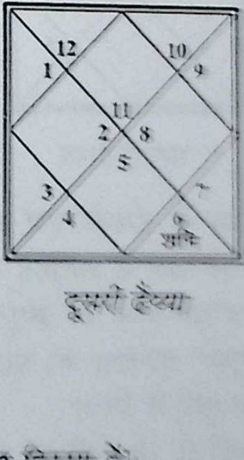

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- सांप को दूध पिलाएं।
- कौवे को अपने भोजन का कुछ हिस्सा दें।
- काले रंग के कपड़े न पहनें।

- शराब न पियें।
- मांस-मछली न खाएं।
- चाल-चलन ठीक रखें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- नहाते समय पांव का तलवा जमीन पर न लगाएं।
- नंगे पैर धर्म स्थान में जायें।
- बादाम जल में प्रवाहित करें।
- चांदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।
- पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करें।

मीन राशि की ढैय्या और उसके टोटके एवं उपाय

यहाँ पर मीन राशि की ढैय्या के दोनों प्रकारों (पहली ढैय्या एवं दूसरी ढैय्या) की कुण्डली बनाकर और उसमें शनि की स्थिति क्रमशः चौथे एवं आठवें भाव में अंकित करके यह दर्शाया गया है कि ढैय्या कब रहती है। जिस प्रकार की ढैय्या चल रही हो उसी के अनुरूप उपायों को चुनकर व्यवहार में लायें।

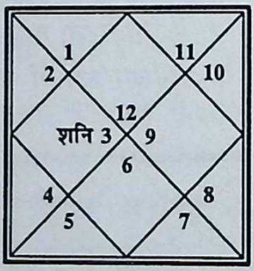

पहली ढैय्या

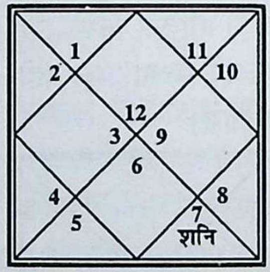

दूसरी ढैय्या

पहली ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- शराब जल में प्रवाहित करें।
- नाव की कील की अंगूठी पहनें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दूध कुएं में गिराएं।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलायें।
- हरे रंग का अधिकाधिक प्रयोग करें।

दूसरी ढैय्या के टोटके एवं उपाय

- पत्थर पर बैठकर दूध से स्नान करें।
- उड़द जल में प्रवाहित करें।
- भवन में दरारें पड़ जाएं तो मरम्मत कराएं।
- नहाते समय पांव का तलवा जमीन पर न लगाएं।
- चांदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।

इस अध्याय में द्वादश राशि के लिए शनि की दोनों ढैय्या (पहली व दूसरी) अर्थात् दोनों के अलग-अलग टोटके एवं उपाय बता दिए गए हैं। इन उपायों को व्यवहार में लाकर शनि की ढैय्या के अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाकर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

9

मंगलीक विचार और लाल किताब के टोटके एवं उपाय

इस अध्याय में मंगलीक विचार और मंगलीक दोष को दूर करने के लाल किताब के टोटके एवं उपाय बातयेंगे।

मंगली से क्या तात्पर्य है ?

इसके अन्तर्गत यह विचार किया जाता है कि मंगल कितना अमंगल है। कुंडली में 1, 4, 7, 8, व 12वें भाव की अपनी एक अलग महत्ता है। **पहले भाव** से शरीर, **चौथे भाव** से सुख अर्थात् इस भाव से भूमि, घर, वाहन एवं उपयोग में आने वाली आवश्यक सामग्री, **सप्तम भाव** से काम, पति या पत्नी अथवा रति-सुख, **अष्ठम भाव** जीवन में आने वाली बाधाओं व मृत्यु का द्योतक है अथवा आयु विचार एवं **द्वादश भाव** व्यय अथवा क्रय-शक्ति का सूचक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्योतिष शास्त्र के द्वारा किसी के पारिवारिक सुख-दुःख का विचार करते समय इन भावों को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। इन भावों का सुख तभी मिल सकता है जबकि इन भावों में पाप ग्रह ना हो और ना ही पाप ग्रह से दृष्ट हो।

मंगली दोष क्या है ? मंगल पाप ग्रह है और जब यह ग्रह लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में बैठता है तो अपना कुप्रभाव दिखलाता है।

जातक के **लग्न** में मंगल हो या दृष्टि पडे तो स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, स्वभाव उग्र एवं जिद्दी होता है।

चतुर्थ में मंगल हो या दृष्टि पड़े तो दैनिक भोगोपभोग की वस्तुओं की अल्पता रहती है।

मंगल सप्तम में हो या दृष्टि पड़े तो पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं रहता ।

मंगल आठवें स्थित हो या दृष्टि पड़े तो जीवन में बाधाएं और अनिष्ट होता हैं। मंगल द्वादश में स्थित हो या दृष्टि पड़े तो व्यय अधिक हो, मन में चिन्ता एवं परेशानी हो।

अतः इन पांचों भावों में से किसी स्थान में मंगल हो तो जिसकी कुंडली में हो उसे मंगली कहा जाता है।

लग्न के अतिरिक्त चन्द्र राशि या शुक्र से भी इन पांचों भावों में मंगल हो, तो भी मंगली दोष होता है।

मंगल, शनि, सूर्य, राहु केतु पाप ग्रह है, ये ग्रह नैसर्गिंक रूप से पापी है और निज दृष्टि, युति या स्थिति से किसी भी भाव के शुभ फल को नष्ट करने की सामर्थ्य रखते हैं इसलिए इन पाप ग्रहों के 1, 4, 7, 8, व 12वें भाव में होने पर मंगल दोष सदृश दुष्प्रभाव होता है, इनका भी विचार कर लेना चाहिए। ऐसा इसलिए है कि लग्न शरीर का, चन्द्रमा मन एवं शुक्र रति का प्रतिनिधित्व करता है। दाम्पत्य-सुख में शरीर, मन और रति सुख की अपनी-अपनी महत्ता है। मंगल, शनि, सूर्य, राहु एवं केतु से बनने वाले योग कम प्रभावशाली है, इसी कारणवश मंगली योग मंगल से बनने पर उसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव समझा जाता है, जबकि केतु से बनने वाले योग का सबसे कम प्रभाव होता है। सप्तम, लग्न, चतुर्थ, अष्टम एवं व्यय स्थान में पाप ग्रह की स्थिति से बनने वाले मंगल योग का प्रभाव भावों के क्रमानुसार उत्तरोत्तर कम होता हैं। सप्तम भाव में सबसे अधिक जबकि बारहवें भाव में सबसे कम होता है।

मंगली दोष परिहार

मंगली दोष से सम्बन्धित एक असंगत श्लोक अत्यन्त प्रचलित है जिसका वर्णन कुंडलियों में मंगली दोष के प्रमाण हेतु दिया रहता है।

यह श्लोक निम्न है—

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रेचाष्टमें कुजे ।
कन्या भर्त्तुर्विनाशाय भर्तृ कन्या विनाशकः।।

अर्थात् इस श्लोक से तात्पर्य है कि 1, 4, 7, 8, व 12वें भाव में मंगल हो तो कन्या भर्त्ता का नाश करती है। इस श्लोक का अर्थ ही असंगत है। आप क्या सभी जानते हैं—वर की भर्त्ता संज्ञा विवाहोपरान्त होती है और विवाह के बाद कन्या वधु हो जाती है तो भर्त्ता का विनाश कहां करेगी, जबकि श्लोकानुसार कन्या भर्त्ता का विनाश करती है। यदि श्लोक में सत्यता होती तो कन्या के स्थान पर परिणीता या अन्य उपयुक्त शब्द का प्रयोग होता नाकि निर्मूल और परस्पर विरोधी शब्द का। इस प्रकार का असंगत श्लोक किसी स्वार्थी ज्योतिषी द्वारा रचा जान पड़ता है। स्वार्थी लोगों ने तो यह मान्यता भी प्रचलित कर दी है कि कन्या के जीवन का कोई मूल्य नहीं है। वर मंगली हो और कन्या ना हो तो विचार करें बिना सम्बन्ध कर देना चाहिए। आप स्वयं सोचिए कि जब यह तथ्य दोनों के लिए समान फलदायी है तो इतना पक्षपात क्यों, जबकि आजकल लड़के-लड़कियां प्रत्येक क्षेत्र में समान रूप से उन्नति करते हैं ?

मूलतः मंगल दोष का तात्पर्य 1, 4, 7, 8, व 12वां भाव क्रमशः शरीर, कुटुम्ब, प्रजनन, आयु और व्यय का प्रतीक है। इसलिए इन भावों में मंगल का होना या दृष्टि पड़ना कुटुम्ब सुख में बाधा कारक है। इसके अतिरिक्त मंगल अग्नितत्व प्रधान ग्रह होने के कारण साधारण ग्रह से प्रभावित नहीं हो पाता जिससे क्रोध, चिड़चिड़ापन व वैचारिक मतभेदों के कारण मेल बेमल सा हो जाता है और पारिवारिक जीवन दुःखद हो जाता है। मंगली दोष होने से विधवा होना असंगत है, विधवा होने की सम्भावना तभी होगी जबकि कुंडली में विधवा योग या अन्य पाप ग्रहों से अल्पायु होगा।

यदि कुंडली में अधोलिखित स्थितियां बनती हो तो मंगली दोष प्रायः समाप्त हो जाता है—

- कुंडली मिलाते समय अन्य कुंडली (वर या कन्या) में 1, 4, 7, 8 व 12वें भाव में शनि हो।

- मेष राशि का मंगल लग्न में या वृश्चिक राशि का चतुर्थ भाव में या मकर राशि का 7वें भाव में या कर्क राशि का 8वें भाव में या धनु राशि का 12वें भाव में हो।
- द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र की युति हो, केन्द्र में चन्द्र-मंगल की युति हो, मंगल-गुरु की युति हो या गुरु मंगल को पूर्ण दृष्टि से देखता हो।
- बली गुरु शुक्र की राशि या अष्टम भाव में हो तथा सप्तमेश बलवान होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो।
- वर-कन्या में से किसी एक कुंडली में मंगली योग हो तथा दूसरे की कुंडली में मंगली योग कारक भाव में कोई पाप ग्रह स्थित हो।
- मेष या वृश्चिक का मंगल चतुर्थ भाव में, कर्क या मकर का मंगल सप्तम भाव में, मीन का मंगल अष्टम भाव में तथा मेष या कर्क का मंगल व्यय भाव में हो।
- सप्तमेष या शुक्र बलवान हो तथा सप्तम भाव इनसे युत या दृष्ट हो।
- मंगली योग कारक ग्रह स्वराशि, मूल त्रिकोण या उच्च राशि में हो।

द्वादश लग्न के मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

अब प्रत्येक लग्न में मंगली दोष के पांच प्रकार होंगे। इन पांचों प्रकार के लाल किताब के टोटके एवं उपाय बता रहे हैं जिससे इन्हें करके आप इस दोष के प्रभाव से मुक्त हो सकें या दूजों को उपाय बताकर उनका भला कर सकें।

द्वादश लग्न और मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

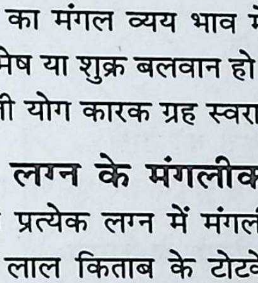

पहला प्रकार

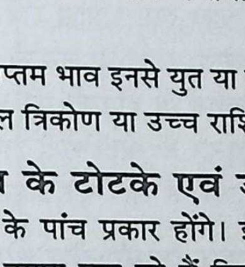

दूसरा प्रकार

यहां पर मेष लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला

दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

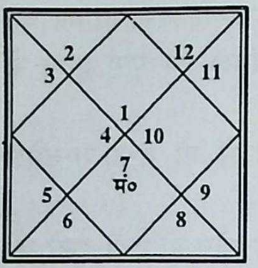

तीसरा प्रकार

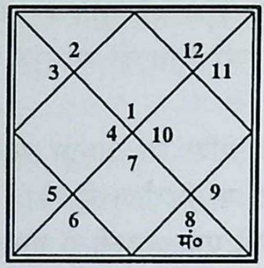

चौथा प्रकार

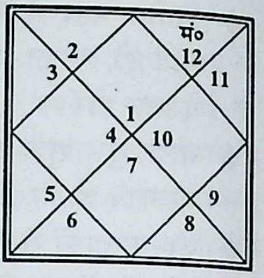

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- लाल रुमाल पास रखें।
- बन्दर पालें या उसकी सेवा करें।
- बहन या लड़की को मीठा दें।
- तन्दूर में मीठी रोटी लगाकर कुत्ते को डालें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर धारण करें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- निःसंतान व्यक्ति से धन या उपहार कदापि न लें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर धारण करें।
- घर-आफिस में नौकर रखें।
- बन्दर पालें या उसकी सेवा करें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- घर-दफ्तर में नौकर रखें।
- बहन या लड़की को मीठा प्रतिदिन दें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- झूठ न बोलें और न झूठी गवाही दें।
- साली, मौसी या बुआ के घर जाएं तो मिठाई अवश्य लेकर जायें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर धारण करें।
- चीनी जल में प्रवाहित करें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें।
- चांदी की बिना जोड़ वाली अंगूठी धारण करें।

वृष लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर वृष लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

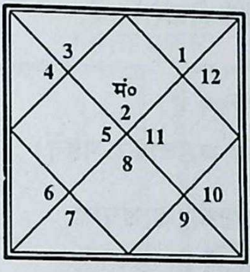

पहला प्रकार

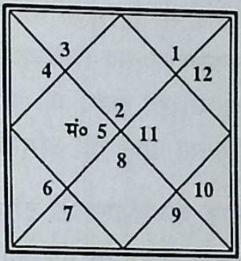

दूसरा प्रकार

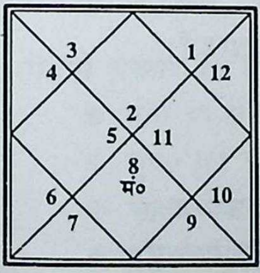

तीसरा प्रकार

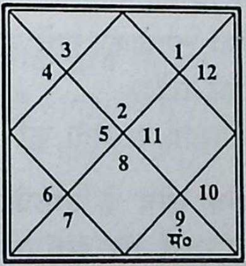

चौथा प्रकार

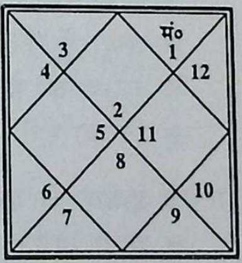

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चाल-चलन ठीक रखें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनाएं।

- माता या मामा की तरह स्त्री की सेवा करें।
- लाल रुमाल पास रखें।
- मुफ्त या दान में दी गई वस्तुएं न लें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- बहन या लड़की की सेवा करें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- शहद व सिन्दूर जल में प्रवाहित करें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चाल-चलन ठीक रखें।
- साली, मौसी, बुआ के घर मिठाई लेकर जायें।
- सुन्दरकांड का पाठ करें।
- लड़की या बहन को मीठा प्रतिदिन दें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- शराब न पियें।
- मांस-मछली न खायें।
- तन्दूर में मीठी रोटी लगवाकर कुत्ते को खिलायें।
- घर-दफ्तर में नौकर रखें।
- विधवा स्त्री की पालना या सेवा करें।

पांचवें प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- मीठा भोजन स्वयं खायें और दूजों को भी खिलाएं।
- चांदी की बिना जोड़ की अंगूठी बायें हाथ में धारण करें।
- बड़े भाई के हाथ से दूध पीएं।
- गायत्री या दुर्गा का पाठ करें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।

मिथुन लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर मिथुन लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

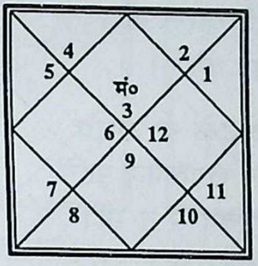

पहला प्रकार

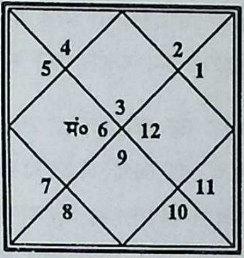

दूसरा प्रकार

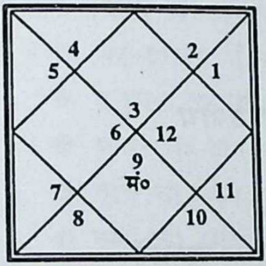

तीसरा प्रकार

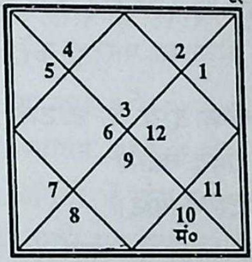

चौथा प्रकार

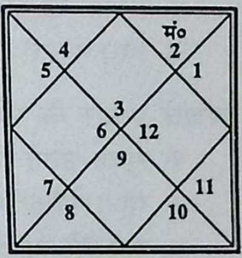

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा पहनें।
- मुफ्त का माल या दान कदापि न लें।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाकर बांटें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनायें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- शहद और सिन्दूर जल में प्रवाहित करें।
- काले, काने, निःसंतान और गंजे व्यक्ति से दूर रहें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर धारण करें।

- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- कच्ची ईंटों की दीवार बनाकर गिरायें।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाकर बाँटें।
- भाई की संतान की सेवा करें।
- चांदी की बिना जोड़ की अंगूठी धारण करें।
- लड़की या बहन को मीठा खाने को दें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- दक्षिण दिशा के दरवाजे वाले भवन में न रहें।
- काले, काने, निःसंतान व्यक्ति से दूर रहें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- सुबह उठते ही शहद खायें।
- मीठा भोजन मन्दिर में बाँटे।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनावें।
- खुशी के अवसर पर मीठा बाँटें।
- बड़े भाई के हाथ से दूध पीएं।

कर्क लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

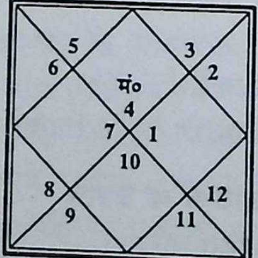

पहला प्रकार

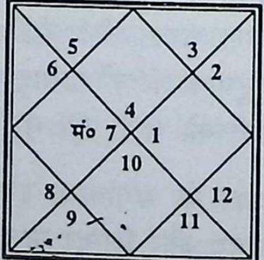

दूसरा प्रकार

यहां पर कर्क लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

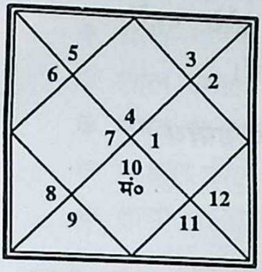

तीसरा प्रकार

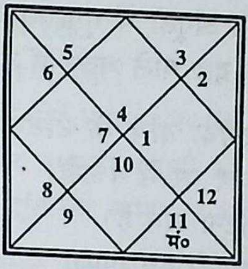

चौथा प्रकार

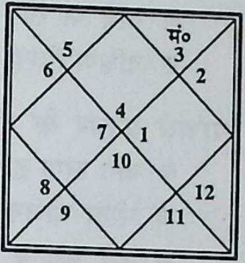

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- घर-दफ्तर में नौकर रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- मुफ्त या दान का सामान कभी न लें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनाएं।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कभी न रहें।
- निःसंतान व्यक्ति से धन, जमीन आदि न लें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- बन्दर की सेवा या पालना करें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- लड़की या बहन को मीठा प्रतिदिन दें।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनायें।
- कच्ची ईंटों की दीवार बनाकर गिराएं।

- साली, बुआ, मौसी के घर जाएं तो मिठाई लेकर जायें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- चांदी का कड़ा तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा धारण करेके पहनें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- जंग लगा हथियार घर में न रखें।
- मीठा भोजन बांटना शुभ है।
- बड़े भाई के हाथ से दूध पिएं।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा पहनें।
- मेहमानों को भोजन के बाद सौंफ और मिश्री खिलाएं।

सिंह लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

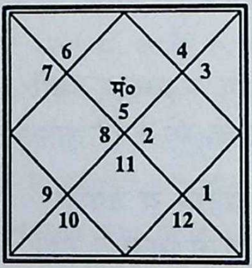

पहला प्रकार

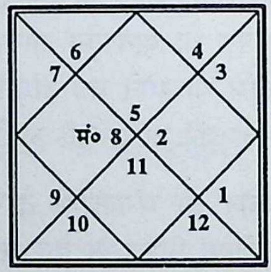

दूसरा प्रकार

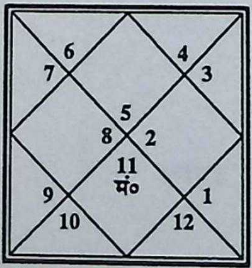

तीसरा प्रकार

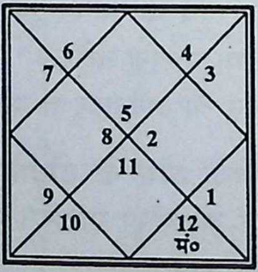

चौथा प्रकार

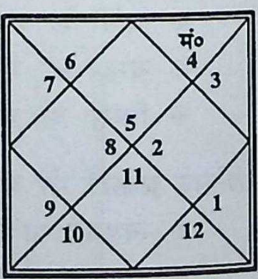

पांचवां प्रकार

यहां पर सिंह लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली

बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चाल-चलन ठीक रखें।
- लाल रुमाल पास में रखें।
- मुफ्त या दान में कोई सामान न लें।
- न झूठ बोलें और न झूठी गवाही ही दें।
- हाथी या हाथी दांत का सामान न रखें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनाएं।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- निःसंतान व्यक्ति से धन या जमीन न लें।
- माता या माता सदृश स्त्री की सेवा करें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा धारण करके पहनें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चाल-चलन ठीक रखें।
- भाई की संतान की पालना करें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- शराब न पिएं।
- मांस-मछली न खाएं।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनायें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा पहनें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न बोलें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- मीठा बांटें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनायें।
- शराब न पिएं।
- मांस-मछली न खायें।
- गायत्री पाठ या दुर्गा पाठ करें।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ायें।

कन्या लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर कन्या लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

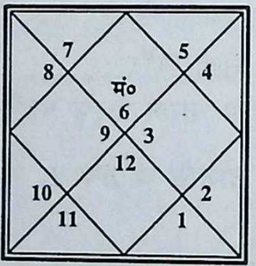

पहला प्रकार

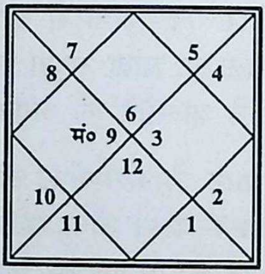

दूसरा प्रकार

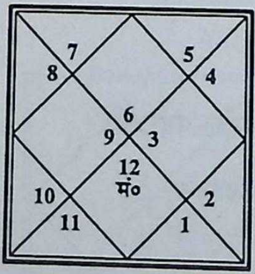

तीसरा प्रकार

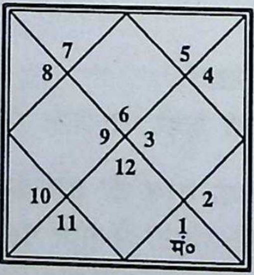

चौथा प्रकार

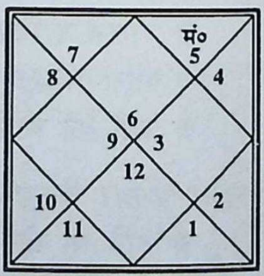

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- हाथी या हाथी दांत का सामान न रखें।

- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- बड़े भाई, ताऊ और मामा की सेवा करें।
- झूठ न बोलें।
- किसी से दान न लें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी लाल रंग करके पहनायें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- निःसंतान व्यक्ति से धन-जमीन कभी न लें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- शहद-सिन्दूर जल में बहाएं।
- काले, काने, निःसंतान और गंजे व्यक्ति से दूर रहें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनाएं।
- लड़की या बहन-को मीठा खाने को प्रतिदिन दें।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- कच्ची दीवार बनाकर गिरायें।
- साली, बुआ, मौसी के घर जाएं तो मिठाई साथ लेकर जाएं।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- विधवा स्त्री का अशीर्वाद लें।
- चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके स्त्री को पहनायें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- घर-दफ्तर में नौकर रखें।
- बड़े भाई के हाथ से दूध पीएं।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाकर बांटें।
- मीठा भोजन बांटें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनायें।

तुला लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर तुला लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करंना चाहिये।

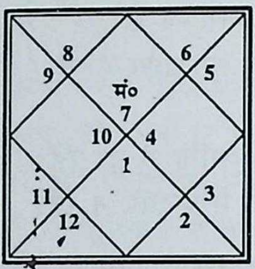

पहला प्रकार

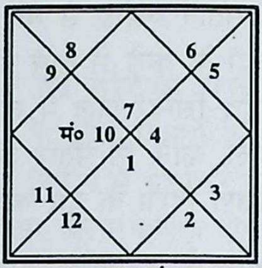

दूसरा प्रकार

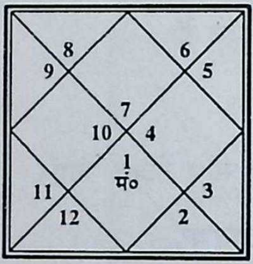

तीसरा प्रकार

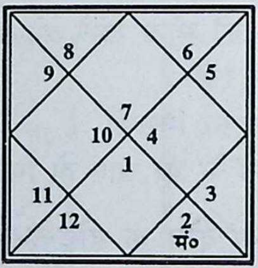

चौथा प्रकार

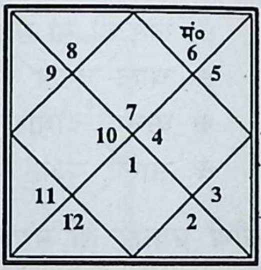

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- झूठ न बोलें और झूठी गवाही कदापि न दें।
- मुफ्त और दान की वस्तुएं कदापि न लें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनायें।
- हाथी न पालें या हाथी दांत की वस्तुएं पास में न रखें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।

- माता या माता सदृश स्त्री की सेवा करें।
- निःसंतान व्यक्ति से जमीन-जायदाद और धन कदापि न लें।
- शहद व सिन्दूर जल में प्रवाहित करें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- शराब न पिएं।
- मांस-मछली न खायें।
- लड़की या बहन को प्रतिदिन मीठा खाने को दें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- चाल-चलन ठीक रखें।
- साली, बुआ, मौसी के घर जायें मिठाई लेकर जायें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- काले, काने, निःसंतान और गंजे व्यक्ति से सम्बन्ध न रखें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- तन्दूर में मीठी रोटी लगाकर कुत्ते को डालें।
- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- दूध डालकर हलवा बनाकर स्वयं खायें और खिलायें।
- मीठा भोजन बांटें।
- जंग लगा हथियार घर में न रखें।
- गायत्री पाठ या दुर्गा पाठ करें।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाकर बांटें।

वृश्चिक लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर वृश्चिक लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

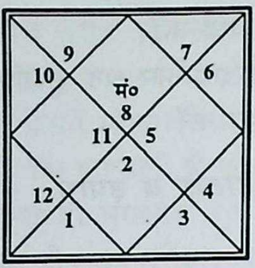

पहला प्रकार

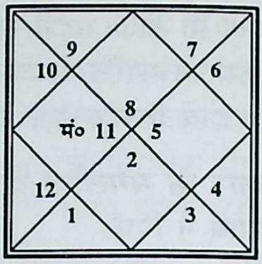

दूसरा प्रकार

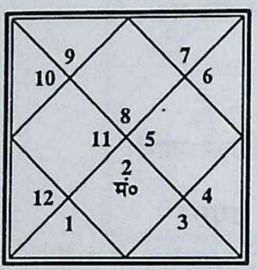

तीसरा प्रकार

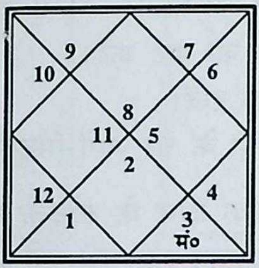

चौथा प्रकार

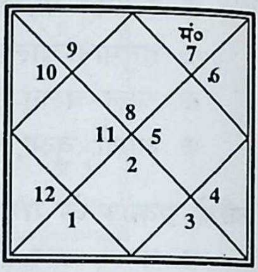

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- लाल रुमाल पास में रखें।
- चांदी की बिना जोड़ की अंगूठी पहनें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनाएं।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- झूठ न बोलें और दान न लें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- शहद-सिन्दूर बहते जल में बहाएं।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।
- निःसंतान से धन न लें या जमीन-जायदाद न खरीदें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चाल-चलन ठीक रखें।
- भाई की संतान की पालना करें।

- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- बहन या लड़की को मीठा प्रतिदिन खाने को दें।
- कच्ची दीवार बनाकर गिरायें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- मीठी रोटी तन्दूर में लगाकर कुत्ते को डालें।
- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- मीठा भोजन बांटें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सुबह उठकर शहद खायें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनायें।'

धनु लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर धनु लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

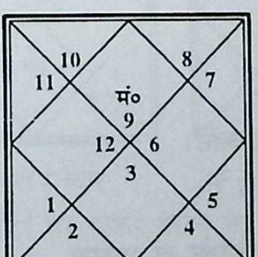

पहला प्रकार

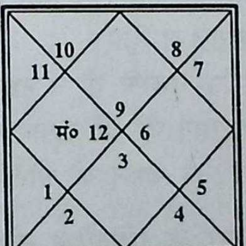

दूसरा प्रकार

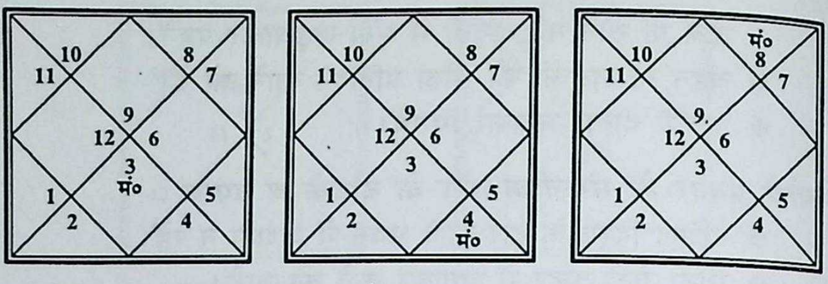

तीसरा प्रकार — चौथा प्रकार — पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- हाथी न पालें या हाथी दांत की वस्तुएं पास में न रखें।
- झूठ न बोलें और झूठी गवाही भी न दें।
- लाल रुमाल पास रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दान या मुफ्त सामान किसी से न लें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- बन्दर की सेवा या पालना करें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- ढाक का वृक्ष घर में न लगाएं।
- माता या माता सदृश स्त्री की सेवा करें।
- काले, काने, निःसंतान और गंजे व्यक्ति से दूर रहें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- साली, मौसी, बुआ के घर जाएं तो मिठाई लेकर जाएं।
- कच्ची दीवार बनाकर गिराएं।
- शराब न पिएं।
- मांस-मछली भी न खायें।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाकर बांटें।
- लड़की-बहन को प्रतिदिन मीठा दें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- गायत्री पाठ या दुर्गा पाठ करें।

- नि:संतान व्यक्ति से सम्बन्ध न रखें।
- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- चांदी की बिना जोड़ वाली अंगूठी पहनें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- जंग लगा चाकू-छुरी घर में न रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- चांदी की बिना जोड़ की अंगूठी न पहनें।
- शराब न पीएं।
- मांस-मछली न खाएं।
- सुबह उठते ही शहद खायें।

मकर लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

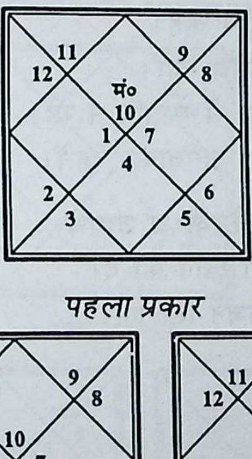

पहला प्रकार

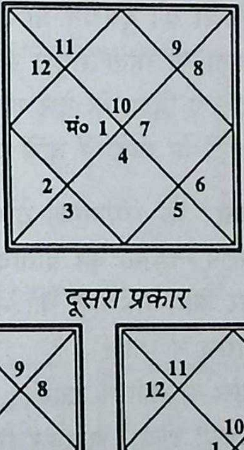

दूसरा प्रकार

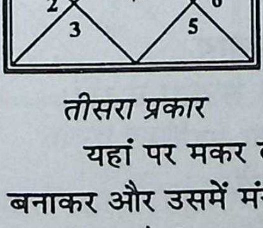

तीसरा प्रकार

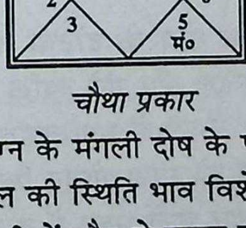

चौथा प्रकार

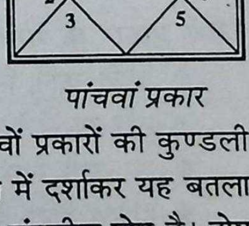

पांचवां प्रकार

यहां पर मकर लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष

के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- झूठ न बोलें।
- दान कदापि न लें।
- माता या माता सदृश स्त्री की सेवा करें।
- हाथी न पालें या हाथी दांत की वस्तुएं घर में न रखें।
- शराब न पियें।
- मांस-मछली न खाएं।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- बन्दर की सेवा या पालना करें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- माता या माता सदृश स्त्री की सेवा करें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में कदापि न रहें।
- चांदी के कड़े में तांबे की कील लगवाकर पहनें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- बहन लड़की को प्रतिदिन मीठा खाने को दें।
- घर आये मेहमानों को मीठा भोजन खिलाएं।
- शराब न पीएं।
- मांस-मछली न खायें।
- कच्ची दीवार बनाकर गिरा दें।
- भाई की संतान की पालना करें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- काले, काने, निःसंतान और गंजे व्यक्ति से सम्बन्ध न रखें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- घर आये मेहमानों को मीठा भोजन खिलायें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- विधवा स्त्री की सेवा या पालना करें

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- जंग लगा हथियार घर में न रखें।
- दूध में हलवा बनाकर खायें और खिलायें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शराब न पिएं।
- मांस-मछली भी न खायें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।

कुम्भ लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर कुम्भ लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

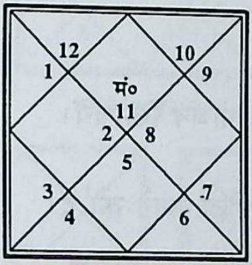

पहला प्रकार

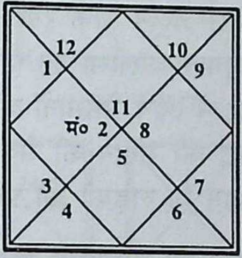

दूसरा प्रकार

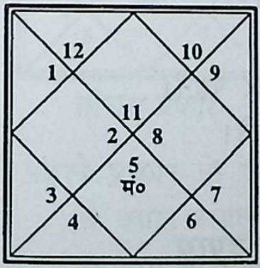

तीसरा प्रकार

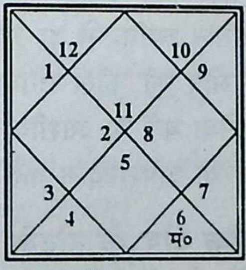

चौथा प्रकार

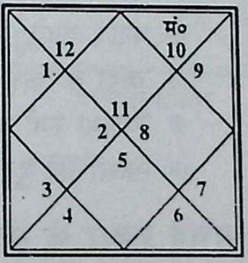

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- हाथी न पालें या हाथी दांत की वस्तुएं पास में न रखें।

- झूठ न बोलें।
- मुफ्त का माल या दान न लें।
- लाल रुमाल पास रखें।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाकर बांटें।
- शराब न पिएं।
- मांस-मछली न खायें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- शहद-सिन्दूर बहते जल में बहाएं।
- चांदी के कड़े में सोने की कील लगवाकर पहनें।
- माता की सेवा करें या बन्दर की पालना करें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।

तीसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- चाल-चलन ठीक रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- घर में आये मेहमानों को मीठा भोजन खिलायें।
- भाई की संतान की सेवा करें।
- बहन या लड़की को प्रतिदिन मीठा खाने को दें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- काले, काने, निःसंतान व्यक्ति से दूर रहें।
- चांदी के कड़े में सोने की कील लगवाकर पहनें।
- विधवा स्त्री की सेवा करें या आशीर्वाद लें।
- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।

पांचवे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- मीठा भोजन खायें और खिलायें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके पहनाएं।
- हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाकर बांटें।

- शराब न पिएं।
- मांस-मछली न खायें।
- जंग लगा हथियार घर में न रखें।

मीन लग्न और मंगलीक दोष के टोटके एवं उपाय

यहां पर मीन लग्न के मंगली दोष के पांचों प्रकारों की कुण्डली बनाकर और उसमें मंगल की स्थिति भाव विशेष में दर्शाकर यह बतला दिया गया है कि कुण्डली में कौन से प्रकार का मंगलीक दोष है। दोष के प्रकारानुसार ही मंगलीक दोष का उपाय चयन करके उसे व्यवहार में लाकर इस दोष का परिहार करना चाहिये।

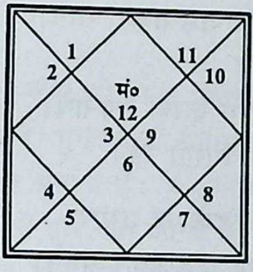

पहला प्रकार

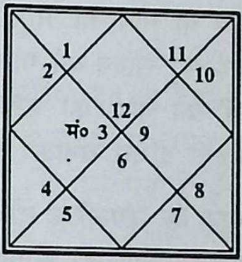

दूसरा प्रकार

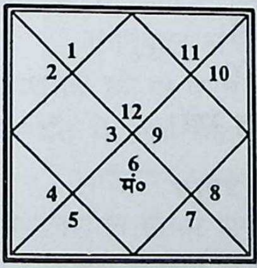

तीसरा प्रकार

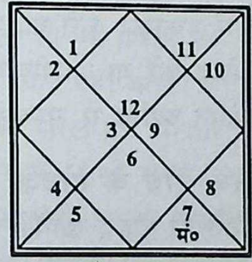

चौथा प्रकार

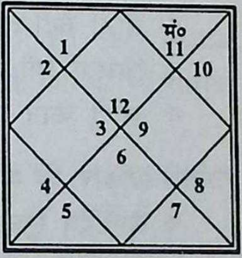

पांचवां प्रकार

पहले प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- लाल रुमाल पास में रखें।
- दान या मुफ्त वस्तुएं न लें।
- घर आफिस में नौकर रखें।
- शराब न पिएं।
- मांस मछली न खायें।
- झूठ न बोलें और झूठी गवाही भी न दें।

दूसरे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- किसी को दुर्वचन या अपशब्द न कहें।
- बन्दर की सेवा या पालना करें।
- माता या माता सदृश स्त्री की सेवा करें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- काले, काने, निःसंतान और गंजे व्यक्ति से सम्बन्ध न रखें।

तीसरे प्रकार के मंगलिक दोष के टोटके व उपाय

- शराब न पिएं।
- मांस-मछली न खायें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- भाई की संतान की पालना करें।
- स्त्री को चांदी की चूड़ी लाल रंग करके पहनायें।
- कच्ची दीवार बनाकर बार-बार गिराते रहें।

चौथे प्रकार के मंगलीक दोष के टोटके व उपाय

- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- दक्षिण दिशा के द्वार वाले भवन में न रहें।
- मीठी रोटी तन्दूर में पकाकर कुत्ते को डालें।
- विधवा स्त्री की सेवा करें या आशीर्वाद लें।
- काले, काने, निःसंतान व्यक्ति से सम्बन्ध न रखें।

पांचवे प्रकार के मंगलिक दोष के टोटके व उपाय

- प्रतिदिन सुबह उठते ही शहद खायें।
- दूध में हलवा बनाकर खायें और खिलायें।
- तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
- जंग लगा हथियार घर पर न रखें।
- हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं।

इस अध्याय में द्वादश राशि के लिए मंगलीक दोष एवं उनके टोटके व उपाय बता दिए गए हैं। इनको परिस्थिति के अनुरूप प्रयोग में लाकर लाभ उठाना चाहिए।

समापन

इस पुस्तक को लाल किताब की प्रशंसा करने के लिए नहीं लिखा गया है। पुस्तक को लिखने का उद्देश्य पाठकों को सरल, सहज़ और सस्ते उपाय बताना है। ये उपाय प्रभावी और सर्वोपयोगी हैं।

यह तो हम सब जानते हैं कि नवग्रह अपना प्रभाव अवश्य डालते हैं। योग्यता होने पर भी सफलता नहीं मिलती तो हम यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि इसमें हमारा नहीं भाग्य का दोष है।

मनोनुकूल सफलता तो भाग्यवान् को मिलती है। लाल किताब अशुभता को दूर करने के उपाय नहीं बताती है। यह तो ग्रहों की संदेहात्मक स्थिति से लाभ उठाने का सरल ढंग बताती है।

बुद्धिमान सुअवसर को हाथ से नहीं गँवाते हैं। वे समयानुरूप प्रयत्नशील होकर सफलता को अपनी अंकशायनी ही बनाते हैं।

इस पुस्तक में लाल किताब के मूलभूत सिद्धान्तों को सरल ढंग से समझाकर अशुभ ग्रहों से बचने के सरल, प्रभावी और सस्ते उपाय बताए गए हैं।

जन्म कुंडली से उपाय कैसे जानें ?

अपनी जन्म कुण्डली सामने रखकर देखें कि कौन सा ग्रह कहाँ पर स्थित है। द्वादश भावों में ग्रहों की स्थिति के अनुसार उपाय लिखकर उसमें से अपने लिए सरल उपायों को चुनकर व्यवहार में लाएं।

मान लो आपकी जन्म कुंडली इस प्रकार है—

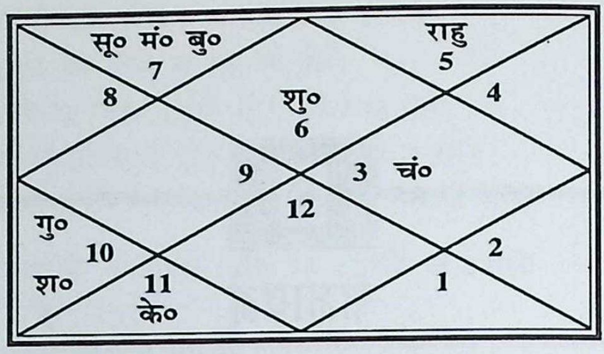

इस कुण्डली में सूर्य और गुरु नीच के हैं। इस जातक को सूर्य और गुरु को उच्च में पहुँचाने के लिए टोटके एवं उपाय करने चाहिएं।

सूर्य को उच्च करने के लिए सूर्य की वस्तुएँ श्मशान में दबानी चाहिएं।

गुरु को उच्च करने के लिए गुरु की वस्तुएँ बहते पानी में बहानी चाहिएं।

जन्म कुण्डली में शुक्र पहले भाव में स्थित है इसलिए इसके उपाय करने चाहिए जो इस प्रकार हैं—

शुक्र के पहले भाव के उपाय

- प्रेम-प्यार व एय्याशी में अधिक संलग्न न रहें।
- दिन में संभोग न करें।
- गोमूत्र प्रयोग में लाएं।
- पत्नी को मस्तक में सोना धारण करना चाहिए।
- ईश्वर पर विश्वास दृढ़ रखें।
- दूसरों की सलाह अवश्य लें।
- गुड़ न खायें।
- काली गाय की सेवा करें।
- दही से स्नान करें।
- गौ ग्रास दें अर्थात् अपनी खुराक में से गाय, कुत्ते और कौवे को खाने को दें।

जन्म कुण्डली में सूर्य, मंगल व बुध दूसरे भाव में स्थित हैं, इसलिए इनके उपाय करने चाहिएं जो इस प्रकार हैं—

सूर्य के दूसरे भाव के उपाय

- ⌘ दान कभी न लें। किसी से कोई भी वस्तु मुफ्त में न लें। स्वअर्जित धन से ही जीवन को जीएं। दान में चावल, चांदी या दूध तो कदापि न लें।
- ⌘ नारियल, तेल या बादाम को मन्दिर या किसी धर्म स्थल में दान में दें।
- ⌘ अपना चरित्र सदैव ठीक रखें। चरित्रहीनता से बचना ही श्रेयस्कर है।
- ⌘ पैतृक भवन में जल संसाधन (हैंडपम्प, कुंआ आदि) का प्रबन्ध करें।

मंगल के दूसरे भाव के उपाय

- ⌘ दोपहर में गुड़ और गेहूँ बच्चों को बाँटें।
- ⌘ दूसरों को पालते रहने से उन्नति हो, सम्पन्नता बढ़े। अतः दूजों को या सगे-सम्बन्धियों को अवश्य पालते रहें।
- ⌘ भाई को कभी न दुतकारें। समय-असमय उसकी सहायता करते रहें। यदि भाई का अपमान करेंगे या उसको दुतकारेंगे तो समझ लें अवनति का द्वार अपने लिए खोल रहे हैं।
- ⌘ चन्द्र सम्बन्धी वस्तुओं (चांदी, चावल, दूध, पानी, सफेद वस्तुएँ, धोती, अंगोछा आदि) को धार्मिक स्थान, मन्दिर व गुरुद्वारे आदि में रखें या दान में दें।
- ⌘ मृगछाला घर पर रखें।
- ⌘ माता व दादी का अपमान कदापि न करें।
- ⌘ ससुराल में कुआँ न हो तो बनवायें या प्याऊ आदि खुलवाएँ।
- ⌘ लाल रंग का रुमाल अपने पास रखें।

बुध के दूसरे भाव के उपाय

- ⌘ साली का साथ न करें एवं उससे सम्बन्ध न रखें।
- ⌘ नाक छेदन कराकर 90 दिन तक चाँदी पहने रखना या 96 घंटे तक छेद रखना लाभकारी होगा।
- ⌘ चन्द्र व गुरु की वस्तुएँ मन्दिर में देना या चन्द्र व गुरु का उपाय करना लाभप्रद रहेगा।
- ⌘ फिटकरी से दांत साफ करें।

⌘ भेड़, बकरी व तोता-तोती कभी न पालें।

जन्म कुण्डली के पांचवे भाव में गुरु व शनि स्थित हैं, इसलिए इनके उपाय करने चाहिएं जो इस प्रकार हैं—

गुरु के पांचवे भाव के उपाय

⌘ सिर पर चोटी रखें।

⌘ धर्म के नाम पर धन संग्रह न करें या दान न लें।

⌘ गणेश उपासना करें।

⌘ केतु का उपाय करें।

⌘ शराब, माँस व परस्त्री गमन से दूर रहें।

⌘ किसी से मुफ्त में कुछ न लें।

⌘ साधुओं की सेवा करें या मन्दिर की सफाई करें।

शनि के पांचवे भाव के उपाय

⌘ पैतृक भवन की अंधेरी कोठरी में सूर्य (गुड, तांबा, भूरी भैंस, बन्दर), मंगल (सौंफ, खांड, शहद, लाल मूंगे, हथियार), चन्द्र (चावल, चांदी, दूध, कुंआ, घोड़ा) स्थापित करें।

⌘ अपने भार के दशांश के तुल्य बादाम बहते पानी में बहाएंगे या धर्मस्थल में ले जाकर आधे घर लाकर रखें उन्हें खाएं नहीं।

⌘ सन्तान के जन्म लेने पर मीठा न बाटें या मीठा बाटें तो उसमें नमक लगा दें।

⌘ कुत्ता पालें।

⌘ बुध का उपाय करें।

⌘ अड़तालिस वर्ष से पूर्व निज भवन का निर्माण न करें।

जन्म कुण्डली के छठे भाव में केतु स्थित है, वस्तुतः केतु के छठे भाव वाले उपाय करने चाहिएं जो कि इस प्रकार हैं—

केतु के छठे भाव के उपाय

⌘ कुत्ता पालें।

⌘ सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें।

⌘ गुरु का उपाय करें।

जन्म कुण्डली के दसवें भाव में चन्द्रमा स्थित है, इसलिए इसके उपाय करने चाहिए जो कि इस प्रकार हैं—

चन्द्रमा के दसवें भाव के उपाय

- गुरु ग्रह का उपाय करें।
- चरित्र ठीक रखें।
- यदि वैद्य या चिकित्सक हैं तो मुफ्त दवाएं कभी न दें।
- रात्रि में दूध कदापि न पिएं।
- भूमि के नीचे का जल, नदी, नाले, हैंड पम्प का जल घर में दस-पन्द्रह वर्ष तक रखें।
- दूध देने वाले पशु घर पर न पालें।
- तरल औषधियाँ कभी न ग्रहण करें।
- मकान न बनाएँ।
- ससुराल से अधिक संबंध न बनाएँ।

जन्म कुण्डली के बारहवें भाव में राहु स्थित है इसलिए इसके उपाय करना चाहिए जो कि इस प्रकार हैं—

राहु के बारहवें भाव के उपाय

- घर के अन्त में अंधेरी कोठरी बनाएं।
- रात्रि में सोते समय सिरहाने या तकिए के नीचे मंगल की वस्तुएँ चीनी, सौंफ या मूंगा रखें।
- खाना जहाँ बनाएँ वहाँ बैठकर ही खाएं।
- कम सोचें। जिद्द या हठ न करें।

उपर्युक्त सभी उपायों में जो एक जैसे उपाय हो उन सबकी संक्षिप्त सूची बनाकर लाल किताब के निर्देशानुसार उन्हें कम से कम चालीस या तैंतालिस दिन तक निरन्तर बिना नागा के करना चाहिए। लाल किताब के उपायों को ग्रहों की युति या अन्य आवश्यकतानुसार भी चुनकर कर सकते हैं। उपाय आपकी सफलता का कारण बन सकते हैं क्योंकि उपायों से ग्रहों की अशुभता दूर हो जायेगी और उन्नति पथ प्रशस्त होगा जिसके प्रतिफल में सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

:: इति शुभम् ::

वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' पर आधारित

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र

वराहमिहिर की प्रसिद्ध पुस्तक 'बृहज्जातकम्' के फलित ज्योतिष के अकाट्य सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप से जानने के लिए इस पुस्तक को पढ़कर देखें। इस ग्रन्थ को पढ़े बिना फलित ज्योतिष का ज्ञान अधूरा है।

वर्षफल विचार

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

वर्ष कुंडली बनाकर सम्पूर्ण वर्ष के शुभ और अशुभ का ज्ञान करने के लिए यह पुस्तक पढ़ना न भूलें। इस पुस्तक को पढ़कर आप स्वयं वर्ष कुंडली बिना गुरु की सहायता के स्वयं बनाकर वर्ष भर के प्रत्येक दिन का शुभ और अशुभ फल जान कर सफलता के लिए निज योजनाएं बना सकते हैं।

एक बार अवश्य पढ़ें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

असली लाल किताब का सरल अध्ययन

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

ज्योतिष शास्त्र भविष्य को जानने का विज्ञान है। इस विज्ञान को जटिल समझकर सामान्य जन इसमें रुचि नहीं लेते हैं। इसकी जटिलता को दूर करने के लिए अनेक वर्षों पूर्व एक पुस्तक उर्दू-फारसी भाषा में 'लाल किताब' लिखी गई थी। यह पुस्तक जन्मपत्री का फल सरल ढंग से बताती है। उर्दू-फारसी में हाने के कारण हिन्दी पाठक इसके अमूल्य सिद्धान्तों को जान नहीं पाते हैं हिन्दी में इस पुस्तक का सरल अध्ययन आपके लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। आप इसे पढ़कर कुण्डली का फलित करना सीखने के साथ-साथ नवग्रहों के कुप्रभाव से भी बच सकेंगे।

लाल किताब और हस्त रेखाएं

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

हाथ बनी-बनाई कुण्डली है, फलित जानने के लिए जन्म-तिथि, समय और स्थान की भी आवश्यकता नहीं है। आप भी हस्तरेखाओं के अध्ययन से अपना भविष्य जानना चाहते हैं तो लाल किताब के हस्तरेखा सम्बन्धी अनमोल सिद्धान्त पढ़ना न भूलें। हमें विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन के वाद आप हस्तरेखाओं में छिपे भविष्य को जान सकेंगे।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

मुहूर्त निकालिए

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

सफलता के लिए समय को पहचानना जरूरी है। मुहूर्त विचार से समय की शुभाशुभता जानी जाती है। मुहूर्त जानने के लिए पंडितों से मिलने हेतु दर-दर भटकना पड़ता है, जिससे समय की बरबादी होती है। इस बरबादी से बचने के लिए और समय की शुभाशुभता जानने हेतु यह पुस्तक अवश्य पढ़ें।

वृहदवकहडाचक्रम्

सम्पादक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

ज्योतिष का मूलाधार काल है। काल की शुभाशुभता के बोध के लिए ज्योतिष सीखना अनिवार्य है। यह ग्रन्थ ज्योतिष की वर्णमाला है, इसके ज्ञान के बिना ज्योतिष सीखना सम्भव नहीं है। इसलिए ज्योतिष का प्राथमिक ज्ञान कराने वाला यह अनमोल ग्रन्थ पढ़कर अवश्य लाभ उठायें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

देवताओं के वास्तुविद् विश्वकर्मा रचित

विश्वकर्माप्रकाश

व्याख्या व सम्पादन—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

'विश्वकर्मा प्रकाश' के मूल संस्कृत पाठ की सरल व्याख्या चित्रों सहित व्यावहारिक अनुभवों के साथ मौलिक वास्तु ज्ञान जो पहले आपने नहीं पढ़ा होगा पढ़कर सुखी-समृद्धि कारक भवन बनाना न भूलें।

भारतीय वास्तुशास्त्र और उसके सिद्धान्त

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

पुस्तक में प्राचीन भारतीय वास्तुशास्त्र के विभिन्न मतों के तुलनात्मक अध्ययन के साथ-साथ उनके गूढ़ रहस्यों को आपके लिये सरल ढंग से अनेकानेक रेखाचित्रों द्वारा समझाया गया है। इन रहस्यों को जानकर वास्तुसिद्धान्तों के अनुरूप भवन निर्माण करके सुख समृद्धि और शन्ति को अपनी सहचरी बनायें। यह पुस्तक सामान्य जन और वास्तुविदों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसे पढ़कर जीवन को उन्नत पथ पर प्रशस्त करना ना भूलें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

गोचर ज्योतिष

सम्पादक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

ग्रह गोचरवश भिन्न-भिन्न राशियों में भ्रमण करते हैं और इससे जो प्रभाव राशियों पर पड़ता है उसका अध्ययन **गोचर ज्योतिष** में किया जाता है। गोचर ज्योतिष में जन्म कालीन ग्रह स्थिति एवं वर्तमान ग्रह स्थिति के समन्वय युक्त विश्लेषण के बाद फलादेश करते हैं। गोचर ज्योतिष पढ़कर आप वर्तमान और भविष्य को पहचानने में समर्थ हो जायेंगे। इसलिए इस पुस्तक को कदापि पढ़ना ना भूलें।

शीघ्र बोधः

सम्पादक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

शीघ्र बोधः ज्योतिर्विद पं० काशीनाथ भट्टाचार्य द्वारा संग्रहीत ज्योतिष का शीघ्र बोध कराने वाला अनुपम ग्रन्थ है। फलित ज्योतिष का शीघ्रतापूर्वक ज्ञान पाने के लिए इसका अध्ययन करना अनिवार्य है। इस ग्रन्थ से ज्योतिष का बोध सरलता से हो जाता है। इसलिए इसे अवश्य पढ़ें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

आपकी राशि क्या कहती है ?

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

भविष्य जान लेना सभी चाहते हैं। सफलता, सुख-समृद्धि एवं उन्नति को पा लेने की आकांक्षा किसे नहीं है। आप भी यह सब पा लेना चाहते हैं तो चुनिए अपनी राशि और पढ़ लीजिए क्या छिपा है उसके अन्दर ?

अंक बोलते हैं

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

आप भविष्य जानना चाहते हैं तो अंक-ज्योतिष के सरल सिद्धान्तों को खेल-खेल में गिनती गिनते हुए सीख लीजिए। फिर देखिएगा भविष्य की अज्ञात परतें एक-एक करके कितनी सरलता से आपके सम्मुख खुलती जाएंगी। आपकी जटिल समस्याओं का समाधान अंक-ज्योतिष से हो सकता है, लेकिन कैसे ? इसके लिए यह पुस्तक पढ़ना न भूलें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

भृगुसंहिता महाशास्त्र

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

जन्मकुण्डली का फल बतलाने वाली अनोखी पुस्तक

इसे पढ़कर आप अपनी जन्मकुण्डली का फल स्वत: जान सकेंगे। पुस्तक पढ़कर सहसा कह उठेंगे। यह पुस्तक पहले क्यों नहीं पढ़ी।

वास्तुकला और भवन निर्माण

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

वास्तु के मूलभूत सिद्धान्तों को जानने के साथ-साथ सुख-समृद्धि कारक भवन निर्माण कराना चाहते हैं, तो यह पुस्तक पग-पग पर आपकी सहायता करेगी, इसलिए यह पुस्तक पढ़ना न भूलें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

A453

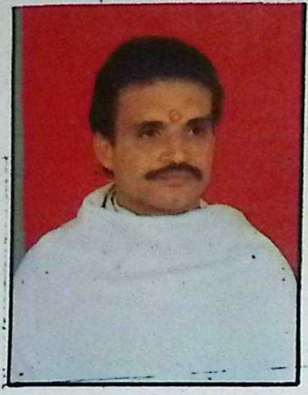

डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'
बी०एस०-सी०, एम० ए०, पी०-एच० डी०,
ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिष भास्कर

लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय

प्रायः नवग्रह के कुप्रभाव से बचने के लिए रत्न, यन्त्र व जड़ी धारण, मन्त्रजाप, नवग्रह उपासनादि उपाय बताए जाते हैं। व्यस्तता और समयाभाव के कारण इनको सभी नहीं कर पाते। उर्दू-फारसी में लिखी लाल किताब में सरलता से किए जा सकने वाले अद्भुत टोटके एवं उपाय दिए गए हैं जिनको सामान्यजन भी कर सकता है। इन सरल टोटकों एवं उपायों को अपनाकर आप भी नवग्रह के अशुभ प्रभाव से बचना चाहते हैं तो भारत प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** द्वारा रचित पुस्तक **'लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय'** अवश्य पढ़ें। यह पुस्तक आपको नवग्रह के अनिष्ट से बचाने के अतिरिक्त नीच ग्रह को उच्च या शुभ या भाव विशेष में पहुँचाने के उपाय भी बतलायेगी। इन टोटकों और उपायों के विषय में जानकर एकबारगी आप भी कह उठेंगे कि इनको पहले क्यों नहीं जाना ?

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार